ISBN 978-81-928375-0-5

उत्थान

सामाजिक परिवर्तन का सार्थक प्रयास

वर्ष - 2020
अंक-तृतीय

SBGBT

सोच बदलो-गाँव बदलो संस्था

SBGBT ने मनाया दीपोत्सव
उत्थान भूमि पर दीप प्रज्ज्वलन के संग

उत्थान
सामाजिक परिवर्तन का सार्थक प्रयास

अंक तृतीय-वर्ष 2020

संरक्षक

डॉ. सत्यपाल सिंह मीना

संयोजक

देवेन्द्र सिंह

संपादक

रामनरेश हुसालपुरा

दिनेश मीना

संपादन सहयोग

मनीराम मीना

हरिमोहन बिछोछ

अजय रावत

संपर्क

सोच बदलो गाँव बदलो संस्था, गली नम्बर 5, हौदबाड़ी, राजस्थान-328021
(S.No.COOP/2018/DHAULPUR/100050/23.07.2018)

पत्रिका में अभिव्यक्ति विचारों एवं रचनाओं से संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है

संदेश - 1

ARIF MOHAMMED KHAN
GOVERNOR OF KERALA

RAJ BHAVAN
THIRUVANANTHAPURAM-695 099

16 जून, 2021

शुभकामना संदेश

हिन्दुस्तान के गाँवों में ही हिन्दुस्तान बसता है। गाँवों का विकास ही देश के अंतिम नागरिक का विकास है। "सोच बदलो–गाँव बदलो" की पूरी टीम इस क्षेत्र में जो काम कर रही है वो बहुत ही सराहनीय है। गाँव के विकास के लिए काम करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए यह बहुत ही प्रेरणादायक उदाहरण है। इस पूरे अभियान के केन्द्र बिंदु श्री डॉ. सत्यपालसिंह मीना बधाई के पात्र हैं। उन्होंने अपने अथक प्रयासों से गाँव विकास और इतने सारे क्षेत्रों में उपलब्धियों से भरे कार्य किये हैं। उनकी ये यात्रा अनवरत जारी रहे ऐसी भावनाओं के साथ उत्थान के प्रकाशन पर मेरी शुभकामनाएँ ।

सादर
सद्भावी

(आरिफ मोहम्मद खाँ)

डॉ. सत्यपालसिंह मीना
उत्थान
सोच बदलो गाँव बदलो
ग्राम धनौरा जि. धौलपुर (राज.)

संदेश - 2

"सोच बदलो गांव बदलो" संस्था की मुख पत्रिका "उत्थान" के नए अंक के प्रकाशन पर संस्था से जुड़े सभी महानुभावों और पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। पत्रिका का यह अंक ऐसे कठिन समय में प्रकाशित हुआ है जब पूरा विश्व कोरोना महामारी के वैश्विक प्रकोप को झेल रहा है। हमारे देश में भी इस समय इस महामारी की दूसरी लहर फैली है, जिसका फैलाव दूर दराज के गांवों तक भी पहुंच गया है और यह आशंका व्यक्त की जा रही है कि निकट भविष्य में इसकी तीसरी लहर और अधिक खतरनाक हो सकती है।

हम सबके लिए यह बहुत संतोष की बात है कि सोच बदलो गांव बदलो संस्था ने इस महामारी के दौर में भी अपने कर्मठ कार्यकर्ताओं के माध्यम से गांवों को महामारी के कहर से बचाने के लिए हर संभव प्रयास किया है और इस महामारी के प्रति व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाकर ग्रामीण जन समुदाय को इस महामारी से बचाव के तरीके और वैक्सीनेशन के लाभ बताकर लाभान्वित किया है। हमारे लिए यह भी गौरव का विषय है कि सोच बदलो गांव बदलो संस्था हमारे "कोरोना मुक्त गांव" और "कोरोना मुक्त भारत" अभियान की एक प्रमुख सहयोगी संस्था है।

पत्रिका के इस अंक में कुछ लेख समाजसेवा के विविध रचनात्मक कार्यों को समर्पित हैं और कुछ साहित्यिक रचनाएं हैं। इस लिहाज से पत्रिका का कलेवर बहुआयामी बन गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह अंक पाठकों को पसंद आएगा। एक बार पुनः इस पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी महानुभावों को हार्दिक साधुवाद।

आर. के. पालीवाल, आई. आर. एस.
सेवानिवृत प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त
मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़

संदेश - 3

एक छोटा सा पौधा एक विशाल वट वृक्ष बनने का सफर मुकम्मल करता है तो उसे ज़िंदगी देने के लिये कई हाथ खुले दिल से उसका स्वागत करते हैं। जमीन अपने आँचल में उसे स्थिर रहने और उसकी जड़ों को अपने अंदर समा लेने की जगह देती है। न जाने कितने हाथ उसे खाद–पानी देते हैं फिर वह पौधा वृक्ष बनकर पूरे समाज को बिना किसी भेदभाव के प्राणवायु देता है।

सोच बदलो–गाँव बदलो अभियान भी धीरे–धीरे पौधे से वृक्ष का रूप ले रहा है। हज़ारों लाखों हाथ इसके मूल उद्देश्यों की पूर्ति के लिये एकजुटता के साथ चल रहे हैं और उसके परिणाम सबके सामने है। चाहे ग्राम विकास की बात हो, पर्यावरण का क्षेत्र हो, पेयजल की समस्या हो, या विद्यार्थियों और युवाओं के लिए मार्गदर्शन, उत्थान कोचिंग संस्थान, उत्थान लाइब्रेरी, उत्थान भवनों का निर्माण,मानवता के लिये रक्तदान, महिलाओं के स्वावलंबीकरण के मुद्दे हों, सब तरफ कदम से कदम मिलाकर चल रहे लोग ये साबित करते हैं कि किसी एक उठे हाथ को हज़ारों लाखों हाथों का समर्थन हासिल हो तो वह स्वर्ग तो नहीं पर एक सुंदर दुनिया यकीनन बना सकते हैं।

हर शख्स की सुंदर दुनिया की शुरूआती जड़ें उस मातृभूमि में समाहित है, जिसकी मिट्टी में खेलकूद कर वह बड़ा हुआ। यह अभियान उन्हीं लोगों के लिये, उन्हीं के द्वारा की गई एक शुरूआत है कि वो ज़िं दगी की आपाधापी में न सिर्फ अपने सपनों को पूरा कर रहे हैं बल्कि अपनी मातृभूमि और उसकी मिट्टी की सुगंध को भी सांसों में महसूस कर रहे हैं जो उनकी जीवनयात्रा के साथ–साथ ही चल रही है। विश्व महामारी के काल में उत्थान को आप तक पहुँचने में कुछ ज्यादा ही समय लग गया पर जब आप इसको पढ़ेंगे, इसका अवलोकन करेंगे तो निश्चित ही आप इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि विपरित परिस्थितियों में भी यह सफर न सिर्फ जारी है बल्कि कई मील के पत्थरों को पार कर चुका है और साथ ही इस अभियान की नई आशाएँ, सफलताएँ और चुनौतियाँ बाहें फैलाए हमारा स्वागत कर रही हैं कि आओ हमें स्वीकार करो और एक नई इबारत लिखो।

डॉ. सत्यपाल सिंह मीना

सम्पादकीय

सुधी पाठकों,

"उत्थान" वार्षिक पत्रिका का तीसरा अंक लेकर हम फिर हाजिर हैं। यह वह दौर है जब पूरी दुनिया "कोविड–19" जैसी महामारी के संकट से जूझ रही है । मानवता पर आए इस संकट को सदी की सबसे बड़ी त्रासदी कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । जनवरी 2020 में पहला केस आने के बाद, मार्च–अप्रैल आते–आते हमारे देश में भी इस महामारी ने अपने पैर पसार लिए थे । विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुदेशों की अनुपालना में दुनिया के कई देशों ने महामारी से बचने हेतु लॉकडाउन की घोषणा कर दी थी । ऐसे में भारत सरकार ने भी महामारी को बड़े स्तर पर फैलने से रोकने के एकमात्र विकल्प के रूप में लॉकडाउन के रास्ते को अपनाया। जरूरी सुविधाओं को छोड़ तमाम सप्लाई चेन और उद्योग धंधे बंद हो जाने के कारण देश की अर्थव्यवस्था चरमरा जाने के साथ–साथ आम जीवन बुरी तरह प्रभावित हो गया था। यह वह दौर था जब सड़कों पर सन्नाटा पसर गया था। गलियां, पार्क, बस स्टेण्ड, रेलवे स्टेशन सब सूने नजर आने लगे थे। विभिन्न सुरक्षाकर्मियों, स्वास्थ्य सेवा और आवश्यक वस्तुओं की सप्लाई से जुड़े व्यक्तिओं के अतिरिक्त जैसे सब कुछ ठहर सा गया था। सरकार द्वारा सडक व रेल परिवहन व्यवस्था को भी अचानक पूर्ण विराम दे दिया गया । वैश्विक महामारी के कारण लिए गए निर्णयों की सबसे बड़ी मार मजदूर वर्ग और उन गरीबों पर आन पड़ी जिनको दो वक्त की रोटी का जुगाड़ भी मुश्किल से होता था । महामारी, लॉकडाउन और तात्कालिक परिस्थितियों में हर पल बदलते प्रशासनिक निर्णयों से उपजे डर, घबराहट और आशंका के माहौल ने अपने घर से दूर रह रहे लोगों में अपने परिवार से मिलने की तड़प और बेचैनी उत्पन्न कर दी । हालात से मजबूर गरीब लोग मीलों दूर होने के बावजूद पैदल ही अपने घरों की ओर चल पड़े । रास्ते में बाजार और दुकानें सब कुछ बंद होने से हालात और विकट हो गए । जगह–जगह रास्तों में फंसे और भूख–प्यास से बेहाल लोगों से यथा स्थान रुकने की अपील करते हुए सरकार ने जगह जगह उनके ठहरने और खाने–पीने का इंतजाम करवाने का आदेश दिया । लेकिन, करोड़ों की संख्या में लोगों के सड़कों पर आ जाने से सरकारी इंतजाम भी नाकाफी थे । ऐसे में विभिन्न सामाजिक संगठन और सहृदय लोगों ने स्वेच्छा से प्रशासन के सहयोग और मानवता की रक्षा हेतु आगे आकर राशन, पीने के पानी व ठहरने की व्यवस्था में हाथ बंटाना शुरू किया । मानवता पर आए संकट की घड़ी में सोच बदलो गांव बदलो टीम ने भी विभिन्न राज्यों में प्रशासन व अपने कार्यकर्ताओं की मदद से जरूरतमंद लोगों तक राशन, भोजन के पैकेट्स,

मास्क और दवाइयां उपलब्ध करवाने में हर संभव मदद पहुंचाकर मानवता के पुनीत कार्य में छोटा सा सहयोग करने की सफल कोशिश की है। टीम द्वारा प्रथम पंक्ति के कोरोना योद्धाओं को (डॉक्टर्स, स्वास्थ्यकर्मी, पुलिस प्रशासन और नगर पालिका के कर्मचारियों) शुरुआती दौर में मास्क वितरण करना, धौलपुर जिला प्रशासन को प्रवासी मज़दूरों के लिए राशन व्यवस्था हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करना, डॉक्टरों के लिए PPE किट उपलब्ध कराना, कार्यकर्ताओं द्वारा अपने–अपने स्तर पर जरूरतमंद लोगों को राशन की व्यवस्था करना और कोरोना के प्रति गाँवों में जागरूकता पैदा करना इत्यादि मानवतावादी कार्यों में अपना योगदान दिया गया ।

शिक्षा और जागरूकता सोच बदलो गांव बदलो टीम के प्रमुख उद्देश्यों शामिल हैं और इसी को ध्यान में रखते हुए धौलपुर ग्रामीण क्षेत्र के प्रतिभाशाली जरूरतमंद बच्चों को अच्छी शिक्षा व अवसर उपलब्ध कराने हेतु टीम द्वारा सरमथुरा में "उत्थान भवन" का निर्माण किया गया है। जहाँ पर आधुनिक सुविधाओं से युक्त उच्च स्तरीय उत्थान कोचिंग संस्थान का ऑनलाइन और ऑफलाइन का संचालन नियमित रूप से किया जा रहा है।

पत्रिका के इस अंक में "सोच बदलो गांव बदलो" अभियान की वर्षभर की गतिविधियों के साथ–साथ, ग्राम विकास समिति के पंजीयन की प्रक्रिया, गांव–गांव में युवा प्रयासों की संक्षिप्त कहानियां, कुछ महत्वपूर्ण सरकारी योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी और मानवता पर आए कोविड–19 महामारी रूपी संकट के समय सोच बदलो गांव बदलो टीम द्वारा किए गए मानवीय प्रयास, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता और प्राकृतिक आपदाओं के प्रसार को रोकने हेतु पर्यावास समन्वय के संभावित प्रयास और हमारी भूमिका जैसे कई महत्वपूर्ण आलेख आप पाठकों तक बेहद सरल व आम भाषा में पहुंचाने की कोशिश की गयी है ।

सादर
संपादक मण्डल

अनुक्रम

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
	सम्पादक मंडल	1
	संदेश 1 – केरल राज्यपाल	2
	संदेश 2 – आर. के. पालीवाल	3
	संदेश 3 – डॉ.सत्यपालसिंह मीना	4
	सम्पादकीय	5–6
1.	सोच बदलो गांव बदलो अभियान– अब तक की यात्रा	9–12
2.	कोविड–19 में सोच बदलो गांव बदलो टीम के मानवीय प्रयास (देवेन्द्र सिंह)	13–14
3.	सोच बदलो–गांव बदलो आंदोलन –विचार एवं आचार (प्रो. रूपसिंह बारेठ)	15–18
4.	सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का सुदृढ़ीकरण–आज की सबसे बड़ी आवश्यकता (डॉ.सत्यपालसिंह, IRS-2007)	19–21
5.	विद्यार्थियों के लिए सफलता का सूत्र (राम प्रकाश मौर्य IRS-2007)	22–24
6.	"हुनर" – एक कविता (पल्लवी सिंह IRS-2007)	25
7.	प्राकृतिक आपदाओं के प्रसार को रोकने के लिए मानव, पशु और पर्यावरण केंद्रित समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता (अभिषेक स्मार्ट गाँव धनौरा)	26–27
8.	मैं उत्थान हूँ (अजय रावत)	28–29
9.	गांव विकास समिति के रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया (देवेंद्र प्रताप सिंह)	30–31
10.	आओ! मिलकर गाँव विकास की इबारत लिखें (दिनेश सुनीपुर)	32–33
11.	विकास प्रक्रिया में हमारी सहभागिता (श्री मनीराम बड़ापुरा)	34–35
12.	टीम एक का उदय–एक कविता (रामनरेश हुलासपुरा)	36
13.	स्मार्ट विलेज के गौरव पथ की गौरव गाथा (प्रेम रावत)	37–38
14.	बदलाव की कहानी लोगों की जुबानी–	
(I)	दलपुरा विकास समिति के ग्राम विकास की ओर बढ़ते कदम	39–41
(ii)	सकारात्मक विचारधारा से रचनात्मक बदलाव & SBGBT का मिशन मासलपुर क्षेत्र करौली	42–45
(iii)	जन सहयोग एवं सरकारी विद्यालय–एक दृष्टि में ! ग्राम सहजनी, बरेली (उत्तर प्रदेश)	46–48
(iv)	SBGBT के कार्यकर्ताओं की शिक्षा के लिए संघर्ष की दास्तान	49–50

अनुक्रम

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ
(v)	EYC रतियापुरा के बढ़ते क़दम	51
(vi)	विद्यालयों के भित्ति–चित्रों में सोच बदलो–गाँव बदलो विचारधारा की झलक	52–53
(vii)	युवा विकास समिति गाधौली के सार्थक प्रयासों की एक झलक	54
(viii)	शैक्षिक,सामाजिक एवं पर्यावरणीय चेतना की अलख जगी (टोडा जयसिंहपुरा, अलवर)	55
15.	ग्रामीण विकास के विविध रंग– दीपोत्सव के संग	
(1)	खौरपुरा गांव, धौलपुर	56
(2)	गुढ़ा गांव, धौलपुर	57
(3)	डोडी गांव, बूंदी	58
(4)	सुंदरी गांव, बामनवास (सवाई माधोपुर)	59
(5)	धाधरैन गांव, बयाना (भरतपुर)	60
(6)	कांसौटीखेड़ा गांव, धौलपुर	61
(7)	रहटोंटी गांव, धौलपुर	62
(8)	खुर्द गांव, रेणी (अलवर)	63–64
(9)	टोडूपुरा गांव, करौली	65
(10)	मीनादांत का पुरा, करौली	66
16.	SBGBT परोपकार और संवेदनशीलता की जननी	67
17.	अखबारों की सुर्खियों से....	68

क्रांति बड़ी-बड़ी बातें
करने से संभव नहीं
हुआ करती
छोटे - छोटे
काम करने से होती है

-हो ची मिन्ह

सोच बदलो गांव बदलो अभियान–अब तक की यात्रा

"सोच बदलो - गांव बदलो" (SBGBT)

राजस्थान के धौलपुर जिले से मई 2017 में शुरू हुआ, ग्रामीण विकास को समर्पित "सोच बदलो गाँव बदलो अभियान" आज देश भर में युवा दिलों की धड़कन बन चुका है। ग्रामीण क्षेत्रों में जन चेतना व जन जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से शुरू हुई "सोच बदलो गांव बदलो यात्रा" का सिलसिला अनवरत जारी है। "सोच बदलो गांव बदलो टीम" के रूप में ग्रामीण परिवेश के जागरूक और "पे-बैक टू सोसायटी" के सिद्धांत पर विश्वास रखने वाले युवा ग्रामीण लोगों के जीवन में आधारभूत परिवर्तन लाने के उद्देश्य से गांवों में छोटे-छोटे रचनात्मक व सकारात्मक कार्य कर रहे हैं। युवाओं का यह सकारात्मक और विकास वादी उत्साह ग्रामीण विकास की नई उम्मीदों को पंख देकर नए भारत के निर्माण हेतु प्रयासरत है।

"सोच बदलो-गांव बदलो अभियान" आज मात्र एक वैचारिक आंदोलन न होकर, एक जन अभियान का रूप ले चुका है। समाज में जन जागरूकता और विकास की जन चेतना पैदा करने हेतु टीम द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है; जैसे- सोच बदलो गांव बदलो यात्रा, ग्रीन विलेज-क्लीन विलेज अभियान, आओ पढें-आगे बढें अभियान, शिक्षा पाओ-ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता, महिला सशक्तिकरण अभियान, उत्थान भवन, उत्थान कोचिंग संस्थान, उत्थान पुस्तकालय, उत्थान पत्रिका के रूप में उत्थान की संकल्पना, अतिक्रमण मुक्ति अभियान, शराबबंदी अभियान, जरूरतमंदों को समय पर रक्त आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु "रक्तदान-महादान" शिविर का आयोजन, ग्राम विकास समितियों का गठन इत्यादि।

विकास व सामाजिक बदलाव एक लंबी व सतत चलने वाली प्रक्रिया है।सामाजिक समरसता, युवाओं का मार्गदर्शन,बच्चों को अच्छे संस्कार और गांवों में रह रहे आम लोगों के जीवन स्तर में बदलाव की एक छोटी सी कोशिश का नाम है- सोच बदलो गांव बदलो टीम (SBGBT)। सोच बदलो गांव बदलो टीम, सामाजिक बदलाव के प्रयासों को संगठित कर, समाज को एक नई ऊर्जा, नई सोच व दिशा देने का प्रयास कर रही है। 21 मई 2017 को जन्मी इस टीम (SBGBT) ने अब तक कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं । आओ संक्षेप में टीम की अब तक की विकास यात्रा पर एक नजर डालते हैं-

1. टीम की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही है कि टीम ने लोगों के दृष्टिकोण और सोच में सकारात्मक बदलाव लाकर गांवों में जन जागरूकता और सक्रिय जन सहभागिता द्वारा विकास की नई शुरुआत की। टीम ने लोगों में यह विश्वास पैदा किया है कि पारस्परिक सहयोग और सामंजस्य द्वारा गांवों को विकास के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है। ग्रामीणों की सक्रिय सहभागिता और प्रशासन के सक्रिय सहयोग से गांवों की दिशा और दशा को बदला जा सकता है। आज गांवों में लोग टीम के प्रयासों और विकासवादी नयी युवा क्रांति को एक आशा भरी दृष्टि से देख रहे हैं। चौपालों पर चर्चा तेज हुई है कि गांव के युवा और बुजुर्ग सब मिलकर अपने गाँव का विकास कर सकते हैं। लोगों में इस सोच को पैदा करना ही टीम की सबसे बड़ी उपलब्धि है। टीम के माध्यम से आज युवा अपने-अपने गांव, समाज और देश के प्रति अपनी नैतिक जिम्मेदारी को निभाने का प्रयास कर रहे हैं ।

2. टीम के सक्रिय कार्यकर्ताओं द्वारा अपने-अपने स्तर पर गांवों में विभिन्न कार्यों को अंजाम दिया जा रहा है- जैसे गांव की समस्याओं के विषय में मंथन करना, पेयजल की समस्या का समाधान करना,गांव के रास्तों से अतिक्रमण हटाना, वृक्षारोपण करना, जल संरक्षण के लिए कार्य करना, सार्वजनिक स्थानों की सफाई और मरम्मत का कार्य करना,गांव के आम रास्तों पर लाइट की व्यवस्था करना, विद्यालय में जमीनों का समतलीकरण और चारदीवारी का कार्य करना, विद्यालय में शौचालयों का निर्माण करना,कंप्यूटर की व्यवस्था करना, विशेष विषयों के लिए शिक्षकों की व्यवस्था करना, गांव में उत्थान कोचिंग संस्थान की शुरुआत करना, उत्थान पुस्तकालय संचालित करना, प्रतिभाशाली बच्चों को सम्मानित करना, बच्चों और युवाओं का मार्गदर्शन करना, ग्राम पंचायत द्वारा किए जाने वाले कार्यों के विषय में लोगों को जागरूक करना, सरकार की विभिन्न योजनाओं के विषय में ग्रामीणों को सजग करना और उनका लाभ लोगों तक पहुंचाने में सहायता करना, प्रशासन और ग्रामीण लोगों के मध्य सेतु का कार्य करना इत्यादि।

3. सोच बदलो गाँव बदलो टीम (SBGBT) "उत्थान मुहिम" को आगे बढ़ा रही है। "उत्थान-भवन" "उत्थान-लाइब्रेरी", "उत्थान कोचिंग संस्थान" और "उत्थान-पत्रिका" के माध्यम से टीम समाज के जरूरतमंद बच्चों और युवाओं का मार्गदर्शन कर; उन्हें राष्ट्र के समृद्ध मानव संसाधन के रूप में तैयार करने के लिए प्रयासरत है। टीम द्वारा जरूरतमंद बच्चों के लिए उत्थान कोचिंग संस्थानों का नियमित रूप से संचालन किया जा रहा है। टीम ने विभिन्न उद्देश्यों के लिए उत्थान भवन की संकल्पना को जन्म दिया है और टीम द्वारा सामाजिक परिवर्तन हेतु जमीनी धरातल पर किए जाने वाले प्रयासों का जीता जागता उदाहरण "उत्थान भवन सरमथुरा" बन कर तैयार है। सामाजिक कार्यों के लिए सामान्य जनता के सहयोग से बना यह अद्भुत नमूना है। बहुमंजिला इमारत का उपयोग उत्थान कोचिंग सेंटर, अहनलाइन क्लासेज उत्थान लाइब्रेरी,उत्थान युवा कौशल विकास केंद्र,उत्थान युवा मार्गदर्शन केंद्र तथा विभिन्न प्रकार के सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए इसका उपयोग किया जा रहा है। बहुआयामी कौशल विकास केंद्र ("स्किल डेवलपमेंट सेंटर") द्वारा इस क्षेत्र के बेरोजगार युवाओं के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करना प्रस्तावित है। यह सेंटर युवाओं की सरकारी नौकरियों पर निर्भरता और बेरोजगारी को कम करने में कारगर साबित होगा।

4. मानवता पर आन पड़े "कोविड-19" जैसी महामारी के संकट की घड़ी में सोच बदलो गांव बदलो टीम ने विभिन्न राज्यों में प्रशासन व अपने कार्यकर्ताओं की मदद से जरूरतमंद लोगों तक राशन, भोजन के पैकेट्स, मास्क और दवाइयां उपलब्ध करवाने में हर संभव मदद पहुंचाकर मानवता के पुनीत कार्य में छोटा सा सहयोग करने की सफल कोशिश की है। टीम द्वारा प्रथम पंक्ति के कोरोना योद्धाओं को (डॉक्टर्स, स्वास्थ्यकर्मी, पुलिस प्रशासन और नगर पालिका के कर्मचारियों) शुरुआती दौर में मास्क वितरण करना, धौलपुर जिला प्रशासन को प्रवासी मज़दूरों के लिए राशन व्यवस्था हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करना, डॉक्टरों के लिए PPE किट उपलब्ध कराना, कार्यकर्ताओं द्वारा अपने-अपने स्तर पर जरूरतमंद लोगों को राशन की व्यवस्था करना और कोरोना के प्रति गाँवों में जागरूकता पैदा करना इत्यादि मानवतावादी कार्यों में अपना योगदान दिया गया।

5. लोगों को पर्यावरण व जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने

के उद्देश्य से शुरू किया गया प्रकल्प "ग्रीन विलेज - क्लीन विलेज" हर वर्ष मानसून सत्र में वृक्षारोपण कार्यक्रम के साथ पूरे उत्साह के साथ टीम साथियों द्वारा गांव गांव में अनवरत जारी है। इस कार्यक्रम के तहत गांव के विद्यालयों, सार्वजनिक भूमियों और गांव के मुख्य रास्तों के सहारे वृक्षारोपण करवाया जा रहा है। गांव के रास्तों के साथ-साथ सभी सार्वजनिक स्थलों पर साफ सफाई का अभियान चलाकर गांव में स्वच्छता का ध्यान भी रखा जा रहा है। जिसे समाज के हर वर्ग ने सराहा है । कमजोर मानसून और दिनों दिन गिरते भूजल स्तर के कारण गांवों में सिंचाई और पेयजल संकट गहराता जा रहा है। ऐसे विकट हालातों में टीम द्वारा जल संरक्षण व पर्यावरण संवर्धन हेतु लोगों में जागरूकता लाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं ।

6. टीम का पूर्ण विश्वास कि बच्चे ही हमारे गांव और देश का भविष्य हैं। इन्हें मजबूत करने से ही हमारा समाज मजबूत होगा । बच्चों को शिक्षा के प्रति अभिप्रेरणा और अच्छे संस्कार देने के उद्देश्य से ही टीम ने "आओ पढें-आगे बढें" कार्यक्रम की शुरुआत की; जिसके तहत टीम सदस्यों द्वारा स्कूलों में जाकर, बच्चों को दुर्व्यसनों से दूर रहने / अपने लक्ष्य के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ, एक जीवन डायरी का वितरण किया गया । अब तक लगभग 20 हजार से भी अधिक बच्चों ने हमारे इस कार्यक्रम में हिस्सेदारी निभाई है । समस्त विद्यालयों के प्रशासन ने टीम की इस पहल व कार्यक्रम की सराहना की है ।

7. टीम की जन चेतना यात्रा के प्रभाव से गांव-गांव में लोगों ने बदलाव के लिए मीटिंग्स की हैं और अपने-अपने गांव से नशा मुक्ति की दिशा में ठोस कदम उठाकर गांवों में शराबबंदी, जुआ बंदी, गुटखा और तंबाकू उत्पादों पर रोक लगाई है। महिलाओं ने भी कई गांवों में आगे आकर शराबबंदी के खिलाफ अपनी आवाज उठाई है और गांव से अवैध शराब बिक्री की दुकानों को हटाने के लिए एकजुटता दिखाई है। यह समाज में व्यसन मुक्ति की ओर एक अच्छा कदम है। हालांकि इस दिशा में शत प्रतिशत परिणाम हासिल करना अभी बाकी है ।

8. सोच बदलो गांव बदलो यात्रा के माध्यम से लोगों को स्वच्छता के महत्व को भी समझाया गया साथ ही गांव के संकरे रास्तों से अतिक्रमण हटाने के लिए लोगों से अपनी संकीर्ण मानसिकता को छोड़ने का निवेदन किया गया जिसके परिणामस्वरुप कई गांव के लोगों ने टीम के विचारों से प्रभावित होकर अपनी सोच बदली और तुरंत प्रभाव से अपने गांव में मीटिंग आयोजित कर, गांव के संकरे रास्तों से अतिक्रमण हटा कर उन्हें चौड़ा किया और गांव को साफ सुथरा किया। युवाओं ने ऐसे कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर भाग लिया और गांव के रास्तों को चौड़ा कर अपने गांव की सुंदरता बढ़ाने में अप्रितम योगदान दिया। इससे आसपास के दूसरे गांवों को भी प्रेरणा मिली और यह कार्यक्रम धीरे-धीरे कई अन्य गांवों में युवाओं द्वारा अनवरत जारी है ।

9. टीम के कार्यकर्ता अपने मानवतावादी प्रकल्प "रक्तदान - महादान" के माध्यम से देश भर में जरूरतमंद लोगों को रक्त उपलब्ध कराने, रक्तदान के प्रति एक जागरूकता पैदा करने, रक्तदान के प्रति समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करने और युवाओं को अधिक से अधिक रक्तदान करने हेतु प्रेरित करने का काम कर रहे हैं। "रक्तदान - महादान" के अंतर्गत समय-समय पर रक्तदान शिविर आयोजित कर प्रशिक्षित डॉक्टर्स व टीम के नेतृत्व में सोच बदलो गांव बदलो टीम के सदस्यों द्वारा रक्तदान कर मानवता का सबसे पुनीत कार्य किया जा रहा है ।

10. टीम के कर्मठ कार्यकर्ताओं द्वारा "उत्थान केंद्रों (बाल

संस्कार केंद्र)" का संचालन किया जा रहा है। इनका का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाना, बच्चों में शिक्षा के प्रति लगाव और अभिरुचि पैदा करना, बच्चों के व्यक्तित्व को निखारने के लिए उन्हें वाद विवाद, भाषण और अन्य प्रतियोगिताओं में शामिल करना, गरीबों और जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा से जोड़ना और उनके माता-पिताओं को शिक्षा के महत्व के विषय में जागरूक करना, बच्चों को भारत की समृद्ध परंपरा विशेष रूप से मेडिटेशन के महत्व के विषय में बताना और इसका अभ्यास कराना, बच्चों को समाज की विभिन्न

प्रकार की समस्याओं विशेष रूप से पर्यावरण की समस्याओं के विषय में जागरूक करना और इन बच्चों को ब्रांड एंबेसडर के रूप में तैयार करना है।

SBGBT (सोच बदलो गांव बदलो टीम) ने युवाओं में कुछ कर गुजरने का एक जुनून सा पैदा कर दिया है । एक सकारात्मक, रचनात्मक व सद्भावना का माहौल सा खड़ा कर दिया है । लोगों के मन में बदलाव की एक उम्मीद पैदा कर दी है । इस अभियान से प्रेरणा लेकर, युवाओं ने अपने-अपने गांवों में स्वच्छता, अतिक्रमण हटाने, शराबबंदी, जुआ बंदी, गलियों में उजाले के लिए बल्ब लगाने व विद्यालय की चारदीवारी, गांव में पीने के पानी की व्यवस्था करने जैसी गतिविधियों में शामिल होकर एक नया संदेश लोगों में दिया है । युवाओं की असीम उर्जा को टीम द्वारा सकारात्मक और रचनात्मक कार्यों की ओर मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यही कारण है कि गांव के युवा फिजूल के कार्यों में व्यस्त रहने के बजाय, अपनी ऊर्जा को गांव के विकास में लगा रहे हैं। गांव के युवाओं ने अपने गांव

की समस्याओं (सड़क, बिजली, पानी, चिकित्सा, शिक्षा) को डिजिटल तकनीक का उपयोग करके विभिन्न सरकारी ऑनलाइन पोर्टल्स जैसे संपर्क पोर्टल, आरटीआई, CPGRAMS आदि टूल्स के माध्यमों से प्रशासन तक पहुंचाना शुरू कर दिया है । जिसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं । यह सब संभव हो पाया है, सिर्फ और सिर्फ, एक सोच बदलने से ।

टीम का विश्वास है कि आपकी छोटी-छोटी कोशिशें गांव के लोगों के जीवन स्तर में बदलाव के लिए बड़ी सहायक हो सकती हैं । इसलिए आप अपने गांव में बेहतर भविष्य निर्माण के लिए आगे आएं, सामूहिक प्रयास करें, सकारात्मक व सद्भावना के माहौल को बढ़ावा देने का प्रयास करें । लोगों को सरकारी योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी शेयर करें और योजनाओं के लाभ उन्हें दिलवाने में मदद करें । इस हेतु गांव में एक "ग्राम विकास समिति" बनाकर ठंडे पड़े तंत्र में सुधार की दिशा में और गांव के विकास कार्यों को पटरी पर लाने की एक सकारात्मक पहल करें। ध्यान रखें, सामूहिक, सकारात्मक व गंभीर प्रयास ही जमीनी बदलाव ला सकते हैं । ऐसा करने पर धीरे-धीरे ही सही लेकिन गांव के लोगों की सोच बदलेगी, गांव की तस्वीर बदलने लगेगी, गांव में विकास की कहानी आगे बढ़ने लगेगी । आओ, हम सब मिलकर अपने-अपने गांव व शहर में मिलजुल कर आपसी सहयोग से विकास को एक नयी राह पर लेकर चलें । बस शुरुआत हमें अपने आप से करनी है ।

"हम होंगे कामयाब एक दिन...."

जय हिंद
सोच बदलो-गांव बदलो टीम

2 कोविड-19 में सोच बदलो-गांव बदलो टीम के मानवीय प्रयास

लगभग पूरी दुनिया इस समय भी कोविड-19 जैसी खतरनाक महामारी के संकट से जूझ रही है। हमारा भारत देश भी इससे अछूता नहीं है। हमारे देश में भी दिन-ब-दिन इस बीमारी के मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। देश पर आए इस संकट की घड़ी में विभिन्न स्वास्थ्यकर्मी, सुरक्षाकर्मी व आवश्यक सेवाओं से जुड़े विभिन्न लोग इस महामारी से अग्रिम पंक्ति में लड़ रहे हैं।इसके साथ-साथ ही मजदूर वर्ग, जो अपने घर और राज्य से दूर अपने परिवार की रोजी रोटी के लिए काम कर थे, सभी उद्योग धंधे व फैक्ट्रीज बंद हो जाने की वजह से इन प्रवासियों पर विपत्तिओं का कहर टूट पड़ा और इन में से कई ने संभव साधना से अपने गृह राज्य वह घर पहुंचने की कोशिश भी की। इस क्रम में हजारों प्रवासी मजदूर विभिन्न राज्यों की सीमाओं पर, जिलों की सीमाओं पर व रास्तों में जहां तहां फंसे हुए। भारत सरकार व राज्य सरकारों ने इन प्रवासियों की तकलीफों को ध्यान में रखते हुए स्थाई शेल्टर हाउस बनाए। उनमें इनके लिए पर्याप्त भोजन व्यवस्था व स्वच्छ पानी के साथ-साथ मेडिकल फैसिलिटी प्रदान करने हेतु कई आवश्यक कदम उठाए। लेकिन प्रशासन के सामने भी सबसे बड़ी समस्या थी इन प्रवासी मजदूरों के फंसे होने की लोकेशन ज्ञात करना और उनके भोजन, पानी व राशन जैसी व्यवस्था ओं को मुहैया कराना। इसी कड़ी में सोच बदलो गांव बदलो टीम (SBGBT) द्वारा शासन व जरूरत मंदों के बीच सामाजिक सेतु बनकर काम किया। सोच बदलो गांव बदलो टीम जो कि देशभर के विभिन्न हिस्सों में अपने मानवता प्रेमी सदस्यों के बल पर आगे आकर, जरूरतमंदों की लोकेशन पता करने, प्रशासन से तालमेल के साथ आवश्यक राशन व अन्य व्यवस्थाएं उन तक पहुंचाने में बढ़-चढ़ कर मदद कर रही है। सोच बदलो गांव बदलो टीम यूं तो ग्रामीण विकास के कार्यों के प्रति समर्पित है, लेकिन देश पर आए संकट की घड़ी में, इस टीम ने स्वेच्छा से आगे आकर कई छोटे-छोटे मानवीय कार्यों को अंजाम दिया और यथा संभव आर्थिक सहयोग भी जरूरतमंदों व प्रशासन तक पहुंचाया।

इस काम को सफलतापूर्वक अंजाम देने के लिए सोच बदलो गांव बदलो टीम नेता तत्कालिक एक व्हाट्सएप ग्रुप "कोरोना सहायता" - SBGBT बनाया और सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म के माध्यम से एक पंपलेट जिसमें टीम सदस्यों के मोबाइल नंबर दिए गए हैं को ज्यादा से ज्यादा नाम लोगों तक पहुंचाने की कोशिश की गई है ताकि जहां भी इस तरह के प्रवासी मुसीबत में फंसे हो इन नंबरों पर मैसेज कर सके अथवा पहल कर सकें। कहीं से भी पहल अथवा मैसेज आते ही तुरंत टीम का एक सक्रिय कार्यकर्ता, परेशानी में फंसे लोगों की लोकेशन, लोगों की संख्या और किसी एक समझदार व्यक्ति को वॉलिंटियर नियुक्तकर उसके संपर्क सूत्र एक फार्मेट में मांगते। उसके पश्चात व्हाट्सएप पर लोकेशन लेकर और फोटो मंगाकर, टीम के अन्य सदस्य प्रशासन से संपर्क से आते हैं और अपने स्तर पर भी यथा संभव इन जरूरतमंदों की मदद में आगे बढ़ते हैं। देशभर में इस संस्था से जुड़े युवा सदस्यों के माध्यम से संकट ग्रस्त प्रवासी मजदूरों की मदद हेतु एस बी जी बीटी ने अब तक देश के कई राज्यों यथा केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, जम्मू व कश्मीर, दिल्ली और गुजरात जैसे राज्यों के विभिन्न शहरों, गांवों व अनजान लोकेशनों पर फंसे प्रवासी मजदूरों तक आवश्यक राशन व अन्य जरूरत की चीजें पहुंचाने में प्रशासन की पुरजोर मदद की है। आईआरएस एसोसिएशन इंदौर सहयोग से इंदौर शहर के विभिन्न अस्पतालों के अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं स्वास्थ्य कर्मियों व डॉक्टरों हेतु 700 पीपीई किट्स भी उपलब्ध कराई हैं। अन्य शहरों में भी डॉक्टरों व स्वास्थ्यकर्मियों को इस तरह की सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराने हेतु टीम ने सोशल मीडिया पर विभिन्न लोगों से सहयोग की अपील की है। इसी क्रम में टीम ने राजस्थान के धौलपुर जिले में

जिला कलेक्टर महोदय श्री जायसवाल जी से भेंट कर कोविड-19 से लड़ने हेतु टीम की ओर से एक छोटी सी सप्रेम भेंट Rs-1,00,000 - के चेक के रूप में दी है ।

कोरोना महावारी के दौरान पुलिसकर्मियों को दिन रात लोगों के बीच लेना पड़ और संक्रमण का बहुत ज्यादा खतरा था इसी को ध्यान में रखते हुए धौलपुर पुलिस अधीक्षक श्री मृदुल कच्छा वासे मिलकर धौलपुर जिले सभी थानों कोतवाली और पुलिसकर्मियों हेतु अच्छी क्वालिटी के 5000 मास्क भी टीम की ओर से उपलब्ध करवाए। SBGBT ने इस COVID &19 के Lockdown के दौरान पूरे देश में लगभग 1804 मजदूरों के लिए खाने-पीने की व्यवस्था करवाई एवं इसके अलावा 461 परिवारों को भी इस दौरान खाने पीने की कोई समस्या नहीं आने दीऔर लगभग 500 लोगों को उनके गृह राज्य वापस पहुँचाने में मदद की। मानवता की सच्ची सेवा ही राष्ट्र धर्म इस मूल मंत्र के साथ मानवता के लिए संकट की घड़ी में टीम का प्रत्येक कार्यकर्ता अपनी क्षमता से बढ़कर मुसीबत में फंसे हुए लोगों की मदद कर रहा था।

जय हिंद!
देवेन्द्र सिंह

भविष्य
उन्हीं लोगों का है
जो
अपने सपनों की
सुंदरता में
यकीन करते हैं

- एलीनो रूजवेल्ट

3 सोच बदलो–गांव बदलो आंदोलनः विचार एवं आचार

"सोच बदलो–गांव बदलो" का युवा प्रवाह ग्रामीण क्षेत्र मेंनवपरिवर्तन की लहर किस तरह से ला सकता है इसका अद्भुत एवं चमत्कारिक मिसाल है –"स्मार्ट विलेज धनौरा" । महज कुछ वर्षों पूर्व इसी गांव के एक होनहार युवा, लोक सेवक और सार्थक सोच के सबल संवाहक डह. सत्यपालसिंह मीना ने चंद साथियों को साथ लेकर विकास की अलख जगायी । धौलपुर के बाड़ी क्षेत्र का यह गांव जहां विकास और आधुनिक सोच की बात तो छोड़िए मात्र वहां जाने के नाम से ही रूह कांप जाया करती थीवहां विकास की सरस गंगा बहने लग जाए यह किसी चमत्कार से कम नहीं है। सही सोच, सकारात्मक युवा ऊर्जा और निस्वार्थ नेतृत्व के बल पर जो विकास यात्रा तय की गई है, प्रशंसनीय ही नहीं है अपितु अनुकरणीय है जो समूचे राज्य में ग्रामीण विकास का एक नया आयाम और अध्याय खोलती है।

देश के प्रथम "स्मार्ट विलेज" के रूप में प्रधानमंत्री के द्वारा जुलाई **2018** में सम्मानित यह गांव लगातार विकास के नए कीर्तिमान स्थापित करता जा रहा है। जल संवर्धन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए 03 किलोमीटर लंबी मानव निर्मित नहर का निर्माण कर गांव के पोखरों एवं तालाबों को जोड़ा गया जिससे हरियाली के साथ-साथ भूमिगत जल-स्रोतों का संवर्धन किया जा सके। गांव के मुख्य रास्तों के साथ-साथ छोटी एवं तंग गलियों को अतिक्रमण से मुक्त कराकर चौड़ी एवं उच्च कोटि की सीमेंटेड सड़कों में बदला गया और यह उल्लेखनीय है कि यह काम ग्राम वासियों ने स्वेच्छया एवं अपने श्रम से किया। प्रत्येक घर में टायलेट, उसके निकास के लिए सीवरेज लाइन और उसके अंतिम उत्सर्जन के लिए ट्रीटमेंट प्लांट बनाया जाना किसी भी कार्य को सुनियोजितता के साथ संपादित करने की मिसाल है। और इसी का सबूत है जिला प्रशासन द्वारा धनौरा पंचायत को प्रथम खुले में शौच से मुक्त पंचायत घोषित करना । महिला सशक्तिकरण की दिशा में वर्ष 2014 में प्रथम महिला पंचायत का शुभारंभ करना, बालिका शिक्षा के प्रसार एवं प्रोत्साहन के लिए योजना बनाना, मद्यपान का स्वैच्छिक निरोध कर अपने गांव को "क्राइम फ्री विलेज" घोषित करवाना तथा बच्चों को आधुनिक संचार माध्यमों से सशक्त करने के लिए कंप्यूटर शिक्षा देने की व्यवस्था कराना आदि विकास के ठोस प्रमाण है जो धनौरा के निरंतर और क्रमबद्ध विकास की पुष्टि करते है।

'धनौरा चमत्कार' महज एक गांव के विकास की कहानी ही नहीं है अपितु 'सोच बदलो-गांव बदलो' के ग्रामीण जन-आंदोलन का सूत्रपात और शंखनाद है जिसने समूचे क्षेत्र में विकास की गंगा प्रवाहित कर दी है। यह अत्यंत कठिन कार्य बहुत कम समय में इसलिए संभव हो सका क्योंकिइसका शुभारंभ सोच बदलो के साथ हुआ जिसने जन-जागृति को जन्म दिया, इससे जनसहभागिता सुलभ हुई और अंततः जनआंदोलन का सैलाब निकल पड़ा जिसने संकीर्ण और दकियानूसी दीवारों को ढहा कर विकास की एक नई इबारत लिखी। इससे यह प्रमाणित होता है कि विकास एवं विनाश दोनों ही मनुष्य की सोच के परिणाम है । किसी शायर ने सही कहा है-

"सोच को बदलिए, सितारे बदल जाते हैं
नजर को बदलिए, नजारे बदल जाते हैं ।
कौन कहता है,कश्ती को बदलो यारों
बस दिशाएं बदलिए, किनारे बदल जाते हैं।

जन- जाग्रति सोच में बदलाव का परिणाम होती है और जन सहभागिता के रूप में प्रस्तुत होकर जन आंदोलन के रूप में मुखरित होती है। सोच में बदलाव लाने के कई माध्यम होते हैं किंतु सर्वाधिक सशक्त माध्यम नेतृत्व होता है।

चमत्कारिक नेतृत्व (Charismatic Leadership) ने विश्व के अनेक देशों में जनता की सोच में व्यापक बदलाव लाकर बड़े-बड़े सामाजिक परिवर्तन और राजनैतिक क्रांतियां संपादित की है जिनसे इतिहास भरा पड़ा है। हमारे ही देश में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को नेतृत्व प्रदान कर आम जनता में एक नई सोच को पैदा किया जिसके समक्ष सबसे शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य ने घुटने टेक दिए। सोच, जिसे 'नजरिया' भी कहते है, मूलतः सोचने और देखने का एक दृष्टिकोण होता है जिसके ध्येय और लक्ष्य होते हैं तथा उन तक पहुंचने के माध्यम और विकल्प भी होते हैं। इसका सैद्धांतिक विश्लेषण करना तो यहां समुचित नहीं होगा किंतु ग्रामीण विकास के बारे में सोच क्या है? और क्या होना चाहिए? इस पर आम लोगों से चर्चा करना उचित प्रतीत होता है। गांव के विकास के बारे में हमारी सोच क्या है? हमारे लक्ष्य और दिशाऐं क्या है? और अंततः वह किस प्रकार के विकास को अंजाम देगा? इसका दूरगामी आकलन हमें अवश्य करना चाहिए।

समग्र ग्रामीण विकास की अवधारणा के दो पहलू होते हैं। प्रथम, भौतिक विकास (Physical Development) तथा द्वितीय, नैतिक विकास (Moral Development) । भौतिक विकास का तात्पर्य है कि ग्रामीण क्षेत्र में वे सब संस्थाएं और सुविधायें सहज उपलब्ध कराई जाएँ जिससे ग्रामीण जन आधुनिक जीवन शैली के भौतिक सुखों के साथ जीवन यापन कर सकें अर्थात् बिजली, पानी, आवास, शिक्षा, चिकित्सा, पर्यावरण, मनोरंजन आदि आवश्यकताओं की सहज उपलब्धता । आधुनिक विकास की यह अवधारणा मनुष्य को तकनीकी एवं यंत्रीकरण के माध्यम से सशक्त कर प्रकृति पर प्रभुता स्थापित करने का कृत्रिम उपक्रम है। विकास की यह आधुनिक सोच जिसे पाश्चात्य सोच (Western Perspective) भी कहते है अंततः ग्रामीण विकास कर गांवों को किस स्थिति में रूपांतरित कर देगा? यह एक विचारणीय मुद्दा है। विकास की इस पाश्चात्य अवधारणा ने महा-नगरों तथा महा नगरीय संस्कृति को जन्म दिया, इसे बढ़ाया है और मुर्तरूप से स्थापित किया है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण अमेरिका है और अब इसका तीव्र प्रसार भारत में भी हो रहा है। इस तीव्र महा नगरीय प्रसार में कहीं हमारे गांव भी उसी तरह जलमग्न न हो जाएं जैसे महा सागरीय प्रसार में छोटे-छोटे द्वीप और टापू हो जाते हैं, अब यह परम आवश्यक है कि हम पहले यह सोचे और जाने कि गांव से क्या तात्पर्य है। गांव मनुष्य समूह का मात्र एक निवास स्थान ही नहीं, वह इससे बहुत कुछ अधिक है, इसलिए चाहिए कि थोड़ी सी नजर इस बात पर भी डाले कि हमारे देश में गांव क्या थे ?

भारतीय संस्कृति की दो सबसे बड़ी सौगात हैं एक, परिवार और दूसरा, गांव। विश्व की किसी भी संस्कृति एवं सभ्यता में इसका दूसरा उदाहरण नहीं है जिसमें परिवार और गांव की इतनी संपुष्ट व्याख्या, तार्किक संगठन और नीति परायण जीवन सुनिश्चित किया गया है। भारतीय परिवेश में गांवों की संरचना, ग्रामीण व्यवस्था और ग्रामीण जनजीवन इतना तार्किक और आदर्शोन्मुख रहा है कि कई शताब्दियाँगुजर जाने के बाद भी इसके मूल रूप में कोई गुणात्मक अंतर नहीं आया है। हां, कालांतर में बहुत से विचार आए हैं, बुराइयां आई हैं, कुप्रथाएं तथा अंधविश्वास पनपे हैं, जिन्हें दूर करना वक्त की सबसे बड़ी मांग है और यह खुशी की बात है कि "सोच बदलो-गांव बदलो ग्रामीण जनआंदोलन" आज इन कुरीतियों, अंधविश्वासों और अनेक अज्ञानताओं को समूल उखाड़ फेंकने के लिए कृत संकल्पित है।भारतीय ग्रामीण व्यवस्था का सविस्तार विश्लेषण करना इस लेख में संभव नहीं है तथापि इसके तीन मूलभूत आयामों को रेखांकित करना समीचीन होगा।

प्रथम,सामूहिक सुरक्षा (Collective Security) का आधार। व्यक्ति की सबसे अहम आवश्यकता है उसकी सुरक्षा।

वह बिना किसी भय और आतंक के अपना जीवन यापन कर सके इसलिए गांव तथा राज्य की अवधारणायें विकसित हुई और मूर्त रूप में स्थापित हुईं। गांव में व्यक्ति निजी सुरक्षा नहीं करता वह सामूहिक सुरक्षा में ही निहित होती थी और महत्वपूर्ण बात यह है कि उसमें किसी भी प्रकार के शस्त्रों, रणनीतियों और प्रशिक्षणों के लिए कोई स्थान नहीं होता था। हमारे गांव सैकड़ों वर्षों से बिना सेना और शस्त्रों के महज सामूहिकता के माध्यम से सुरक्षित रहे हैं, आबादभी रहे हैं । भारतीय सभ्यता और संस्कृति के मर्मज्ञ जर्मन विद्वान मेटकाफने लिखा है (Dynasty after dynasty tumbled down] but the village communities remained the same-) विगत कुछ दशकों में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण गांवो में विभाजन होने लगा है सामूहिकता समाप्त हो रही है और इसलिए व्यक्ति निजी सुरक्षा शस्त्रों के बल पर करने की कुचेष्टा कर रहा है। यह घातक है जो हिंसा और प्रति-हिंसा को बढ़ावा दे रही है। अतः इस घातक प्रवृत्ति को यथा समय रोकना बेहद आवश्यक है।

द्वितीय, आत्मनिर्भर समुदाय (Self & Sufficient Community)। ग्रामीण समाज आत्मनिर्भर समुदाय की एक अद्भुत इकाई हुआ करता था। आज यह संभव नहीं है। इस आधुनिक विकास की दौड़ में न तो गांव आत्मनिर्भर रह सकता है और न ही रहना चाहिए। किंतु उत्पादन (Production) और खपत (Consumption)कितना हो, क्या इसकी कोई सीमा है? पाश्चात्य विकास की अवधारणा इनकी किसी भी तरह की हद या सीमा बांधने के खिलाफ है। उसके अनुसार सर्वाधिक विकसित समाज वह है जिसकी प्रति व्यक्ति खपत (Per Capita Consumption) सर्वाधिक हो। आप सोचिए क्या सर्वाधिक खपत या उपभोग करना किसी सभ्य समाज का लक्षण हो सकता है। समाज में उसी से प्रतिस्पर्धा, हिंसा, पर्यावरण प्रदूषण, जल-जमीन और वायु प्रदूषण इत्यादि भौतिक समस्या पैदा हुई हैं जिसने विकास तो छोड़िए मानव जाति के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।

तृतीय, नैतिक जीवन यापन (Moral Livelihood) भारतीय ग्रामीण व्यवस्था, नैतिक मूल्यों और आदर्शों से संचालित एक सुखद मानवीय व्यवस्था थी जिसमें शांति, प्रेम, भाईचारा, त्याग, संयम और वीरता के उदात्त लक्षण विद्यमान थे। इसका यह अर्थ नहीं है कि पहले गांवों में सब कुछ आदर्शवादी ही था, बहुत से विकार भी थे। सभी स्वभाव एवं गुणों के व्यक्ति भी थे किंतु अधिकांशतः इन मूल्यों और आदर्शों को मानते थे और यथाशक्ति मनवाते भी थे। पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव से आज गांवो में नैतिकता का तेजी से ह्रास हो रहा है। आदर्शों का माखौल उड़ाया जा रहा है और भौतिक समृद्धि एवं सत्ता लोलुपता के लिए अनियंत्रित और अमर्यादित खुला खेल खेला जा रहा है।

उपरोक्त ध्यानाकर्षण का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि हमें आधुनिक भौतिक विकास से विमुख हो जाना चाहिए। 'सोच बदलो-गांव बदलो' अभियान के अंतर्गत पूरी ताकत एवं लगन के साथ गाँवों को आधुनिक सुविधा के साथ जोड़ना जरूरी है और उत्कृष्ट भौतिक विकास करना भी जरूरी है किंतु इसके साथ ग्रामीण समुदाय का नैतिक विकास भी हो इसके लिए भी कारगर कदम उठाने चाहिए। 'सोच बदलो' अभियान के अंतर्गत श्रम का भी सम्मान हो, सादगी को हीनता न समझा जाए, मितव्ययता दैनिक जीवन का गुण बने, नितिपरायण आचरण की प्रशंसा हो आदि मानवीय गुणों को नई पीढ़ी में समाहित करने के लिए कारगर प्रयास की योजना बननी चाहिए तभी गांवों का सर्वांगीण विकास होगा अन्यथा पाश्चात्य विकास की अंधी दौड़ में 'महानगरीय संस्कृति' इन्हें निगल लेगी और गांव, 'गांव' न 'रहकर मात्र इनकी 'कॉलोनी' बन जाएगी'।

अतः आज महति आवश्यकता यह है कि पहले सोच बदली जाए और तदोपरांत गांव बदले जाएं क्योंकि सोच से विचार बदलते हैं और विचार से आचरण बदलता है। यह दोनों प्रक्रियाएं समांतर रुप से चल सकती हैं, क्योंकि दोनों ही

आधारभूत और आवश्यक हैं। भौतिक विकास हो तथा आधुनिक सभी सुख एवं सुविधाएं ग्रामीण जन को सहज सुलभ हों, यह तो परम आवश्यक है ही क्योंकि इसके अभाव में वह अपने व्यक्तित्व का विकास नहीं कर पाएगा और पिछड़ जाएगा। इस दिशा में सोच बदलो-गांव बदलो टीम जो गांवों में विकास की गंगा प्रवाहित कर भागीरथी प्रयास कर रही है, वह तो सचमुच सराहनीय एवं अनुकरणीय है ही किन्तु विकास के इस संक्रमण काल में 'मानवीय मूल्यों' एवं 'नीति परक आचरण' में जो गिरावट आई है, उसको संभालने की भी महती आवश्यकता है। यह अत्यंत कठिन कार्य है और इसे उपदेशों, भाषणों और मशीनों से किया भी नहीं जा सकता है किंतु दूरगामी सोच एवं सहज मानवीय प्रक्रिया द्वारा यदि ग्रामीण समाज की नई पीढ़ियों में मानवीय मूल्यों, नीतिपरक आचरण और सभ्य संस्कारों को समाहित करने का एक विनम्र प्रयास भी किया जा सकता है तो यह नव आंदोलन ग्रामीण क्षेत्र में स्वस्थ, सुखी, समृद्ध और सभ्य समाज का निर्माण कर सकेगा जिसमें सोना और सुहागा दोनों होगा।

प्रोफेसर रूप सिंह बारेठ,
पूर्व उप-कुलपति,महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
पूर्व विभागाध्यक्ष,राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान यूनिवर्सिटी, जयपुर

महत्वपूर्ण यह नहीं
कि आप
कहाँ है
महत्वपूर्ण यह है
कि आप जहाँ हैं
वहाँ आप क्या कर रहे हैं

4 "सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का सुदृढ़ीकरण आज की सबसे बड़ी आवश्यकता"

मानव जाति अपने इतिहास के सबसे कठिन और अभूतपूर्व दौर से गुजर रही है। शायद यह पहला अवसर है; जब पृथ्वी पर सबसे विकसित समझे जाने वाली मानव जाति अपने आप को घरों में कैद करने के लिए मजबूर हैं। मानव जाति स्वीकार करने को मजबूर है कि देश, राष्ट, भाषा, संस्कृति, धर्म, व्यवसाय, गरीब और अमीर की सीमाएं मानव निर्मित हैं; अन्यथा प्रकृति के समक्ष हम सभी समान और अंतर्निर्भर हैं। व्यक्तिगत स्वास्थ्य सामाजिक स्वास्थ्य से गहरे रूप से संबंधित है। स्वास्थ्य एक व्यक्तिगत विशेषाधिकार ना होकर सामाजिक आवश्यकता है जिससे हमारा जीवन, परिवार, समाज और देश सीधे रूप से प्रभावित होता है। स्वास्थ्य देश की समृद्धि और विकास को निर्धारित करने में सबसे महत्वपूर्ण कारक होता है।

30 जनवरी भारत के केरल राज्य में कोविड-19 पहला केस का दर्ज होना, 11 मार्च को विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक डॉ. टेड्रोस अदनोम घेब्रेयसस द्वारा कोविड-19 वैश्विक महामारी घोषित करना, 22 मार्च को जनता कर्फ्यू, उसके बाद 21 दिन का लॉकडाउन और इसके उपरांत भी कोविड-19 के मरीजों की संख्या में निरंतर प्रगति हमें स्वास्थ सेवाओं और विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति और उनकी आवश्यकताओं पर सोचने को मजबूर करती है। वैश्विक और राष्ट्रीय विपदाएँ राष्ट्रीय नेतृत्व को देश की व्यवस्थाओं को लाभकारी दृष्टिकोण की बजाय समाजवादी दृष्टिकोण से देखने को प्रेरित करती हैं क्योंकि इन परिस्थियों में लोगों का स्वास्थ्य और उनकी सलामती सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है। यह विपदाएँ देश और दुनिया को आत्म मूल्यांकन करने और भविष्य की रणनीति बनाने का अवसर भी देती हैं। नेशनल हेल्थ प्रोफाइल-2019(http%@@www-cbhidghs-nic-pद/) द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार भारत अपने सकल घरेलू उत्पाद (2017&18 बीई) का केवल 1-28þ स्वास्थ्य पर सार्वजनिक व्यय के रूप में खर्च करता है। प्रति व्यक्ति के हिसाब से स्वास्थ सेवाओं पर मात्र 1657 रुपये खर्च करता है। एनएचपी में उपलब्ध तुलनात्मक आंकड़ों के अनुसार दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र के 10 देशों में से भारत केवल बांग्लादेश से ऊपर है। भारत के पड़ोसी देश, जैसे श्रीलंका, इंडोनेशिया, नेपाल, और म्यांमार स्वास्थ्य सेवाओं पर भारत की तुलना में कहीं अधिक खर्च कर रहे हैं। ओईसीडी देशों और विकसित राष्ट्रों जैसे अमेरिका, जर्मनी फ्रांस या जापान से तो तुलना ही नहीं की जा सकती। डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुशंसित प्रत्येक 1,000 लोगों के लिए एक डॉक्टर के विपरीत भारत में 11,500 से अधिक लोगों के लिए केवल एक सरकारी डॉक्टर है। निजी क्षेत्र में अधिक बेड और अधिक डॉक्टर (कर्मचारी) हो सकते हैं परंतु सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति उनका कोई उत्तरदायित्व नहीं है और भारत की ज्यादातर आबादी इन स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लेने के लिए भी आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है। इसके अतिरिक्त, स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं के संबंध में ग्रामीण-शहरी विभाजन बहुत महत्वपूर्ण है; उदाहरण के लिए- 73þ 'पब्लिक हॉस्पिटल बेड्स' शहरी क्षेत्रों में विद्यमान हैं, जबकि भारत की 69þ जनसंख्या ग्रामीण इलाकों में निवास करती है।

कोरोना महामारी के खिलाफ युद्ध में पहली पंक्ति में लड़ने वालों को देखकर हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि यही सच्चे योद्धा हैं जो अपना स्वास्थ्य, अपना परिवार और अपना जीवन दाँव पर लगाकर अपने देशवासियों को बचाने में दिन रात लगे हुए हैं। छोटे-छोटे गांव और ढाणियों से लेकर बड़े-बड़े महानगरों में दिन रात काम में लगे डॉक्टर और नर्सिंग स्टाफ, 24*7 लोगों की सेवा में मुस्तैद पुलिस अधिकारी

और कर्मचारी, नगर निगम और नगर पालिका के अधिकारी और कर्मचारी, जिलों में तैनात प्रशासनिक अधिकारी, देश की धमनियों में रक्त प्रवाह करने वाली भारतीय रेल द्वारा देश के विभिन्न भागों में राशन पहुंचाना सुनिश्चित करने वाले रेलवे कर्मचारी, विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों में रिसर्च कर रहे हमारे वैज्ञानिक और सच्चाई व ईमानदारी से मानवता के लिए समर्पित एनजीओ आज देश के लिए सबसे अमूल्य और जीवनदायी हैं। निजी क्षेत्र का जन्म ही पूंजीवादी दृष्टिकोण/ लाभकारी विचारधारा को लेकर हुआ है और इसलिए राष्ट्रीय विपदा या संकट की घड़ी में समाजवादी दृष्टिकोण से काम करना उनकी कोई भी अनिवार्यता या बाध्यता नहीं है। यही कारण है की बहुत सारे निजी क्षेत्र के हॉस्पिटल अपने आप को कोरोना बीमारी के लिए चिन्हित होने से बचाने के लिए अधिकारियों के चक्कर लगाते हुए देखे जा सकते हैं। यद्यपि यहां यह कहने का आशय नहीं है कि निजी क्षेत्र का योगदान सार्वजनिक स्वास्थ्य और सार्वजनिक सेवाओं में कमतर है; मंथन का विषय केवल इतना है कि लाभकारी विचारधारा से प्रेरित निजी क्षेत्र इन कार्यों को करने के लिए बाध्यकारी नहीं है।

कोरोना महामारी के विरुद्ध युद्ध ने सार्वजनिक स्वास्थ्य और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के महत्व की ओर सरकार, राजनीतिक नेतृत्व, बुद्धिजीवी वर्ग और आम जनता का ध्यान आकर्षित किया है। मीडिया न्यूज़ और पब्लिक प्लेटफार्म पर उपलब्ध सूचनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि देश के ज्यादातर हिस्सों में डॉक्टर और स्वास्थ्यकर्मी रोगियों का इलाज करने से जुड़े सुरक्षात्मक उपकरणों, उनको संक्रमण से बचाने के लिए आवश्यक उच्च गुणवत्ता के मास्क, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरणों (पीपीई) की मांग और सप्लाई के अंतर से जूझ रहे है। ग्रामीण भारत में कोरोना वायरस के खिलाफ रक्षा की पहली पंक्ति कही जाने वाली 90,00,00 "आशा" सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के पास मास्क या हैंड सैनिटाइज़र के अभाव की खबरें आ रही हैं और यह तथ्यों से स्पष्ट है कि ज्यादातर हमारे योद्धा (डॉक्टर, स्वास्थ्य कर्मचारी और सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता) सरकारी या सार्वजनिक क्षेत्र से आते हैं; जहां संसाधनों का अभाव देखा जाता है। ऐसी राष्ट्रीय आपदा के समय सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण और कारगर है, इसे समझने और इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

कोरोना महामारी ने हमें यह अवसर दिया है कि हम अपनी नीति, नीयत और रणनीति पर गहराई से मंथन करें और विचार करें। देश की सुरक्षा, एकता-अखंडता और लोगों के कल्याण से सीधे-सीधे जुड़े हुए सार्वजनिक क्षेत्र को मजबूत किया जाए और उसके प्रति लाभकारी दृष्टिकोण के बजाय कल्याणकारी दृष्टिकोण से विचार किया जाए । यह विचार इसलिए भी बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि आज भी भारत की जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा गांवों और गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रहा है जो निजी क्षेत्र की सुविधाओं का लाभ नहीं ले सकता और लेने का प्रयास करता है तो गरीबी के कुचक्र की गहराई में और फंस जाता है। लोगों के कल्याण से जुड़ा हुआ सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक क्षेत्र सार्वजनिक स्वास्थ्य ही है; जिस पर हमारे नीति निर्धारकों को सबसे ज्यादा महत्व देने और उसके लिए पर्याप्त राजस्व उपलब्ध कराने के लिए के लिए नीति निर्धारण की आवश्यकता है।

कोरोना जैसी महामारी से निपटने के लिए हमें अपनी प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है। इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है- जिला स्तर के सार्वजनिक अस्पतालों को एक सुपर स्पेशलिटी अस्पताल के रूप में विकसित करने की ताकि ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को अपने नजदीक ही गंभीर बीमारियों सहित सभी प्रकार की स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हो सकें। इससे कोरोना जैसी महामारी के समय मरीजों को तुरंत इलाज मिलना संभव हो सकेगा और साथ ही

बड़े या मुख्य अस्पतालों में मरीजों के दबाव को कम किया जा सकेगा। दूसरा स्वास्थ्य जैसी आपदाओं के समय किस प्रकार देश के संसाधनों का बेहतर उपयोग किया जाए। विभिन्न विभागों एवं क्षेत्रों में कार्यरत एजेंसियों, नीति निर्धारकों एवं कर्मचारियों के बीच कैसे समन्वय बनाया जाए। वेतन कटौती, अनुदानों की प्राप्ति, जरूरतमंदों की आर्थिक मदद जैसे विषयों पर किस प्रकार निर्णय लिए जाए इसके लिए 'नेशनल हेल्थ इमरजेंसी एक्ट' जैसे किसी कानून का प्रावधान भी किया जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि, जलवायु परिवर्तन एवं मनुष्य की खानपान की आदतों में बदलाव आदि के कारण आपदाएं और महामारी हमारे जीवन का हिस्सा बनती जा रही हैं इसलिए इनसे निपटने के लिए पहले ही तैयारी करके रखना समय की मांग बन गई है। अतः इसके लिए विशेषकर स्वास्थ्य क्षेत्र में जैव प्रौद्योगिकी एवं चिकित्सा अनुसंधान पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है ताकि समय पर कोरोना जैसी महामारी से निपटने के लिए दवाओं एवं टीकों का विकास किया जा सके। अन्यथा हमें दूसरों देशों पर निर्भर होना पड़ सकता है जो कि एक विकसित अर्थव्यवस्था के लिए बिल्कुल भी उचित नहीं होगा। इसके साथ साथ स्वास्थ्य के संबंध में जागरूकता को बढ़ाया जाए एवं स्वच्छता हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा होनी चाहिए। उदाहरण के लिए जापान जैसे विकसित राष्ट्रों में बच्चों को विद्यालय स्तर से ही हाथों की साफ-सफाई एवं स्वच्छता जुड़ी सामान्य बातें सिखाई जाती हैं।भारत ने लक्ष्य रखा है कि 2025 तक सकल घरेलू उत्पाद का 2-5% हिस्सा सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खर्च किया जाएगा। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरी ईमानदारी से प्रयासों की आवश्यकता है। जिस प्रकार देश की रक्षा के लिए रक्षा बजट महत्वपूर्ण है; उसी प्रकार देश के लोगों के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए स्वास्थ्य बजट भी उतना ही महत्वपूर्ण है। विकसित और समृद्ध राष्ट्र बनने के लिए आर्थिक विकास के साथ-साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य को उच्च प्राथमिकता देना अत्यावश्यक है। भारत को भी विकसित और समृद्ध राष्ट्र बनने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ सेवाओं पर न केवल सकल घरेलू उत्पाद का बड़ा हिस्सा खर्च करने की आवश्यकता है बल्कि दूरगामी नीति निर्धारण करने और उनका पारदर्शिता के साथ उत्तरदायित्वपूर्ण क्रियान्वयन कर उनके सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित करना भी आवश्यक है।

डॉ. सत्यपाल सिंह मीना
सदस्य
सोच बदलो गाँव बदलो टीम (SBGBT)

समय हमें कुछ भी अपने साथ ले जाने की अनुमति नहीं देता पर अपने बाद अमूल्य कुछ छोड़ जाने का पूरा अवसर देता है

-कुँवर नारायण

5 "विद्यार्थियों के लिए सफलता का सूत्रः आपके विचार ही आपका भविष्य बनाते हैं"

बहुत सारे लोग, ख़ास तौर पर बहुत सारे स्टूडेंट्स, विभिन्न प्लेटफॉर्म्स पर मुझसे यह सवाल करते हैं कि आप शुद्ध गांव के होकर भी, पूर्ण अशिक्षित वातावरण और पृष्ठभूमि में रहकर भी, आर्थिक अभाव से गुज़र कर भी और ज़्यादा आकर्षक व्यक्तित्त्व के न होते हुए भी, बिना किसी नियमित कोचिंग के, सिविल सर्विसेज एग्जाम इतनी कम उम्र में पास कर लिए, ये कैसे हुआ ?? यक़ीन कीजिये ये सवाल मेरे मन में भी आता है।

एक महत्त्वपूर्ण चीज़ जो मैं दिल से महसूस करता हूं वो यह है कि मुझे मेरे विचारों ने बनाया है। किसी पश्चिमी मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि "विचार ही वस्तु बन जाते हैं" (Thoughts become things)! गांव के गरीब और साधनहीन बच्चों को प्रेरणा देने के लिए , उनसे जुड़ने के क्रम में , अभी सितंबर में अपनी पूज्य माताजी की पहली पुण्यतिथि पर अपने विद्यालय के बच्चों के बीच बोल रहा था तो भी यह सवाल आया था।

"विचार ही वस्तु बन जाते हैं" इस वाक्य का सामान्य अभिप्राय यही है कि हम जैसा अपने बारे में सोचते रहते हैं ,वैसा होते चले जाते हैं। यानी "प्राप्य के विचार " की आवृत्ति और तीव्रता (frequency ,aM intensity) अगर सही (बहुत अधिक) हो तो वो वस्तु हमें भौतिक रूप में भी मिल जाती है। उदाहरण के लिए , अगर हमे कोई बीमारी ,(जैसे माइग्रेन अन्य कोई समस्या) है और हम ये सोचते हैं कि हमे समय समय पर सिर में दर्द होता है , तो ये सिर दर्द होता ही रहेगा। अगर हम

इसके बजाय ये सोचें कि मेरा हेल्थ बहुत अच्छा है , या समस्या अगर है भी तो बहुत छोटी है , और आसानी से अपने आप , या सामान्य इलाज से दूर हो जाएगी , तो ये समस्या अपने आप (या सामान्य इलाज से) समय के साथ दूर हो जाएगी। अब प्रश्न है कि कब तक ऐसा सोचें? एक महीना, दो महीने या तीन महीने? एक साल?? कई साल ?? कब तक? यहां पर जो ज़रूरी बात है वो यह कि इसको हम समय सीमा से न बांधें, अपने मस्तिष्क को इतना अनुशासित कर लें कि जब तक हमें सिरदर्द का एहसास होना बंद न हो जाये , हम यही सोचें कि हमको कोई समस्या नहीं है और अगर है , तो बहुत छोटी समस्या है , और आसानी से दूर हो जाएगी। इसी तरह अगर हम साधनों के "अभाव" के बारे में सोचेंगे तो हमेशा "अभाव" से पाला पड़ेगा , अगर हम ये सोचें की हमारे पास तो सब कुछ है तो हमारे पास एक दिन सब कुछ होगा। समय लग सकता है; पर धैर्य रखें। फिर प्रश्न ये है कि कितने दिन तक ऐसा सोचे ?? जवाब फिर वो ही है कि मस्तिष्क इतना अनुशासित हो कि जब तक सब कुछ हो न जाये तब तक हम उसी विचार को जीते रहें।

बहुत लोगों को कहते सुना होगा कि फलां मंदिर गए, तो मनोकामना पूर्ण हो गई। कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? कि किसी मंदिर में जा के किसी देवी या देवता से हम कुछ मांगते हैं तो प्रायः वो चीज़ मिल कैसे जाती है? (जबकि मेरा मानना है कि मन्दिर मस्ज़िद ईश्वर अल्लाह सिर्फ आस्था का विषय हैं, उनका भौतिक प्रभाव सिद्ध या असिद्ध नहीं है)। हां इन शक्तियों में हमारी आस्था मनोवैज्ञानिक स्तर पर हमें मज़बूत अवश्य बना सकती है, जिससे कई बार हम उम्मीद वश प्रयास करते रहते हैं और सफल हो जाते हैं।

हमारे तीव्र विचार हमारी इच्छित वस्तु को उतनी ही तीव्रता (intensity) के साथ आकर्षित करते हैं जितनी तीव्रता के साथ हम उस वस्तु को पाना चाहते हैं। कोई इंसान जब किसी समस्या को ले के मंदिर जाता है तो क्या सोचता है? यही न कि उसको क्या मिले? समाधान ही न?? तो उसके दिमाग में दिन रात क्या

विचार चलता है ??? समाधान.... समाधान... समाधान (जैसे कोई धन प्राप्ति के बारे में मंदिर जाता है तो धन प्राप्ति को ही न सोचेगा?) इसलिए उसको समाधान प्राप्त होता है। इसका एक मनोवैज्ञानिक पहलू ये है कि चूंकि मस्तिष्क में दिन रात यह बात चल रही होती है , तो इंसान समाधान की दिशा में खुद ही आगे बढ़ने लगता है , और समाधान पाने का तीव्र प्रयास (intense effort) करने लगता है।

जिसको समाधान नहीं मिल पाता वो कहता है कि मंदिर मस्जिद झूट हैं, भगवान कुछ नहीं होते। मेरा स्पष्ट मानना है और शोधों द्वारा ये साबित भी है कि मानव मस्तिष्क इतना शक्तिशाली है कि उसके अन्दर का विचार ही प्राप्य वस्तु (सकारात्मक या नकारात्मक) का सृजन या प्रस्तुतीकरण करता है।

मंत्र ये है कि हमें अपने लक्ष्य के बारे में दिन रात सोचना चाहिए ताकि वोअवचेतन मस्तिष्क में रच बस जाए, और हम दिन रात सोते-जागते उस विचार से मुक्त न हो सकें कि हमको ये काम करना है । जैसे कि अगर IAS, IPS, PCS, DOCTOR, ENGINEER, PROFESSOR या सफल बिजनेसमैन में से कोई एक बनना चाहते हैं , तो बाकी सारे विकल्पों को चेतना के स्तर पर बंद कर देना होगा।

अब प्रश्न है कि होगा कैसे ये ?

कुछ मेरे जैसे सौभाग्यशाली होते हैं जिनको ये विचार स्वतः आते थे। मैं दिन रात सिर्फ एक ही सपना देखता था कि मुझे जल्दी से जल्दी भारत सरकार की सबसे बड़ी सर्विस पानी है। पर सब मेरे जैसे सौभाग्यशाली नहीं होते। उनको अपने मस्तिष्क को ऐसे अनुशासित कर के ऐसा ढालना पड़ेगा कि ज़रा सा भी समय जीवन के कामों के बीच में मिल जाये तो वो यही सोचें कि वो पहले से IAS, IPS हैं। इतना सोचें इतना सोचें कि ये विचार हमारे अवचेतनअस्तित्त्व का हिस्सा बन जाये कि हम पहले से ही एक IAS अफ़सर के तौर पर काम कर रहे हैं । पर ये व्यवहार दुधारी तलवार है, इसमे सावधानी ये रहे कि यह केवल विचार के स्तर पर हो ताकि व्यर्थ के दिखावे और घमंड से बचे रहें। विचार अत्यंत शक्तिशाली परंतु व्यवहार अत्यन्त विनम्र हो, वरना नुकसान हो सकता है।

सुबह उठने के बाद बिस्तर पर थोड़ी देर उस कल्पना को जियें (बन चुके होने का विचार करें न कि बनने की उम्मीद) याद रहे कि "बन चुका हूं" या "किसी भी कीमत पे बनना है" ये विचार होना चाहिए न कि "अभावों" और "कमज़ोरियों" को सोच के ये सोचना है कि प्रयास तो पूरा करूँगा बन सकूँ या न बन सकूँ। "अभाव" और "कमज़ोरियों" का विचार अभाव और कमज़ोरियों वाली freqency को आकर्षित करेगा। ठीक यही काम रात में बिस्तर पर जाने के बाद भी करें। उसी ख़्वाब के साथ जागें , उसी ख्वाब के साथ जियें, उसी ख्वाब के साथ सोएं। इसकी शुरुआत में थोड़ा कठिनाई हो सकती है पर कुछ दिन में मस्तिष्क स्वानुशासित हो जाएगा तब ये निष्प्रयास रूप से अपने आप होने लगेगा।

रहस्य (the secret) नाम की एक किताब है, जो अत्यंत विद्वान मनोवैज्ञानिकों द्वारा लाखों सफल और असफल दोनों प्रकार के लोगों के जीवन पर शोध के निष्कर्षों पर लिखी गयी है। अगर इस पुस्तक को पढ़ेंगे तो लगेगा कि मैंने पहले भी विभिन्न साक्षात्कारों में यही बात बोली थी कि मैं शुरू से ही दिन रात अफ़सर बने होने की कल्पना करता था और उसी के अनुरूप प्रयास करता था। यहां तक कि जब दुर्दान्त गरीबी के उन दिनों में जब पैसा कम होने लगता था तो मन में "अभाव की निराशा" नहीं पैदा होती थी , ऐसा विचार पैदा होता था कि "इतने सारे शुभ चिंतक" हैं, पैसा कहीं न कहीं से मिल ही जायेगा। लोग बिना निजी अनुभव के विश्वास नहीं करेंगे की मुझे जब जब ज़्यादा अभाव होता था , कोई न कोई ये कहते हुए पैसा दे देता था कि बाद में लौटा देना (कई बार बिना मांगे भी मिलते थे)। कोई बिना मांगे मदद देगा या मांगने पे देगा या मांगने पे भी नहीं देगा , ये आपके उस विचार की तीव्रता

(intensity) पे निर्भर करेगा।

प्रश्न ये भी उठ सकता है मन मे की विचार" कैसे काम करते हैं। शोध से ये साबित हुआ है कि इसकी क्रिया विधि भी विज्ञान की तरह ही है। हमारा मस्तिष्क विचार के रूप में एक ख़ास आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी) की तरंगें छोड़ता है , जैसा विचार होगा वैसी तरंगें हमारा मस्तिष्क छोड़ेगा, और इस विशाल ब्रह्मांड में उन तरंगों की फ्रीक्वेंसी से मैच करती हुई वस्तु या वस्तुएं या विचार जहां कहीं भी होगा वो तरंगें उन्हें आकर्षित कर के ले आएंगे। अर्थात विचारों की आवृत्ति और उनकी तीव्रता जितनी ज्यादा होगी आकर्षण भी उतना तीव्र और जल्दी होगा। यह एक थ्योरी नहीं है, यह एक साबित सत्य है। उपरोक्त पुस्तक मैंने अपने संघर्ष के दिनों में नहीं पढ़ी थी परंतु उसमें वर्णित सिद्धान्त संभवतः मेरे सौभाग्य की वजह से मैंने स्वतः अपने साथ लागू किया था । शायद इसलिए कि मैं बचपन मे बेहद कल्पनाशील था और हमेशा ऊंचे ऊंचे ख़्वाब देखा करता था। ये शोध सत्य हों या असत्य पर ये एक मनोवैज्ञानिक सच्चाई है कि हमारे विचार हमारे लिए नए रास्ते खोजते हैं।

जो मेरे जैसे स्वाभाविक रूप से सौभाग्यशाली नहीं हैं, उनको बस अपने मस्तिष्क में एक अनुशासन पैदा कर के ये सुनिश्चित करना होगा कि वो अपने मन मे उचित आवृत्ति (frequency) के "विचार" पैदा करें। और उस विचार को अच्छे से जियें। अंत मे ये कहना चाहूंगा कि हमेशा खुश रहें, संवेदनशील और सकारात्मक रहें, साहित्य, संगीत और कला का भी अनुशीलन करें, मुझे पूरा विश्वास है नए रास्ते मिलेंगे।

चूंकि मुझे गाने भी बहुत पसंद हैं तो संदर्भ में एक गाना याद आ रहा .....

"कहाँ तक ये मन को अंधेरे छलेंगे,
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे!
कभी सुख कभी दुख, यही ज़िंदगी है,
ये पतझड़ का मौसम घड़ी दो घड़ी है!
नये फूल कल फिर डगर में खिलेंगे,
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे !
भले तेज कितना, हवा का हो झोंका,
मगर अपने मन में तू रख ये भरोसा!
जो बिछड़े सफ़र में, तुझे फिर मिलेंगे,
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे !
कहे कोई कुछ भी, मगर सच यही है
लहर प्यार की जो कहीं उठ रही है,
उसे एक दिन तो किनारे मिलेंगे,
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे!!!!"

राम प्रकाश मौर्य
भारतीय राजस्व सेवा 2007

6

हुनर

रेगिस्तान तरसता इक बूँद को
और तेरा वो मुस्कुरा जाना
ये कौन सी बाढ़ आ गयी
लबालब गले तक मेरा डूब जाना
डूबी, तेरी आँखों को देखती
और तभी तेरा 'मेरी मम्मा' कह जाना
उस 'मेरी' में , मेरा सब कुछ बिक जाना
हाथ पकड़ के हमको समझाना
खुद बड़ा और हमको बच्चा कर जाना
सीखा कहां से ये हुनर तुमने
कुछ इस दुनिया को भी दे जाना
हर जगह प्यार की बारिश में
तुम सब को रोज़ रोज़ नहलाना
नफ़रतों की मैल को तुम
जितना हो सके धो जाना
सबको जीने का अनोखा अंदाज़ सिखलाते चले जाना

पल्लवी सिंह
IRS एडिशनल कमिश्नर ऑफ़ इनकम टैक्स

7 "प्राकृतिक आपदाओं के प्रसार को रोकने के लिए मानव, पशु और पर्यावरण केंद्रित समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता"

इस समय पूरी दुनिया कोरोना वायरस से जंग लड़ रही है। वैज्ञानिक कोरोना वायरस की उत्पत्ति एवं स्वरूप के बारे में अध्ययन कर रहे हैं। अधिकांश शोधकर्ताओं का मानना है कि यह वायरस चमगादड़ से किसी मध्यवर्ती होस्ट पहुंचा फिर उस से लोगों में। इस COVID&19 महामारी ने जेनोटिक (पशुओं से मानव में संक्रमण) संक्रामक रोगों के प्रति लोगों का ध्यान फिर से खींचा है। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार मनुष्य में ज्ञात सभी संक्रामक रोगों में से लगभग 60% जेनोटिक है। इनमें डेंगू बुखार, इबोला, स्वाइनफ्लू, बर्डफ्लू, मिडिल ईस्ट रेस्पिरेट्री सिंड्रोम MERS, SARS, HIV, AIDS आदि शामिल है। पर्यावरणविद एवं संक्रामक रोग विशेषज्ञों का मानना है कि मनुष्य भोजन एवं आजीविका के लिए कृषि, जंगल एवं वन्यजीवों पर निर्भर है और बढ़ती जनसंख्या की खाद्य जरूरतों को पूरा करने के कारण जंगलों में कृषि का विस्तार हो रहा है।इससे जंगली जानवरों के प्राकृतिक पर्यावास का क्षरण हो रहा है। इससे खतरनाक वायरसों के जंगली जानवरों से मनुष्य तक पहुँचने की संभावना बढ़ी गई है। डेविड क्वामेन ने भी अपनी पुस्तक स्पिलओवर - एनिमल इनफेक्शंस एंड द नेक्स्ट हुमन पेंडेमिक मैं इस ओर संकेत किया है।

सरकारों के समक्ष ऐसी स्थिति में दोहरी चुनौती है। एक तरफ जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक पर्या-वासों का विखंडन, जैव-विविधता का विनाश, प्राकृतिक आपदाओं जैसे-चक्रवात, बाढ़, सूखा संक्रामक रोगों से निपटना दूसरी तरफ बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण करना, लोगों की खाद्य आवश्यकता के लिए कृषि उत्पादन एव क्षेत्र में विस्तार करना है। इस दोहरी चुनौती का सामना करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों एवं मानवीय आवश्यकता के मध्य संतुलन बनाने की जरूरत है। सरकार ने देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल के 33% भाग पर वनावरण का लक्ष्य रखा रहा है।नवीनतम भारत वनस्थिति रिपोर्ट-2019 के अनुसार देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 24-56% भाग वनों एवं वृक्षों से आच्छादित है।

सघन वृक्षारोपण एवं वनावरण के लिए भूमि की आवश्यकता होती है। वर्तमान समय में महानगरों के नज़दीक नये घने जंगल, राष्ट्रीय उद्यान, राष्ट्रीय अभ्यारण का विकास संभव नहीं है; ना ही कई हेक्टेयर में फैले नये जंगल बनाने का। ऐसी स्थिति में वनावरण लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नई रणनीतियों की आवश्यकता है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के द्वारा दूर संवेदी उपग्रह आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 29-32% भूमि क्षरण के खतरे का सामना कर रहा है। इस तरह की भूमि देशभर में छोटे-छोटे टुकड़ों में फैली हुई है, इस पर छोटे जंगलों (Tinny Forest) के विकास की नीति को अपनाया जा सकता है। 4 से 5 एकड़ बंजर भूमि को विकसित कर सघन वृक्षारोपण करने के लिए जापानी वनस्पति शास्त्री और पौधों पारिस्थितिकी में विशेषज्ञ अकीरा मियावाकी द्वारा विकसित मियावाकी विधि महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। मियावाकी विधि परंपरागत पौधरोपण की प्रक्रिया से कई मायनों में अलग है। इसके अंतर्गत सबसे पहले वृक्षारोपण के लिए भूमिका चयन कर स्थानीय प्रजाति के पौधे एकत्रित किए जाते हैं। इन्हें उनकी भौतिक विशेषताओं के अनुसार झाड़ी, उपपेड़, पेड़, कैनोपी में वर्गीकृत किया जाता है। मृदा परीक्षण के बाद लगभग 60 सेंटीमीटर की दूरी पर पौधारोपण किया जाता है। अंततः भूमि पर पलवार(मल्चिंग) बिछाई जाती है। इस तरह लगा एग एस घन पौधों को 2 से 3 वर्ष तक देखभाल की आवश्यकता होती है उसके बाद ये अपनी जरूरतों को स्वयं पूर्ण कर लेते हैं। यह छोटे जंगल सामान्य पौधारोपण से 10 गुना अधिक गति से वृद्धि करते हैं और लगभग 30 गुना अधिक घने होते हैं।

सरकार एवं समुदाय की समान भागीदारी से देशभर में हरितकवर को बढ़ाया जा सकता है। इन छोटे जंगलों के अनेक प्राकृतिक लाभ होते हैं। पौधों का चयन करते समय फलों फूलों के पौधों का मिश्रण कर पक्षियों, तितलियों और मधुमक्खियों के लिए आसरा तैयार किया जा सकता है। ये जीव पौधों एवं कृषि फसलों के लिए परागण सेवाएं प्रदान कर सकते हैं। जिससे कृषि उत्पादकता, जैव विविधता एवं प्राकृतिक कीट नियंत्रण में सहायता प्राप्त होगी। किसानों की आजीविका में वृद्धि होगी एवं जैविक खेती के नए रास्ते खुलेंगे तथा जंगली प्रजातियों के सीधे संपर्क से मनुष्यों को सुरक्षित दूरी पर रखने के लिए संरक्षित क्षेत्रों के आसपास ''बफर-डिस्टेंसिंग'' बनाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। यह लोगों की प्राकृतिक उत्पादों की आवश्यकता को जंगल में जाए बिना पूरा कर सकती है साथ ही पशु एवं मानव संघर्ष को रोकने में भी सहायक हो सकती है। इस तरह के छोटे जंगल स्वच्छ हवा के साथ कार्बन उत्सर्जन को सीमित करेंगे एवं पेरिस समझौते के लिए 2030 तक 2.5 से 3 बिलियन टन कार्बन डाइ ऑक्साइड के बराबर कार्बन सिंक बनाने में उपयोगी होंगे इसके अतिरिक्त इनसे बारिश के पानी का संग्रहण एवं भूजल रिचार्ज होगा।

इसके धरातल पर क्रियान्वयन के लिए ग्राम स्तर से राज्य स्तर तक सहयोग एवं समन्वय के लिए नीति बनाने की आवश्यकता होगी। जैसे सघन पौधारोपण के लिए खाली पड़ी भूमि का सर्वे करना, कम उपजाऊ भूमि पर समुदाय के साथ लाभ साझाकरण मॉडल के लिए दिशा निर्देश तैयार करना। जिला स्तर पर पौधारोपण के लक्ष्य निर्धारित करना। लोकल प्रजाति के पौधों की उपलब्धता के लिए पंचायत स्तर पर नर्सरी का विकास किया जा सकता है। ग्राम स्तर पर लोगों के प्रशिक्षण के लिए गैर सरकारी संगठनों से सहयोग प्राप्त करना। अप्रयुक्त सार्वजनिक भूमि पर इस विधि से वृक्षारोपण मनरेगा के अंतर्गत किया जा सकता है। किसानों को अपनी कम उपजाऊ भूमि पर मियावाकी विधि से पौधे रोपण के लिए प्रशिक्षित एवं प्रेरित किया जा सकता है। केरल एवं पश्चिम बंगाल सरकार ने इसे लागू करने के लिए नीतिगत निर्णय लिए हैं।

शहरी क्षेत्रों में भी ग्रीन आवरण पर्यावरण संतुलन के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। इससे शहरों को हीट आईलैंड बनने से रोका जा सकता है। फेनी, अम्फान जैसे चक्रवाती तूफ़ानों से वनों के नुकसान की त्वरित पूर्ति मियावाकी विधि से की जा सकती है। तमिलनाडु सरकार ने चेन्नई में शहरी जंगलों के विकास के लिए इस विधि को अपनाने का निर्णय लिया है।

हमें प्राकृतिक चुनौतियों का सामना करने के लिए इस तरह की नई रणनीतियों पर विचार करना चाहिए। प्राकृतिक आपदाओं के प्रसार को रोकने के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी जो मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को एक साथ लाता हो और जिससे पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन कर सतत विकास को बढ़ावा दिया जा सके।

अभिषेक
स्मार्ट गाँव धनौरा

चलो इस तरह सजाएँ इसे
ये दुनिया हमारी तुम्हारी लगे।

– निदा फ़ाज़ली

9 गाँव विकास समिति के रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया

दोस्तों! सोच बदलो गाँव बदलो अभियान के तहत गाँव-गाँव में "गाँव विकास समिति" गठित कर जमीनी बदलाव किए जा रहे है। ग्राम विकास समिति एक को ऑपरेटिव सोसाइटी के रूप में कार्य करती है और इसका रजिस्ट्रेशन "राजस्थान सोसायटी रजिस्ट्रीकरण अधिनियम,1958" के तहत किया जाता है। BGBT टीम के प्रत्येक कार्यकर्ता को गाँव विकास समिति के रजिस्ट्रेशन का प्रक्रिया जाना बेहद जरूरी है। गाँव विकास समिति की सारी प्रक्रिया ऑनलाइन स्वयं के द्वारा या ई-मित्र के जरिए ऑनलाइन होती है और कागज़ों की सत्यापन का काम (डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन) भी E&KYC के जरिए ऑनलाइन हो जाता है। इस पूरी प्रक्रिया को सिलसिलेवार इस प्रकार बताया गया है।

१. सर्वप्रथम गांव के सकारात्मक और कर्मठ समाजसेवी लोगों को साथ लेकर इस विषय में विस्तृत चर्चा की जानी चाहिए और गांव का भला चाहने वाले सकारात्मक लोगों में से सर्वसम्मति से अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष व अन्य पदाधिकारी का चयन करना चाहिए। सभी पदाधिकारियों के आधार नंबर और आधार के साथ रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर एकत्रित करना आवश्यक होगा जोकि रजिस्ट्रेशन के लिए जरूरी हैं।

२. ऑनलाइन एप्लीकेशन करने से पहले सोसाइटी रजिस्ट्रेशन की ऑफिशियल साइट http%@@rajsahakar-rajasthan-gov-in@Home@OnlineRegistrationसे नियमों और उद्देश्यों की पीडीएफ डाउनलोड करें या ई-मित्र की दुकान से प्राप्त करें। सबसे महत्वपूर्ण और सरल उपाय यह है कि इसकी सॉफ्ट कॉपी SBGBT द्वारा भी भेजी जा रही है; जिसमें आप अपने गांव की आवश्यकता अनुसार परिवर्तन कर सकते हैं और उसके बाद उसका प्रिंट आउट प्राप्त कर सकते हैं। इस पर सभी पदाधिकारियों के हस्ताक्षर होने के बाद इसकी एक पीडीएफ़ कॉपी तैयार रखें जो कि एप्लीकेशन के साथ ऑनलाइन ही अपलोड करना होगा।

३. स्वयं या ई-मित्र के द्वारा अहनलाइन एप्लीकेशन भरी जाएगी और इस दौरान पदाधिकारियों के आधार के साथ रजिस्टर्ड मोबाइल पर ओटीपी आएगा; जिससे सभी का E&KYC हो जाएगा। यह भी जानना जरूरी है कि जिन पदाधिकारियों के मोबाइल रजिस्टर्ड नहीं है; उनके ई-मित्र पर ही अंगूठे (फिंगरप्रिंट) से E&KYC हो जाएगा।

४. यह भी जानना जरूरी है कि गॉव विकास समिति के अध्यक्ष के फोटो, आधार और पैन कार्ड की रजिस्ट्रेशन करते समय आवश्यकता होगी जिनकी सॉफ्ट कॉपी एप्लीकेशन के साथ अपलोड करनी होती है।

५. यह प्रक्रिया सिर्फ गाँव विकास समिति के अध्यक्ष के लिए होगी। दूसरे पदाधिकारी और सदस्यों के लिए यह आवश्यक नहीं है। उनके डॉक्यूमेंट का वेरिफिकेशन रजिस्टर मोबाइल पर प्राप्त ओटीपी के माध्यम से ही हो जाएगा परंतु मोबाइल नंबर रजिस्टर नहीं होने पर फिंगरप्रिंट के माध्यम EKYC हो जाएगा; उनके लिए अन्य डॉक्यूमेंट की जरूरत नहीं पड़ती है।

६. ऑनलाइन एप्लीकेशन फाइल होने के बाद के बाद रजिस्ट्रार कार्यालय में आपके एप्लीकेशन का वेरिफिकेशन होगा। अगर कोई एप्लीकेशन में गलती है तो त्रुटि सुधार के लिए ऑनलाइन ही एप्लीकेशन वापस कर दिया जाएगा और आपके द्वारा दिये गए मोबाइल पर मैसेज आ जायेगा।

७. सोसाइटी रजिस्ट्रेशन कार्यालय से वेरीफाई होने के बाद दिए गए मोबाइल नंबर पर 10,500 रुपये रजिस्ट्रेशन फीस का मैसेज आएगा; जिसको ऑनलाइन ही नेट बैंकिंग या डेबिट कार्ड के जरिए या ई-मित्र के जरिए जमा करवाना होगा।

८. इसके उपरांत पंजीकरण का काम पूरा हो जाएगा और कुछ दिन बाद ई-मित्र पर से रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट डाउनलोड कर सकते हैं। इस प्रकार गाँव विकास समिति के रजिस्ट्रेशन की

प्रकिया पूर्ण होती है।

६. रजिस्ट्रेशन सर्टिफ़िकेट मिलने के बाद आप गाँव विकास समिति के लैटर पैड व सील बनवा सकते है। इसके बाद बैंक जाकर गाँव विकास समिति का पब्लिक एकाउंट खुलवा सकते हो।

१०. बैंक एकाउंट खुलवाने के लिए रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट, सोसाइटी के नियमों और उद्देश्यों की एक कॉपी लगेगी जिसमें मुख्य पदाधिकारियों (अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष) के हस्ताक्षर होने चाहिए। उक्त तीनों पदाधिकारियों के आधार कार्ड, पैन कार्ड और फ़ोटो लगेंगे।

११. इसके अतिरिक्त समिति के लैटर पैड पर अध्यक्ष, सचिव और कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर से एक रेजोल्यूशन भी देना होगा और इसके बाद समिति का बैंक एकाउंट खुल जायेगा।

१२. ग्राम विकास समिति के रजिस्ट्रेशन के बाद उपरांत आप ग्राम विकास की विभिन्न कार्यों को समिति के माध्यम से कर सकते हैं। गांव की विभिन्न समस्याओं को जनप्रतिनिधि और प्रशासन के समक्ष समक्ष उठा सकते हैं। गांव के लोगों से दानदाताओं से दान संग्रह कर गांव में विकास की गंगा को बढ़ाया जा सकता है। आप सभी साथियों को सोच बदलो गांव बदलो टीम की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

देवेंद्र प्रताप सिंह, दुर्गसी

अकेला ही चला था
जानिब-ए-मंज़िल मगर
लोग साथ आते गये
कारवाँ बनता रहा

– मजरूह सुल्तानपुरी

10 आओ !...मिलकर ग्राम विकास की इबारत लिखें

भला ! कौन नहीं चाहता कि हमारा देश उन्नति करे, हमारा गांव खुशहाल बने, हमारा समाज समृद्ध बने, हमारा परिवार आगे बढ़े । आम तौर पर जब भी हम किसी गांव की ओर नजर डालते हैं तो हमें कच्चे, संकरे व टेढ़े-मेढ़े रास्ते, टूटी-फूटी व जगह-जगह गोबर व अन्य कूड़ा करकट से अटी पड़ी सडकें, पानी की उचित निकासी के अभाव में सड़क पर जगह-जगह गंदे पानी का भराव, खस्ता हाल व बिना रंग रोगन की दीवारों वाले सरकारी भवन, कच्चे व पक्के मकान, कमजोर स्वास्थ्य सुविधाएं, पेय जल संकट २ ऐसी कई तमाम अव्यवस्थाओं पर बर बस ही नजर पड जाती है, जिन से गांव में रह रहे लोग हर रोज रूबरू होते हैं ।

यह हम सभी भली भांति जानते हैं कि हमारा देश गांवों से मिलकर बना है और गांवों के विकास के बिना हमारा देश विकसित नहीं बन सकता और इसी क्रम में, गांव की खुशहाली और चहुंमुखी विकास के सपनों को पूरा करने की दिशा में, युवा शक्ति, मातृ शक्ति, ग्रामीण आमजन और बुजुर्गों में एक नई सोच, ऊर्जा व जन चेतना देने की कोशिश का ही एक नाम है - "सोच बदलो - गांव बदलो अभियान" ।

"सोच बदलो - गांव बदलो" -यह डह. सत्यपाल सिंह मीनासर द्वारा मार्गदर्शित एक ऐसी संकल्पना है जो गांव के प्रत्येक युवक और युवती को, हर विचार वा नव्यक्ति को, महिला-पुरुष और बुजुर्ग को अपने गांव के लिए एक नई सोच और चेतना प्रदान करने का काम करती है । गांव की खुशहाली के लिए गांव में रहने वाले छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक हर बाशिंदे की छोटी-छोटी रचनात्मक कोशिशों को बल देती है । जीवन में निराशा के भाव से बाहर निकल कर आशावादी सोच के साथ ग्राम विकास के सपने संजो ने और उन्हें पूरा करने हेतु सम्मिलित प्रयासों व सकारात्मक सोच की सीख देती है । युवा पीढ़ी को अपनी मातृभूमि (गांव) के लिए बुजुर्गों के अनुभव और आशीर्वाद के सानिध्य में ग्राम विकास में अपनी ऊर्जा के सदुपयोग के लिए अभिप्रेरणा देती है । गांव के युवा को आधुनिक तकनीक के उपयोग के साथ-साथ केंद्र और राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न ग्राम विकास योजनाओं के जमीनी क्रियान्वयन में सहयोग दे कर अपनी माटी के लिए कुछ कर गुजरने की सोच देती है । यह संकल्प ना गांव की हर बेटी, माता और बुजुर्ग को यथोचित सम्मान देने की भावना को बल देने क साथ-साथ गांव म आपसी सहयोग और भाईचारे को बढाने की अपील करती है ।

यह संकल्पना हमें विजन देती है कि हमारे गांव भी इक दिन खुशहाल बन सकते हैं, गांव में भी हर वह सुख सुविधा हो सकती है जो कि आम तौर पर किसी एक शहर में होती है । बस इसके लिए हमें अपनी सोच बदलने की जरूरत है और सकारात्मकता के साथ विश्वास से भरी शुरुआत करने की जरूरत है । सोच बदला गांव बदलो टीम हमें यही प्रेरणा देती है । जैसे अपनी मंजिल को पाने के लिए हमें एक-एक कदम चलकर आगे बढ़ना होता है, ठीक उसी प्रकार अपने गांव के विकास के लिए हमें छोटी-छोटी ही सही लेकिन, निरंतर रचनात्मक कोशिशों को बनाए रखने की जरूरत होती है । और हां! यह भी सच है कि कई बार व्यक्ति अपने परिवार से जुड़ी जिम्मेदारियों के बोझ तले इस कदर दबा रहता है कि जिम्मेदारियों के निर्वहन में आ रही समस्याओं से घबरा कर, निराशा का भाव उसे आ घेरता है । ऐसे मुश्किल समय में वह अपने परिवार से इतर सोचने की हिम्मत ही खोने लगता है । लेकिन, यकीन मानिए जब आप निस्वार्थ भाव से अपनी शक्ति व सामर्थ्य के हिसाब से, अपने परिवार की जिम्मेदारियों के निर्वहन के साथ-साथ, अपने परिवार से इतर किसी अन्य व्यक्ति की मदद को हाथ बढाते हैं, अपने गांव के विकास के लिए यथा संभव सहयोग करते हैं, तो यह आप को सच्ची व आत्मिक खुशी देता है ।

साथियों! हमारे गांवों का विकास की मुख्यधारा में पीछे रहने की मुख्य वजह है - जन चेतना का अभाव और अशिक्षा। लेकिन अब दौर बदला है। आज डिजिटल युग में हम सब जी रहे हैं । सूचनाओं का आदान-प्रदान पहले से कहीं ज्यादा आसान हुआ है, तो ऐसे में गांव के पढ़े-लिखे और समझदार युवा अपने गांव के लिए बहुत कुछ सहयोग कर सकते हैं । इसी संदर्भ में, सोच बदलो गांव बदलो टीम (SBGBT) के मार्ग दर्शक डह. सत्यपाल सिंह मीना सर हमेशा कहते है कि -

"जन सहभागिता व आमजन की सक्रिय भागीदारी, ग्रामीण

विकास की सबसे पहली आवश्यकता है"

कानूनी तौर पर प्रत्येक व्यक्ति जो वोट डालन का हकदार है, ग्राम सभा का सदस्य होता है । अतः सही अर्थों में गांव के विकास कार्यों को यदि गति देनी है तो, ग्राम सभा में सक्रिय भागीदारी बहुत जरुरी है । आज गांव, अपने पढे लिखे युवा से उम्मीद लगाए बैठा है कि वो आगे आए और अपने गांव को विकास के पथ पर लेकर चले। युवा पीढ़ी अपने गांव के वकास में महती भूमिका अदा कर सकती है । पढा लिखा युवा, प्रशासन व आम जन क बीच सेतु का काम कर सकता है । सरकारी योजनाओं में पंचायत के पास इतना फण्ड आताहै, सक्रिय भागीदारी से ही उसका उचित कार्यों में उपयोग संभव है। गांव के संकरे रास्तों का चौड़ी करण, सीमेंटेड पक्की सड़कों का निर्माण, पानी की उचित निकासी के लिए नाली निर्माण, सार्वजनिक स्थलों और सडक के दोनों ओर वृक्षारोपण, गांव के घरों के कूड़े का उचित संग्रहण और समुचित निस्तारण, गांव के मुख्य रास्तों व गलियों में रोशनी की व्यवस्था, बच्चों के लिए लाइब्रेरी व संस्कार केंद्रों की व्यवस्था, सरकारी परिसंपत्तियों व भवनों की उचित देखभाल व रख रखाव में सहयोग, विद्यालय में कंप्यूटर, फर्नीचर, पंखे, रोशनी व पानी की समुचित व्यवस्था में सहयोग, बच्चों क लिए खेल मैदान, हरे-भरे पार्क निर्माण, प्रतिभाशाली बच्चों को प्रोत्साहन व ग्रामीणों के बैठने हेतु आधुनिक सामुदायिक भवन का निर्माण इत्यादि । ऐसे कई तरह के काम हम थोड़ी सी सक्रियता व जन भागीदारी से, सरकारी फण्ड व जन सहयोग के माध्यम से अपने गांव में कर सकते हैं और ग्राम विकास की नई इबारत लिख सकते हैं । अंत में यही कहना चाहता हूं कि हमारी युवा पीढ़ी ही है, जो हर मुश्किल से पार पाकर, अपने गांव की तस्वीर बदलने का माद्दा रखती है । यदि गांव के युवा ठान लें, तो हर गांव में शहर जैसी तमाम सुविधाएं हो सकती है । गांव भी समृद्ध व खुशहाल बन सकते हैं । बस पूरे उत्साह, सकारात्मक सोच और विश्वास के साथ शुरुआत करने की जरूरत होती है । तो साथियों, फिर देर किस बात की । आओ ! मिलकर ग्राम विकास की इबारत लिखें । अंत में आप सभी युवाओं को समर्पित दो पंक्तियाँ -

"जीत की ख़ातिर बस जूनून चाहिए,
जिसमें उबा लहो ऐसा खून चाहिए,
ये आसमां भी आ जाएगा ज़मीं पर,
बस इरादों में जीत की गूँज चाहिए।"

दिनेश सुनीपुर

माना अँधेरा बड़ा घना है
पर दीप जलाना कहाँ मना है

11 विकास प्रक्रिया में हमारी सहभागिताः

'ग्रामीण विकास के विभिन्न सोपान क्या हैं ?'
'ग्रामीण विकास की सही प्रक्रिया क्या है ?'
'ग्राम पंचायत और प्रशासन की ग्राम विकास में क्या भूमिका होती है ?'
'ग्राम सभा और ग्रामीणों की ग्राम विकास में क्या भूमिका है ?'

इन सभी सवालों का जवाब ज़्यादातर पढ़ा-लिखा नागरिक भी नहीं जानता है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के मायने इस बात से निर्धारित किए जाते हैं कि कितने घरों में हैंडपंप लगाए गए ? कितने रास्तों पर खरंजा करवाया गया ? कितने लोगों का नाम BPL लिस्ट में दर्ज़ किया गया और कितने लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिला ? सामान्यतः यह मान्यता है कि सरकार द्वारा ग्राम विकास के लिए कुछ पैसा आता है, जिसको सरपंच साहब प्रशासन की सहायता से गांव के विकास में लगाते हैं और कमोबेश यही स्थिति शहरी विकास की भी है। भारतवर्ष के शायद ही कुछ गांव होंगे; जहां पर ग्राम सभा द्वारा विकास के प्रस्ताव सही से तैयार किए जाते हैं और उन प्रस्तावों को ग्राम सभा द्वारा अनुमोदित करके प्रशासन के पास प्रशासनिक और वित्तीय अनुमति के लिए भिजवाया जाता हो और उसके बाद ग्रामीणों की आवश्यकता के अनुसार विकास कार्य होता हो। कहने का अर्थ यह है कि जन- जागरूकता और जन सहभागिता के बिना ग्रामीण विकास का सपना आज भी साकार नहीं हो पा रहा है। केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण विकास के लिए हज़ारों करोड़ का बजट प्रतिवर्ष अनुमोदित किया जाता है और खर्च भी किया जाता है। प्रशासन द्वारा न केवल योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाता है बल्कि उनकी मॉनीटरिंग भी की जाती है परंतु लोगों में जन जागरूकता के अभाव में इन योजनाओं का लाभ लोगों तक नहीं पहुंच पाता है।

ग्रामीण विकास के सपने को यदि साकार करना है तो सरकार के प्रयासों को हमें ताकत देने की ज़रूरत है। लोगों में जन-जागरूकता और विकास के लिए जन-चेतना पैदा करनी होगी। लोगों को विकास में सक्रिय भागीदारी निभानी होगी। इसके लिए सबसे बड़ी जरूरत है हमारे देश के वर्तमान और भविष्य कही जाने वाली हमारी युवा पीढ़ी आगे आए और अपनी ऊर्जा को सकारात्मक व रचनात्मक कार्यों में लगाए। इस देश की एकमात्र आशा की किरण हमारी युवा पीढ़ी ही है जो जन-चेतना और जन-जागरूकता द्वारा देश को उन्नति के रास्ते पर ला सकती है। विकास कार्यों को तेज़ी देकर अभूतपूर्व बदलाव ला सकती है।

ग्रामीण विकास की पूरी प्रक्रिया को सोच बदलो-गांव बदलो टीम के द्वारा बहुत ही सरल शब्दों में समझाने का प्रयास किया गया है। हम आशा करते हैं कि हमारी युवा पीढ़ी इस जानकारी का उपयोग अपने गांव और शहर के विकास के लिए कर सकेगी।

१. ग्रामीण विकास के लिए सर्वप्रथम गांव के सभी सदस्यों,विशेषकर युवा पीढ़ी, द्वारा ग्राम सभा आयोजित करवाई जाए और उनमें भागीदारी निभाई जाए। ग्राम पंचायत,सरपंच और सदस्यों के साथ मिलकर ग्राम स्तर के विकास कार्यों का एक वार्षिक प्लान तैयार करवाया जाए। ग्राम पंचायत,सरपंच और सचिव ग्राम सभा की मीटिंग आयोजित करने और उसको संचालित करने के लिए जिम्मेदार हैं। ग्राम सभा का आयोजन और उसके द्वारा ग्राम विकास की चर्चा और वार्षिक प्लान तैयार करना, किसी भी पंचायत और गांव के विकास के लिए सबसे पहली ज़रूरत है। यदि किसी ग्राम पंचायत में ग्राम सभा का आयोजन नहीं किया जाता है, तो इसकी सूचना प्रशासनिक अधिकारियों तथा जनप्रतिनिधियों को दी जाए।

२. वार्षिक प्लान तैयार करने के बाद, ग्राम पंचायत से पंचायत समिति में उक्त विकास कार्यों को प्रशासनिक और वित्तीय

स्वीकृति के लिए भेजा जाए।

३. इसके उपरांत समय-समय पर गांव के सरपंच और लगभग ४-५ वरिष्ठ और सम्मानित नागरिकों को विकास अधिकारी से मिलकर उक्त विकास कार्यों की प्रगति रिपोर्ट जानने का प्रयास करना चाहिए। साथ ही लिखित पत्र भी देने होंगे ताकि आपके यह प्रयास अथवा अधिकारियों से मुलाकात व्यर्थ ना जाए बल्कि रिकॉर्ड में दर्ज़ रहे इसलिए लिखित में देना ज्यादा कारगर साबित होता है। इस कार्य में गांव की युवा पीढ़ी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। आवश्यकता पड़ने पर आरटीआई और टोल फ्री नंबर 181 का भी उपयोग किया जा सकता है।

४. विकास अधिकारी, पंचायत समिति के उक्त विकास कार्यों को स्वीकृति के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद को प्रस्ताव भेजेगा।

५. यहाँ भी आपको लिखित पत्रों के साथ कई बार फहलोअप करना पड़ेगा,जब तक कि उक्त विकास कार्यों की प्रशासनिक और वितीय स्वीकृति नहीं मिल जाती।

६. इस संपूर्ण प्रक्रिया में (वित्तीय और प्रशासनिक स्वीकृति मिलने तक) वर्ष भर का भी समय लग सकता है। इसलिए आपको धैर्य और संयम रखते हुए प्रत्येक चरण पर लगातार फॉलोअप करना ही पड़ेगा। एक बार वित्तीय और प्रशासनिक स्वीकृति आने के बाद कार्य शुरू हो जाता है, उस समय हम सब की जिम्मेदारी बनती है कि काम गुणवत्तापूर्ण हो। हमें ध्यान रखना चाहिए कि ग्राम विकास के लिए आया प्रत्येक नया पैसा, हम सबका पैसा है और उसका सदुपयोग सुनिश्चित करना, हम सब की नैतिक ज़िम्मेदारी है।

७. इसके अलावा गांव के वरिष्ठ व सम्मानित सदस्यों के साथ आपको अपने जन प्रतिनिधि, प्रधान, जिला प्रमुख, MLA से भी अपनी मांगों को पूरा करने के लिए यथासंभव मिलना होगा ताकि आप की मांगों पर त्वरित कार्यवाही हो सके।

८. इस प्रकार आप इस विकास प्रक्रिया में सहभागी बनकर कुछ ही वर्षों में अपने गांव सूरत बदल सकते हैं। दोस्तों ! जब आपको जन प्रतिनिधि और प्रशासन का सहयोग नहीं मिल रहा हो, तो आप सभी लिखित पत्रों का हवाला देकर, टोल फ्री नंबर 181 पर शिकायत दर्ज करा सकते हैं। फॉलोअप के लिए RTI भी लगा सकते हैं और उच्च अधिकारियों अथवा मुख्यमंत्री को भी ईमेल कर अपनी शिकायत दर्ज़ करवा सकते हैं।

९.सोच बदलो-गांव बदलो टीम, सभी साथियों से निवेदन करती है कि सरकार और प्रशासन का सहयोग करके ग्राम विकास में सहभागी बनें। आपके द्वारा किए गए ज़मीनी प्रयास ही धरातल पर बदलाव ला सकते हैं। केवल जनप्रतिनिधियों, प्रशासन और सरकार को कोसने से हमारी तक़दीर नहीं बदल सकती। हमें अपने अधिकारों के लिए सजग होना होगा और तभी हम सच्चे अर्थों में अपने गांव, शहर, देश और समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकेंगे।

१०. उम्मीद है इस लेख को पढ़ने के बाद आप सभी एक ज़िम्मेदार नागरिक की भांति,अपने नैतिक कर्तव्यों की पालना हेतु, अपने गांव अथवा शहर के विकास के लिए सक्रिय और ज़मीनी तौर पर भागीदारी निभाने के लिए आगे आएंगे।

श्री मनीराम बड़ापुरा
कॉर्डिनेटर
सोच बदलो गॉव बदलो टीम

12 टीम एक का उदय हुआ

टीम एक का उदय हुआ, गांवों की दशा बदलने को,
गांवों की दशा बदलने को, भारत की दिशा बदलने को।

ईर्ष्या, छल, अन्याय, कपट और, अंतर्मन की बुरी सोच को,
जनमानस को शुद्ध बनाकर, दिल से इन्हें मिटाने को।

जाति-पांति और ऊंच-नीच का भेद मिटाने को,
मानवता में प्रेम-सौहार्द बढ़ाने को।

दंभ द्वेष पाखंड झूठ, निज स्वारथ दूर भगाने को,
ऐसी सोच बदल दो भाई, गांवों में खुशियां लाने को।

युवाओं को राह दिखलाई, जीवन बचाने को,
दुर्व्यसनों से मुक्ति पाओ, अच्छा स्वास्थ्य पाने को।

कुप्रथा-कुरीति रूढ़िवादिता मिटाने को,
गांवों को उन्नति के पथ पे बढ़ाने को।

गलियों और राहों में स्वच्छता बढ़ाने को,
पेड़-पौधे हरियाली का महत्व समझाने को।

नीतियों से आमजन को, रूबरू कराने को,
शासन-प्रशासन का हाथ बंटाने को।

जागरूक ज़िम्मेदार इंसान बनाने को,
सदियों का फैला अंधकार मिटाने को।

गांव-गांव और ढाणी-ढाणी शिक्षा की अलख जगाने को,
जीवन देहाती खुशहाल बनाने को।

रोपा है उत्थान भवन, सरमथुरा शिक्षा पाने को,
रोपेंगे उत्थान भवन बाड़ी की शान बढ़ाने को।

टीम एक का उदय हुआ, गांवों की दशा बदलने को,
गांवों की दशा बदलने को, भारत कीदिशा बदलने को....

रामनरेश हुलासपुरा
सोच बदलो-गांव बदलो टीम

13 "स्मार्ट विलेज धनौरा के गौरव पथ की गौरव गाथा"

मैं स्मार्ट विलेज धनौरा का गौरव पथ हूँ। आज मैं अपनी विकास दास्तान को याद कर अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ और इस गाथा को आपके साथ साझा करने से अपने आपको रोक नहीं पा रहा हूँ। मैं लगभग 0-8 किमी लंबाई के साथ गाँव को बाड़ी, बिजोली - धौलपुर के मुख्य रास्ते से जोड़ता हूँ। मैंने गांव की हजारों पीढ़ियों को पलते, बढ़ते और विकसित होते हुए देखा है। मैंने धनौरा को एक सामान्य गांव से स्मार्ट गाँव बनते हुए देखा है। मेरा गांव धनौरा जब स्मार्ट विलेज के पथ पर आगे बढ़ रहा था तो यह विकास के कदम मुझसे होकर गुजरते थे और जब स्मार्ट विलेज धनौरा अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका था; तब मेरे भी मन में स्मार्ट और विशिष्ट बनने की महत्वाकांक्षा पनपने लगी और मैं प्रकृति मां से मन ही मन प्रार्थना हमें लगा कि अब मेरे भी दिन बदल दो और विकास की मुहिम से जोड़ दो।

मेरा इतिहास गाँव से भी बहुत पुराना है। जब मैं अपने इतिहास में झांकता हूँ तो अतीत के उस सकरे कच्चे रास्ते (दगरे) की स्मृति जेहन में ताजा हो जाती है; जो दोनों तरफ मिट्टी की खाई से बना था और जिस पर सरपत / सरपता या मूंज घास (Rush Grass) लगा होता था,बामू बने होते थे; जिनमें सांपों का बसेरा था। ऐसी मिट्टी और रेत से भरे रास्ते में जब मेरे गांव के मेहनतकश युवा और बुजुर्ग अपने ज्वारों (बैंलों) पर जुआ रखकर रास्ते पर अपने पदचिह्न छोड़ जाते थे; मैं उन पदचिह्नों को अपने हृदय में संजोकर रखता था। मुझे वह मंजर अभी भी याद है जब बरसात मेरी डगर को दलदल बना जाती थी; जिसमें से मनुष्य का निकलना तो मुश्किल था ही; पशुओं को भी निकालने में की मशक्कत करनी पड़ती थी। समय बदला सरकारी योजनाओं से स्वरूप बदलने की कवायद शुरू हुई रेत मिट्टी का स्थान पत्थर और फिर बरसों बाद पत्थर का स्थान डाबर ने ले लिया लेकिन सकरे रास्ते में दोनों तरफ से पत्थर, मिट्टी और काँटों की बाड़ेबंदी से मुझे घुटन महसूस होती रही। इसके उपरांत भी मैंने आशा और विश्वास का दामन नहीं छोड़ा और स्मार्ट विलेज धनौरा के युवाओं और बुजुर्गों से यह आशा बनाए रखी कि गांव स्मार्ट बनाने के बाद मेरी भी सुध ली जाएगी। मेरा विश्वास हकीकत बन गया जब सोच बदलो गांव बदलो अभियान से जुड़े मेहनती, जुझारू, समर्पित कार्यकर्ताओं ने दूरगामी सोच दर्शाते हुए सकरी और अतिक्रमणयुक्त रास्तों के विरुद्ध एक अभियान की शुरुआत की। यह सौभाग्य की बात है इस अभियान की शुरुआत की स्मार्ट विलेज धनौरा की धरती से हुई और गाँव लोगों ने इस अभियान को सिर आंखों पर लिया और शुरुआत हो गई स्मार्ट गांव के साथ ही मुझे स्मार्ट गौरव पथ तब्दील करने की। यह काम बहुत आसान नहीं था क्योंकि 10-15 फीट चौड़े रास्ते को 20-25 से चौड़ा करने के लिए किसानों/काश्तकारों खेतों की कच्ची और पक्की दीवारों को हटाना, बहुत से ग्राम वासियों के कच्चे पक्के मकानों और बाउंड्रीवालों को हटाना आवश्यक था परंतु स्मार्ट विलेज धनोरा के लिए ग्राम वासियों के लिए यह काम इतना भी कठिन नहीं था क्योंकि गांव के रास्तों को चौड़ा करने के लिए उन्होंने पहले ही अपना दिल खोल कर रख दिया था।

पारस्परिक सहयोग और सामाजिक सामंजस्य के बूते सकारात्मक कार्यों को एक नई दिशा दी जा सकती है ऐसे बहुत सेउदाहरण मेरे स्मार्ट विलेज में देखने को मिलते हैं। गांव के पंच पटेल एक जाजम पर बैठकर एक दूसरे के सहयोग से बड़े से बड़ा काम संपन्न करते हैं। जहां एक-एक इंच जमीन के लिए जान पर खेलने की घटनाएं आम बात हो गई है; वही गांव के मुख्य रास्ते को चौड़ा करने के लिए सभी ग्राम वासियों ने अपनी स्वेच्छा से अपनी-अपनी दीवारों और पक्के मकानों और बाउंड्रीवालों को हटा लिया। गांव वालों ने मुख्य रास्ते को चौड़ा करने के लिए अपने निजी हितों को तिलांजलि देते हुए अपने गांव के गौरव के लिए त्याग का उत्तम उदाहरण नई पीढ़ी के सामने प्रस्तुत किया।

ग्राम वासियों के त्याग तपस्या और कठोर मेहनत के कारण आज मैं 20 से 25 फीट चौड़ा और आरसीसी की परतों के साथ पक्का बनकर तैयार हो गया हूँ परन्तु विकास का कुछ खामियाजा प्रकृति को भी चुकाना पड़ता है। इसी क्रम में मुझे चौड़ा बनाने के लिए मेरे साथ खड़े हुए कुछ वृक्षों को भी अपनी कुर्बानी दी। वृक्षों की इस वेदना को समझते हुए युवा टीम धनौरा द्वारा मेरे दोनों तरफ समान दूरी पर अशोक के पेड़ लगाने का कार्य किया। पेड़ लगाने के साथ ही उनकी सुरक्षा का प्रबंध किया गया। इन पेड़ों को लगाने में कार्यकर्ताओं ने उमस भरी गर्मी में गड्ढा खोदने हेतु अथक परिश्रम किया तथा अपने श्रमकणों से धनौरा की तस्वीर में रंग भरने का कार्य किया है। पेड़ लगाने के बाद समय समय पर खाद पानी द्वारा उनके पोषण की जिम्मेदारी का बखूबी निर्वहन भी किया जा रहा है। मेरे साथी वृक्ष आज पुनः हरे भरे हो कर भी सुंदरता में चार चांद लगाने को तैयार हैं। अशोक वृक्ष, दोनों तरफ चारदीवारी, भव्य स्वागत द्वार उस पर उल्लेखित उद्देशिका व अशोक स्तंभ और इसी से लगा हुआ शिक्षा का मंदिर मेरी शोभा में चार चाँद लगा रहा है। मेरे प्रथम भाग पर निर्मित गौरवशाली प्रवेश द्वार सूर्योदय की लालिमा, अंबर की नीलिमा और खेतों की मखमली हरियाली के कारण अपनी सुंदरता की अनुपम छटा बिखेरता है। मुख्य द्वार के ऊपर बना अशोक स्तंभ, द्वार के एक ओर उकेरी भारतीय संविधान प्रस्तावना और दूसरी ओर अंकित गांव की विकास गाथा देश के कोने कोने में ग्रामीण विकास की गाथा को पहुंचा रहे हैं। आज मुख्य द्वार हजारों युवाओं को गांव विकास में सहभागी बनने और अपने गांव के विकास का नया इतिहास लिखने की प्रेरणा दे रहा है।

प्रेम रावत
स्मार्ट विलेज धनौरा

14 बदलाव की कहानी-लोगों की जुबानी

दलपुरा विकास समिति के ग्राम विकास की ओर बढ़ते कदम

ग्रामीण भारत के विकास के सपने को साकार करने के लिए सरकारों एवं स्थानीय प्रशासन के साथ-साथ आमजन की सहभागिता का होना अत्यंत आवश्यक है। जन सहभागिता से किसी भी मुश्किल से मुश्किल समस्या को हल किया जा सकता है। गांवों में या तो भौतिक संसाधनों की उपलब्धता नगण्य है या फिर वर्तमान दौर के अनुकूल नहीं हैं। लेकिन युवाओं की विकासोन्मुखी सोच अपने गांवों की दशा और दिशा बदलने के साथ-साथ लोगों की सोच को परिमार्जित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। गांव में सकारात्मक एवं सौहार्दपूर्ण माहौल कैसे बनाया जाए? गांव के युवाओं, बुजुर्गों एवं कर्मचारियों में अपने गांव के प्रति कर्त्तव्यबोध कैसे कराया जाए? अपने गांव में व्याप्त समस्याओं का निराकरण कैसे हो? अपने गांव के लोगों और अपनी माता-बहनों के जीवन को सुखी और आरामदायक कैसे बनाया जाए? बच्चों के शिक्षा के स्तर को कैसे सुधारा जाए? इन सब सवालों का जवाब ढूंढने के लिए करौली जिले के गांव दलपुरा के युवाओं ने दलपुरा विकास समिति का गठन किया। गांव विकास समिति के सदस्यों के रूप में गांव के जिम्मेदार युवा गांव विकास के निहितार्थ समय-समय पर बैठक कर मंथन करते हैं और नीतियों का निर्धारण करते हैं। दलपुरा विकास समिति के गठन, नीति निर्धारण एवं उनके क्रियान्वयन के विभिन्न चरणों का बिंदुवार विवरण निम्नानुसार है-

दलपुरा विकास समिति (DV) का गठन- गाँव के समग्र विकास के निमित्त दृढ़ संकल्पित एवं सकारात्मक ऊर्जा से लबरेज़ गांव के 25-30 युवाओं ने 28 अक्टूबर 2019 को सर्वप्रथम एक बैठक आयोजित कर दलपुरा विकास समिति (DV) के गठन का निर्णय लिया । सामाजिक, शैक्षिक, पर्यावरणीय सरोकारों एवं ग्रामीण विकास की दिशा में कदम बढ़ाती हुई सोच बदलो गांव बदलो टीम से प्रेरित गांव के युवाओं ने दलपुरा विकास समिति (DV) का गठन करके ग्राम विकास के कार्यों को व्यवस्थित और संगठित रूप से करने का प्रण लिया। समिति की प्रथम बैठक में ये तय किया गया कि DV द्वारा सर्वप्रथम गाँव विकास से संबंधित कुछ शुरुआती महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे सार्वजनिक स्थलों पर स्ट्रीट लाइट्स की व्यवस्था, सार्वजनिक कुंड की साफ-सफाई और उसमें पानी की व्यवस्था तथा स्कूल परिसर की रंगाई-पुताई एवं सौंदर्यीकरण के कार्य को प्राथमिकता देते हुए संपन्न किया जाएगा।

स्ट्रीट लाइट्स की व्यवस्था-गांव की गलियां, चौराहे एवं सार्वजनिक स्थल जैसे कि कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास, सरकारी स्कूल, उप स्वास्थ्य केंद्र, मंदिर, यज्ञशाला इत्यादि

प्रकाशमान हों। इसी उद्देश्य को अमलीजामा पहनाने के लिए युवाओं की टीम ने उक्त स्थानों पर स्ट्रीट लाइट्स लगाईं। गांव से अंधेरे को मिटाकर, गलियों को रोशनी से जगमग करके नव ऊर्जा और नव संकल्प को लिए युवाओं के दल ने अपनी मंशा साफ़ कर दी कि अब हमने गांव के विकास की पतवार निज हाथों में थाम ली है।

विद्यालय का सौंदर्यीकरण एवं विकास कार्य-किसी भी समाज एवं राष्ट्र के विकास के पैमानों में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। जिस समाज में शिक्षा का स्तर जितना उच्च होगा उस समाज की प्रगति उतनी ही तीव्र होगी।विकास के शिक्षा रूपी पहलू का महत्वपूर्ण अभिकरण होता है विद्यालय। विद्यालय का भौतिक वातावरण एवं संसाधनों की उपलब्धता विद्यालय की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को आवश्यक रूप से प्रभावित करती है। गांव के विद्यालय के भौतिक वातावरण को सुंदर बनाने के लिए जनवरी 2020 में दलपुरा विकास समिति ने पहल की। समिति के सदस्यों ने विद्यालय भवन के सौंदर्यीकरण हेतु रंग-रोगन किया। इसके साथ-साथ समिति के सदस्यों ने विद्यालय के प्राचार्य से विद्यालय में प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षण कार्य संपादित करने का अनुरोध करते हुए उन्हें हर संभव सहयोग करने का भरोसा भी दिलाया। विद्यार्थीयों को कंप्यूटर संबंधी मूलभूत ज्ञान हो, इस उद्देश्य से समिति ने विद्यालय को कंप्यूटर उपकरण भी भेंट करके सरकारी कार्यों में जनसहभागिता का उदाहरण पेश किया।

सार्वजनिक भवनों का जीर्णोद्धार एवं निर्माण कार्य-क्टै द्वारा पूर्व में किए गए निर्णय के अनुसार श्रमिक दिवस पर 1 मई 2020 से गांव के विद्यालय और मंदिर परिसर में स्थिति सभी सार्वजनिक भवनों के जीर्णोद्धार और सौंदर्यीकरण के कार्य को मिशन मोड के रूप में शुरू किया गया। समिति के प्रयासों, लगन एवं कठोर परिश्रम के फलस्वरूप सभी खंडहर भवन अल्प समय में ही एक बेहतर धरोहर के रूप में अस्तित्व में आ गए। इसके अतिरिक्त मई माह में और भी अन्य निर्माण एवं विकासात्मक कार्य विकास समिति के सौजन्य से किए गए।

इन निर्माण एवं सौंदर्यीकरण कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

1. गांव के पुराने विद्यालय भवन तथा संपूर्ण विद्यालय परिसर का रंग-रोगन तथा नयी रेलिंग लगाना ।
2. मंदिर तथा संपूर्ण परिसर का रंग-रोगन तथा नयी रेलिंग लगाना।
3. सार्वजनिक कुंड (स्विमिंग पूल) का रंग-रोगन व भवन की रेलिंग निर्माण,जाली-जंगले निर्माण ।
4. विद्यालय व मंदिर के सामने के मैदान का समतलीकरण ।
5. विद्यालय एवं मंदिर परिसर में लगे हुए सभी पेड़-पौधों की सुरक्षा हेतु परिसर की चारदीवारी की मरम्मत का कार्य।
6. यज्ञशाला, पूर्व रासमंडल भवन का संपूर्ण जीर्णोद्धार, रंगाई, पुताई तथा रेलिंग निर्माण ।
7. प्राचीन भवन परिसर (प्राइमरी स्कूल) का संपूर्ण जीर्णोद्धार, रंगाई, पुताई तथा रेलिंग निर्माण।
9. पेयजल के लिए नए कुंडे (वाटर टैंक) का निर्माण ।
10. पशु-पक्षियों के पेयजल हेतु छोटे कुंड का निर्माण।

ध्यातव्यः- इन समस्त भवनों को जनहित में बहुउद्देशीय भवनों के रूप में विकसित करने की समिति की योजना है, जिस पर भविष्य में अमल किया जाना है।

समिति की सोच और निकट भविष्य योजना-देश में सकारात्मक बदलाव तभी संभव है जब हम इसकी शुरुआत अपने परिवार से करें और अपने गांव से करें। समिति का मूल-मंत्र है कि हम बदलेंगे तो सब बदलेंगे। समिति का संकल्प है कि दलपुरा गाँव को शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सद्भाव से परिपूर्ण एक आदर्श गाँव के रूप में परिवर्तित करके ही रहेंगे। समिति के सदस्यों का ध्येय है कि गाँव की जिस मिट्टी में बचपन गुजरा है उस मिट्टी के ऋण को चुकाने के लिए अपनी मातृभूमि के समुचित विकास के प्रति हमारा सामाजिक एवं नैतिक दायित्व है। गाँव की बदलती तस्वीर सभी को सुखद अहसास देने वाली है। निकट भविष्य में समिति अपने पर्यावरणीय दायित्वों के निमित्त सभी सार्वजानिक स्थलों पर वृक्षारोपण के कार्य को अंजाम देने के लिए प्रतिबद्ध है तथा गाँव के आँगनबाड़ी केंद्र,उप स्वास्थ्य केंद्र,कोआपरेटिव सोसायटी भवन आदि को बेहतर बनाने के लिए प्रशासन के साथ मिलकर कार्य करेगी। समिति का प्रयास है कि गाँव की सूरत बदले और दलपुरा एक आदर्श गांव के तौर पर उभरे जिसमें अच्छी शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, बिजली, पानी जैसी मूलभूत आवश्यक सुविधाएं हों, और सभी गाँववासियो में आपसी सद्भाव, प्रेम और भाईचारे की भावना विकसित हो। समाज के शैक्षिक व सामाजिक रूप से पिछड़े भाई-बंधुओं के शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार हो ताकि वे आत्मसम्मान के साथ अपना जीवन जी सकें।

समिति के आदर्श-सामूहिकता, आपसी सहयोग, त्याग भावना,सकारात्मक सोच,सामाजिक सद्भाव और भाईचारा, जो असहाय हैं उनकी सेवा ही असली मानवता है।

श्री सुभाष चंद्र मीना
अध्यक्ष
दलपुरा विकास समिति(DV)

राजस्थान पत्रिका 25.09.2020

मिसाल बनी नौजवान युवाओं की पहल, बदल डाली दलपुरा की सूरत

पत्रिका
ग्राउंड रिपोर्ट

युवाओं की मेहनत से गांव में हुए कई कार्य

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

गुढ़ाचन्द्रजी. 'साथी हाथ बटाना, एक अकेला थक जाएगा...' गीत के बोल दलपुरा गांव के युवाओं पर सटीक साबित हो रहे हैं। युवा अपने गांव की दशा सुधारने में लगे हैं। सोशल मीडिया पर दलपुरा विकास समिति नाम से ग्रुप बनाकर नौजवाने ने जबरदस्त काम किया है। इनकी मेहनत इलाके में मिसाल बन चुकी है। दलपुरा विकास समिति सदस्य व आयकर अधिकारी राजेन्द्र मीना ने बताया कि अधिकांश युवा सरकारी सेवाओं में हैं। दो साल पहले उन्होंने सोशल मीडिया पर ग्रुप बनाया गया। इसमें गांव के पूर्व विधायक बत्तीलाल मीना, वित्त मंत्रालय में निदेशक सुभाष चंद मीना, नीमराणा पुलिस उपाधीक्षक लोकेश मीना, नगर के उपखण्ड अधिकारी विजेन्द्र मीना व बहरोड़ के उपखण्ड अधिकारी संतोष मीना, सवाईमाधोपुर जिला परिवहन अधिकारी महेश चंद मीना सहित कई कर्मचारियों, युवाओं और प्रबुद्धजन शामिल हैं।

गुढ़ावन्द्रजी. दलपुरा गांव में प्राचीन कुण्ड के जीर्णोद्धार के बाद आया निखार।

गुढ़ावन्द्रजी. दलपुरा गांव में स्कूल और विकसित किया गया पार्क।

मेहनत से किया कायापलट

युवाओं ने पहल करते हुए पहाड़ की तलहटी में बनी यज्ञशाला, प्राथमिक विद्यालय, सीनियर माध्यमिक विद्यालय, संस्कृत प्राथमिक व राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, बालाजी का मंदिर, प्राचीन कुण्ड सहित अनेक सार्वजनिक व सरकारी भवनों की साफ-सफाई और मरम्मत के साथ रंगाई-पुताई का कार्य कराया। इससे भवनों की दशा सुधरी और गांव में विकास दिखने लगा है। सभी सार्वजनिक भवन पहाड़ी की तलहटी और एक स्थान पर हैं। इससे विकास की चमक दिखती है।

शहरों जैसी सुविधाएं....

समिति ने विद्यालय में कम्प्यूटर उपकरण, प्रिन्टर लगवाए हैं। बालाजी मंदिर परिसर में पेयजल टंकी का निर्माण करवाने के साथ प्राचीन कुण्ड का जीर्णोद्धार करवाया गया है। गांव के रास्तों, प्रमुख चौराहे सहित हनुमान मंदिर, यज्ञशाला और अन्य स्थानों पर रोड लाइट लगाई गई हैं। प्रशासनिक अधिकारियों सहित व्याख्याता रामदयाल मीना, कालेज व्याख्याता चंद्रशेखर मीना ग्राम विकास अधिकारी हरकेश राव, रामभरोसी मीना, कुलदीप मीना,गणेश मीना सहित गांव के सैकड़ों युवा अथक प्रयास कर रहे हैं।

स्वास्थ्य और बालिका शिक्षा पर जोर

वित्त मंत्रालय के निदेशक सुभाष मीना का कहना है कि बचपन से गांव के प्रति हमारा गहरा रिश्ता है। इसलिए समिति सकारात्मक बदलाव के लिए प्रयत्नशील है। समिति ने संकल्प लिया है कि गांव शिक्षित, स्वास्थ्य और सामाजिक सद्भावना से परिपूर्ण हो। गांव को धूम्रपान से मुक्ति दिलाना व बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता पैदा करने का लक्ष्य है। तम्बाकू मुक्त होने से ग्रामीणों को कई बीमारियों से छुटकारा मिलेगा। उन्होंने बताया कि गांव के विकास के साथ असहाय, गरीब लोगों की मदद की मुहिम भी चलाने की समिति की योजना है।

दो हजार पौधों का होगा पार्क

लोगों ने यज्ञशाला के समीप खाली स्थान सहित सीनियर विद्यालय, यज्ञशाला, पुलिस चौकी, बालाजी मंदिर, प्राथमिक विद्यालय के आसपास विभिन्न किस्मों के दो हजार पौधे लगाए हैं। यज्ञशाला के समीप खाली जमीन में पार्क विकसित किया जा रहा है। पौधों में पानी देने सहित पार्क को विकसित करने में गणेश पटेल सहित अन्य युवाओं का विशेष योगदान है। तलहटी में हरियाली मन मोह लेती है।

ii सकारात्मक विचारधारा से रचनात्मक बदलाव SBGBT का मिशन मासलपुर एरिया

सोच बदलो-गांव बदलो टीम के मार्गदर्शन में मासलपुर के गांवों में सकारात्मक विचारधारा से रचनात्मक बदलाव के लिए सोच बदलो-गांव बदलो टीम, युवा विकास समिति मासलपुर के सहयोग से जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसके बेहतर परिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। मासलपुर के गांवों में जन भागीदारी से कई मूलभूत समस्याओं के समाधान की कार्यवाही के साथ विकास के प्रति सकारात्मक विचारधारा के चलते गांवों की दशा में बदलाव आया है। इसके साथ-साथ युवाओं की टीम द्वारा मासलपुर के गांवों में आम लोगों को भी जागरूक करने के लिए अभियान चलाया जा रहा है।

गौरतलब है कि मासलपुर क्षेत्र में 9 अप्रैल 2018 को सोच बदलो-गांव बदलो टीम के सक्रिय कार्यकर्ताओं एवं युवाओं के प्रयासों से युवा विकास समिति का गठन किया गया था । मासलपुर के गांवों में राजनीतिक सरोकार से दूर रहते हुए सकारात्मक विचारधारा से जुडे सरकारी कार्मिकों, उद्यमियों के साथ स्वच्छ छवि के लोगों का समूह बनाकर गांव केविकास की शुरूआत की जा रही है। मासलपुर सहित बडापुरा, भावली, दिमनपुरा, कसारा, रूँधपुरा, धौरियानपुरा, रतियापुरा, रौहर, गादौली एवं मैंगरा सहित कई गांवों में गठित युवा विकास समिति द्वारा गांवों को अतिक्रमण मुक्त कर रास्तों को चौड़े कराने का कार्य कराया है। विद्यालयों की चारदीवारी एवं पेयजल की समुचित व्यवस्था के कदम उठाए गए हैं। गांवों की समस्याओं को क्रमबद्ध तरीके से निराकरण की कार्यवाही के अच्छे परिणाम दिख रहे हैं।

सोच बदलो-गांव बदलो टीम का मानना है कि गांवों में लोगों का विश्वास जीतना एक चुनौती है इसके लिए युवाओं द्वारा गठित टीम के सदस्यों को सकारात्मक विचारधारा के साथ विनम्रता का पालन किया जाना चाहिए। गांवों की समस्याओं को लेकर लोगों में सहमति बनाकर निराकरण की कार्यवाही के साथ सरकारी स्कूलों की स्थिति में सुधार,बच्चों की शिक्षण व्यवस्था,कठिन विषयों के लिए अतिरिक्त शिक्षकों की व्यवस्था, सरकारी विद्यालयों में समतलीकरण, चारदीवारी और पुताई जैसे कार्य,स्कूल में जन सहभागिता से बिजली, पानी, बोर्ड, पंखा, फर्नीचर और कंप्यूटर की व्यवस्था में टीम के सदस्य जुटे हुए हैं। सरकारी स्कूल के बच्चों को प्रोत्साहन के लिए पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित करने के साथ-साथ सार्वजनिक स्थानों की सफ़ाई, गांव में वृक्षारोपण, जल संरक्षण के लिए कार्य करने की आवश्यकता है। प्रारंभिक कार्यों की सफलता के बाद,गांव में अपेक्षाकृत बड़े कार्य जैसे कि गांव की खस्ताहाल सड़कों को सुधरवाना, पानी की व्यवस्था करवाना, गांव में रास्तों से अतिक्रमण हटवाना, लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना, लोगों को मनरेगा के तहत रोजगार सुनिश्चित करवाना, मनरेगा के माध्यम से पर्यावरण/जल संरक्षण व संवर्धन के प्रयास करना,उचित मूल्य व समय पर राशन दिलवाना,विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे फ़सल बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, पशुधन बीमा योजना, मुद्रा बैंक योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, श्रमिक कार्ड योजना, भामाशाह योजना सहित अन्य कई उपयोगी सरकारी योजनाओं के लाभ गांव के लोगों को दिलवाने के प्रयासों को लेकर गांवों में जागरूकता अभियान चलाने की मुहिम शुरू की गई हैं। सकारात्मक पहल के द्वारा युवा अपने गांव में लोगों को आधारभूत सुविधाएं दिलवाकर एक बेहतर जीवन दे सकते हैं। गांवों में रचनात्मक बदलाव की मुहिम में बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक हर व्यक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है लेकिन बुजुर्गों का अनुभव और युवाओं की ऊर्जा और आधुनिक तकनीक की समझ से गांवों में बहुत बड़ा बदलाव लाने के लिए जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है।

डिजीटल तकनीकी की उपयोगिता एवं युवाओं की भागीदारी:- सोच बदलो गांव बदलो टीम का यह मानना है की लोगों में जन-जागरूकता और विकास के लिए जन-चेतना पैदा

करनी होगी और लोगों को विकास में सक्रिय भागीदारी निभानी होगी । इसके लिए सबसे बड़ी ज़रूरत है कि हमारे देश के वर्तमान और भविष्य कहे जाने वाली हमारी युवा पीढ़ी आगे आए और अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्य में लगाएं। सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने जागरूकता की इस मुहिम को धरातल पर अंजाम दिया । मासलपुर क्षेत्र के युवाओं ने अपने गांवों की समस्यायों (सड़क, बिजली पानी, चिकित्सा और शिक्षा) को डिजीटल तकनीकी का उपयोग कर सरकारी संपर्क पोर्टल, आरटीआई, सीपी ग्राम जैसे टूल्स के माध्यम से समाधान किया जिसके परिणामस्वरूप गांव के लोगों को मूलभूत सुविधाओं का इज़ाफा और सरकारी योजनाओं का लाभ मिलने लगा।

प्रयासों की सफलता पर एक नजर :-

(१) "कौन कहता है कि आसमां में छेद नहीं हो सकता, ज़रा एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो" इस कहावत को सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मनीराम मीना ने ज़मीनी धरातल पर सिद्ध कर दिखाया। करौली ज़िला के डाँग क्षेत्र मासलपुर क्षेत्र में लोगों का एकमात्र व्यवसाय खनन कार्य है इसलिए यहां सभी गांवों में बिना उपचार और जानकारी के अभाव में टीबी या सिलिकोसिस की बीमारी से कम से कम एक व्यक्ति हर वर्ष गुज़र जाता है इसके बाद ऐसे परिवारों में गरीबी के कारण बच्चों की पढ़ाई-लिखाई नहीं हो पाती है। ऐसे परिवार गरीबी और अभाव के कारण क़र्ज़ के बोझ तले भी दबते जाते हैं इस प्रकार के असामयिक हादसों से ऐसे परिवारों को एक भयावह और गंभीर मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। ऐसे परिवार अशिक्षा और जागरूकता के अभाव में सरकार की तरफ़ से मिलने वाली सुविधाओं और उपचारों का भी लाभ नहीं उठा पाते हैं। इन सब परिस्थितियों को देखते हुए मासलपुर क्षेत्र के सोच बदलो गांव-बदलो टीम के कर्मठ कार्यकर्ता बड़ापुरा निवासी श्री मनीराम मीना ने करौली ज़िले में सिलिकोसिस मरीजों के हक़ को दिलाने का बीड़ा उठाया। इनके द्वारा पिछले 3 सालों में RTI, मीडिया और जन प्रतिनिधियों के ज़रिए करौली ज़िला के सिलिकोसिस मरीजों के लिए लगातार आवाज़ उठवाई, जिसका परिणाम यह है कि करौली ज़िला को सर्वाधिक 11 करोड़ की राशि आवंटित हुई। इसके अलावा उक्त कार्यकर्ता सिलिकोसिस मरीजों के आनलाइन रजिस्ट्रेशन संबंधी संपूर्ण प्रकिया को समय-समय पर मासलपुर क्षेत्र के युवाओं को जागरूक करते रहते हैं। सिलिकोसिस से ग्रसित खनन मजदूरों को सहायता राशि दिलाने के लिए सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने समय-समय पर अखबारों,न्यूज़ चैनलों, ट्विटर, ईमेल और RTI के ज़रिए लगातार प्रयास किया। इस मिशन में राज्य भर से कई मजदूर संगठन भी लगे हुए थे। हम सबके संयुक्त प्रयासों से राज्य सरकार ने २२ सितंबर २०१९ को सिलिकोसिस मरीजों के लिए बनने वाली नीति को मंजूरी दी। सरकार का यह कदम निश्चित रूपसे सिलिकोसिस मरीजों के लिए एक वरदान साबित होगा।

(२) सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मनीराम मीना के लगातार प्रयासों से बड़ापुरा स्टैंड से दिमनपुरा वाया खेड़ा रोड सड़क लिए ६६ लाख रुपये स्वीकृत हुए। श्री मनीराम मीना द्वारा राजस्थान संपर्क पोर्टल,सीपीग्राम पोर्टल,च्ड८ पोर्टल पर लगातार अहनलाईन शिकायतें दर्ज़ कराई गईं और अहनलाइन त्ज् से फहलोअप लिया गया। पहले राजस्थान सरकार के अहनलाइन शिकायत पोर्टल राजस्थान संपर्क पर कई अहनलाइन शिकायतें दर्ज़ की गईं। इन शिकायतों के फलस्वरूप च्क विभाग ने बड़ापुरा से दिमनपुरा वाया खेड़ा रोड के प्रपोजल उच्च स्तर पर स्वीकृति के लिए कई बार प्रस्ताव भेजे लेकिन बार-बार बजट के अभाव के कारण स्वीकृत नहीं हो पाए इसके बाद भी इन युवाओं ने हिम्मत नहीं हारी फ़िर केंद्र सरकार के ऑनलाइन शिकायत पोर्टल सीपीग्राम पोर्टल एवं प्रधानमंत्री कार्यालय के PM पोर्टल पर कई अहनलाइन शिकायतें दर्ज़ कीं। फ़िर समय-समय पर इन शिकायतों की विभागीय कार्यवाही के बारे में जानने के लिए ऑनलाइन RTI लगाई गई। अंततः साढ़े तीन सालों के लगातार प्रयासों के परिणाम स्वरूप उक्त सड़क के लिए 66 लाख रुपये स्वीकृत हो गए।

(३) मासलपुर क्षेत्र के डांग क्षेत्र में पत्थर के व्यवसाय की असीम संभावनाएं छिपी हुई थीं । मासलपुर क्षेत्र के सोच बदलो गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं ने स्थानीय लोगों को रोजगार दिलाने और पत्थर व्यवसाय के लिए डिजीटल तकनीकी (संपर्क पोर्टल और आरटीआई) के सतत प्रयासों से रीको स्टोनमार्ट की 54 करोड़ की प्रशासनिक एवं वितीय स्वीकृति - तकनीकी स्वीकृति जारी करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । मासलपुर तहसील में रीको स्टोनमार्ट से क्षेत्र के पत्थर व्यवसायियों को रोजगार मिलेगा और रीको क्षेत्र के विकसित होने के बाद मासलपुर तहसील क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन होंगे ।इस प्रकार मासलपुर क्षेत्र के सक्रिय कार्यकर्ता मनीराम मीना और संजय मीना के अथक प्रयास मासलपुर के विकास में मील का पत्थर साबित होंगे ।

(४) युवाओं की डिजीटल तकनीकी (राजस्थान संपर्क पोर्टल, आरटीआई और मीडिया के कवरेज) के जरिए और सतत प्रयासों के परिणामस्वरूप करौली मासलपुर रोड से नारायणा तक लिंक रोड निर्माण के लिए 80 लाख की स्वीकृति मिली है जिसका निर्माण कार्य शीघ्र शुरू किया जाएगा। मासलपुर क्षेत्र के गांव रोहर और नारायण में जर्जर और बदहाल सड़क होने के कारण ग्रामीणों को आवागमन में काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था । युवा विकास समिति के कर्मठ कार्यकर्ता संजय कुमार मीना उक्त सड़क के निर्माण के लिए २०१७ से प्रयास कर रहे थे जिसके फलस्वरूप २०२० में सड़क निर्माण के लिए 80 की स्वीकृति मिली है जिससे जल्द ही सड़क निर्माण कार्य शुरू किया जाएगा। जिससे आस पास के गांवों के लोगों को आ रही आवागमन की समस्या से निजात मिल सकेगी। जनजागरूकता और जनसहभागिता ग्रामीण विकास का मूल आधार है। इसी विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए मासलपुर क्षेत्र के युवाओं और स्थानीय लोगों की जागरूकता, सक्रियता और जनप्रतिनिधियों से बेहतर तालमेल से धीरे-धीरे डांग क्षेत्र मासलपुर के विकास में पंख लगने लगे। मासलपुर क्षेत्र के SBGBT के कार्यकर्ता विधायक महोदय से तालमेल बिठाकर बहुत ही बेहतरीन तरीक़े से कार्य को अंजाम देते हैं जिसके परिणामस्वरूप निम्नलिखित जनहित के कार्यों में सफलता मिली।

(i) मासलपुर डांग क्षेत्र जिला मुख्यालय से ३५ किमी दूर है लेकिन इसके आस-पास कई ग्राम पंचायतें ७० किमी दूर थीं। यह क्षेत्र करौली ज़िले का एक दुर्गम डाँग क्षेत्र,शैक्षणिक पिछड़ापन और आवागमन के साधनों की कमी जैसी अनेकानेक समस्याओं से ग्रसित क्षेत्र है। इन्हीं परिस्थितियों की वजहों से क्षेत्र के लोग पिछले २ दशकों से मासलपुर को पंचायत समिति बनवाने की पुरजोर मांग कर रहे थे । सोच बदलो गांव बदलो टीम के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने इस मुद्दे को सोशल मीडिया, स्थानीय लोगों के ज़रिए ज्ञापन और मीडिया के जरिए हर एक चैनल पर लगातार उठाया जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय जनप्रतिनिधियों के विशेष सहयोग से राज्य सरकार ने मासलपुर को पंचायत समिति का दर्ज़ा दिए जाने की अधिसूचना जारी कर दी।

(ii) मासलपुर में राजकीय महाविद्यालय खुलना डांग क्षेत्र में शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए और बालिकाओं की शिक्षा के लिए एक क्रांतिकारी कदम साबित होगा । सोच बदलो गांव बदलो टीम युवा विकास समिति, मासलपुर की तरफ के कर्मठ युवा सदस्यों के द्वारा पहली बार दिसंबर २०१७ से मासलपुर में कॉलेज की मांग रखी थी तब से युवा कार्यकर्ता हर एक मंच पर इस महत्वपूर्ण मुद्दे को उठा रहे थे। पिछले साल पहले विधानसभा सत्र में भी और अभी इस साल के दूसरे सत्र में इस कॉलेज की मांग को युवा विकास समिति की तरफ से विधायक महोदय को उचित समय पर अवगत करा दिया गया और स्थानीय विधायक के द्वारा कॉलेज की महत्वपूर्ण मांग को विधानसभा में और मुख्यमंत्री के समक्ष दोनों सालों के विधानसभा सत्रों में जोर शोर से उठाया गया जिसके परिणामस्वरूप मासलपुर डांग क्षेत्र को राज्य सरकार द्वारा राजकीय महाविद्यालय की सौगात दी।

सोच बदलो-गांव बदलो

उत्थान

सामाजिक परिवर्तन का सार्थक प्रयास

सोच बदलो-गांव बदलो टीम का मानना है कि ग्रामीण विकास के सपने को यदि साकार करना है तो सरकार के प्रयासों को हमें ताकत देने की ज़रूरत है। लोगों में जन-जागरूकता और विकास के लिए जन-चेतना पैदा करनी होगी। लोगों को विकास में सक्रिय भागीदारी निभानी होगी। इसके लिए सबसे बड़ी ज़रूरत है कि हमारे देश के वर्तमान और भविष्य कही जाने वाली हमारी युवा पीढ़ी आगे आए और अपनी ऊर्जा को सकारात्मक व रचनात्मक कार्यों में लगाए। इस देश की एकमात्र आशा की किरण हमारी युवा पीढ़ी ही है जो विकास कार्यों को तेजी देकर अभूतपूर्व बदलाव ला सकती है और जन-चेतना और जन-जागरूकता द्वारा देश को उन्नति के रास्ते पर ला सकती है।

संपादक टीम और
सोच बदलो-गांव बदलो टीम!!

06:21 बजे • सूर्योदय कल सुबह 06:12 बजे SUNDAY राजस्थान पत्रिका करौली, रविवार, 22 सितम्बर, 2019 तापमान ▲ 27°

सरकार ने स्वीकृत किए 11 करोड़, सिसकती जिंदगियों को मिलेगा संबल

सिलिकोसिस पीड़ितों के लिए राहत की खबर

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

करौली. लम्बे समय से सरकारी सहायता का इंतजार कर रहे जिले के सिलिकोसिस पीड़ितों के लिए राहतभरी खबर आई है। मुख्यमंत्री द्वारा जिले के सिलिकोसिस पीड़ितों के लिए 11 करोड़ रुपए की राशि स्वीकृत की गई है। इससे सिसकती जिंदगियों को संबल मिल सकेगा। हालांकि इस राशि से सभी सिलीकोसिस पीड़ितों के लिए लंबित सहायता प्रकरण पूरे नहीं हो पाएंगे। गौरतलब है कि सरकार की ओर से सिलीकोसिस पीड़ित को 2 लाख रुपए की आर्थिक सहायता तथा इस रोग से मृतकों के परिजनों को 3 लाख रुपए की सहायता उपलब्ध कराने का प्रावधान है। लेकिन लम्बे समय से जिले में बजट के अभाव में पीड़ितों को सहायता राशि नहीं मिल पा रही थी और वे व उनके परिजन आए दिन कार्यालयों के चक्कर काटने को मजबूर थे। अब 11 करोड़ रुपए मिलने से काफी हद तक लंबित प्रकरणों का निस्तारण हो सकेगा।

तीन वर्ष से था बजट का इंतजार

विभागीय सूत्र बताते हैं कि वर्ष 2016-17 से राज्य सरकार से सिलिकोसिस पीड़ितों के लिए बजट ही नहीं मिला। श्रम विभाग व खनन विभाग की ओर से सिलिकोसिस पीड़ितों को सहायता दी जाती है। लेकिन बजट नहीं मिलने से लंबित पत्रावलियों की संख्या में इजाफा होता गया। वर्तमान में भी कलक्टेट में सहायता के लिए करीब 1300-1350 सिलिकोसिस पीड़ितों की पत्रावलियां लंबित चल रही हैं। जिला प्रशासन की ओर से कई बार राज्य सरकार को पत्र भेजकर बजट की मांग की गई। अब जाकर जिले को यह राशि मिली है। सूत्र बताते हैं कि इससे पहले बीच में दो बार खनन विभाग के डीएमएफटी फण्ड से कुछ पीड़ितों और उनके परिजनों को सहायता राशि दी गई थी।

नहीं मिल पाते सुरक्षा संसाधन

जिले के कई इलाकों में पत्थर खनन कार्य होता है, जिन पर हजारों श्रमिक कार्य करते हैं। इन पत्थर खदानों पर हजारों श्रमिक कार्य करते हैं, लेकिन खदानों में श्रमिकों की सुरक्षा की अनदेखी ही की जाती है। ना तो उन्हें पर्याप्त मात्रा में मास्क मिल पाते हैं और ना ही उन्हें सुरक्षित कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। ऐसे में कार्य के दौरान पत्थरों से निकलने वाले डस्ट (धूल) उनके शरीर में अन्दर जमा होती रहती है, जिससे वे रोग की चपेट में आ जाते हैं। गौरतलब है कि जिले के लांगरा, मासलपुर, कुड़गांव, हिण्डौन, मण्डरायल आदि इलाकों में विशेष रूप से खनन कार्य होता है।

पीड़ितों को मिलेगी बड़ी राहत

सिलिकोसिस पीड़ितों के लिए सहायता राशि बजट के लिए हमने लगातार राज्य सरकार को पत्र लिखे हैं। यदि 11 करोड़ रुपए मिले हैं तो इससे बड़ी राहत मिलेगी। इससे लंबित पत्रावलियों का 80-85 फीसदी तक निस्तारण हो सकेगा। शेष रहने वाले प्रकरणों के लिए और बजट को पत्र लिखा जाएगा।

नन्नूमल पहाडिया, जिला कलक्टर, करौली

सड़क के लिए 66 लाख रुपए स्वीकृत

मासलपुर @ पत्रिका. राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण बैंक नाबार्ड के रूरल इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड से मासलपुर-खेड़ा से बड़ापुरा बस स्टैण्ड वाया दिमनपुरा सड़क के लिए 66 लाख रुपए स्वीकृत किए गए हैं। गौरतलब है कि सड़क निर्माण के लिए बड़ापुरा गांव के जागरूक युवक आरटीआई कार्यकर्ता मनीराम मीणा की मुहिम रंग लाई। मनीराम मीणा सड़क निर्माण के लिए आरटीआई एवं संपर्क पोर्टल पर प्रयासरत थे। सड़क निर्माण के लिए राशि स्वीकृत होने पर ग्रामीणों में खुशी है। उल्लेखनीय है कि मीणा और उनके साथियों के प्रयासों से दो वर्ष पूर्व छैंडकापुरा, बड़ापुरा व दिमनपुरा गावों को को राज्य सरकार ने राजस्व गांव का दर्जा दिया था।

पत्रिका Sat, 28 March 2020 epaper.patrika.com/c/50393519

नई नीति से सिलिकोसिस पीड़ितों को मिलेगी राहत

करौली @ पत्रिका. राज्य सरकार की ओर से सिलिकोसिस को लेकर जारी की गई नई नीति से जिले में करीब पांच हजार सिलिकोसिस पीड़ितों को राहत मिल सकेगी। जिले में खनन मजदूरों की संख्या हजारों में है। परिवार का पालन पोषण करने की खातिर खनन क्षेत्रों में कार्य के दौरान अधिकांश श्रमिक सिलिकोसिस की चपेट में आ जाते हैं। ऐसे श्रमिकों और उनके आश्रितों के लिए सरकार की नई नीति से अनेक लाभ मिल सकेंगे। नई नीति में दिव्यांगजनों की भांति सिलिकोसिस पीड़ित भी राज्य सरकार की योजनाओं-सुविधाओं से लाभान्वित होंगे। नई नीति में पुर्नवास की व्यवस्था की भी बात कही गई है, जिससे ऐसे परिवार परेशानी से बच सकेंगे। न्युमोकोनिओसिस के नाम से जारी नई नीति में ऐसे पीड़ितों को लाभान्वित करने के लिए पृथक से फण्ड बनाया गया है जिससे लाभान्वित होने वाले के लिए बजट की कमी महसूस नहीं होगी। सिलिकोसिस रोग की रोकथाम को लेकर खनन मालिकों द्वारा सुरक्षा के आवश्यक संसाधन जुटाने होंगे। नियोक्ताओं के लिए कठोर कानून बनेगा। अब नई नीति के तहत सिलिकोसिस पीड़ित व्यक्ति को तीन लाख रुपए और मृतक के परिजनों को 2 लाख रुपए मिलेंगे। इसके अलावा इस रोग से पीड़ित व्यक्ति की मृत्यु होने पर तत्काल राहत बतौर राज्य सरकार की ओर से 10 हजार रुपए की सहायता दी जाएगी। सिलिकोसिस के क्षेत्र में कार्य कर रहे डांग विकास संस्थान के निदेशक विकास भारद्वाज के अनुसार नई नीति श्रमिकों के लिए राहत प्रदान करने वाली है। भारद्वाज ने गुरुवार को जयपुर में मुख्यमंत्री द्वारा नई पॉलिसी जारी करने के मौके पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेकर क्षेत्र के खनन श्रमिकों की पीड़ा और उनकी आवश्यकताओं पर प्रकाश भी डाला।

इनको भी मिलेगा लाभ: खनन, क्रेशर मशीनों से कार्य के दौरान उड़ने वाली धूल से ना केवल श्रमिक ही रोग की चपेट में आते हैं, बल्कि आसपास इलाके के लोग भी रोग की चपेट में आ जाते हैं। दूसरा इलाके में रह रहे लोग डस्ट एक्सपोजर से प्रभावित होकर प्रमाणित होते हैं, चाहे श्रमिक न हों उनके लिए भी लाभ होगा।

07:12 बजे • सूर्योदय कल सुबह 05:41 बजे Weekend राजस्थान पत्रिका • करौली, शनिवार, 15 जू

सिलिकोसिस पीड़ितों को समय पर मिलती सहायता ना होती जांच

मर्ज पर भारी उपचार का दर्द

नियमों में जकड़ी सिसकती जिंदगियां

दिनेश शर्मा
patrika.com

करौली. सिलिकोसिस बीमारी से सिसकती जिंदगियों को सहारा देने की खातिर भले ही सरकार ने सहायता राशि में इजाफा कर दिया हो, लेकिन जांच की धीमी चाल इस जानलेवा बीमारी से पीड़ित रोगियों को भारी पड़ रही है। जांच-उपचार की रेंगती प्रक्रिया के चलते अनेक मरीज तो उपचार से पहले ही दुनिया से अलविदा हो जाते हैं। जांच-उपचार की जटिल प्रक्रिया रोग से पीड़ित व्यक्ति को सिसकने को मजबूर कर रही है। इस सबके चलते ना रोगियों को समय पर उपचार मिल पाता है और ना ही सहायता राशि। गौरतलब है कि करौली जिले में सैण्ड स्टोन और सिलिका की खदानें हैं, जिन पर हजारों लोग काम करते हैं, लेकिन उन्हें नहीं पता होता कि परिवार का भरण-पोषण करने की जुगत में वे बिना सुरक्षा संसाधनों के खुद की जान को जोखिम में डाल रहे हैं। सुरक्षा संसाधनों के बिना हजारों मजदूर सिलिकोसिस की चपेट में आ चुके हैं। जानकारों के अनुसार खदानों पर उड़ने वाली धूल [illegible] श्वांस के साथ अंदर जाने से पत्[illegible] के कण फेफड़ों में जमा होते [illegible] जिससे सिलिकोसिस की बीमा[illegible] उनको घेर लेती है। ऐसे मजदूरों [illegible] संख्या हजारों में है।

करौली. जिला उपक्षय रोग निवारण केन्द्र पर जांच के लिए आए लोग।

5800 से अधिक ने कराया पंजीयन

करीब 10 माह पहले से सिलिकोसिस के संभावित मरीजों की जांच के लिए पंजीयन ऑन लाइन शुरू किए गए थे। इस अवधि के दौरान 5800 से अधिक रोगियों ने जांच के लिए पंजीयन कराया है। विभागीय प्रक्रिया के अनुसार सिलिकोसिस बीमारी का सत्यापन चिकित्सकों के बोर्ड द्वारा किया जाता है जिसके लिए बैठक होती है। लेकिन पर्याप्त संख्या में रोगियों की जांच नहीं हो पाती। ऐसे में मरीजों की जांच की गति तो धीमी है जबकि संभावित मरीजों के पंजीयन की संख्या लगातार बढ़ रही है। नतीजतन सिलिकोसिस की गंभीर बीमारी की जकड़ में आ रहे पत्थर श्रमिकों की जांच में देरी का सिलसिला चल रहा है। इस स्थिति के बावजूद सिलिकोसिस मरीजों के जांच कार्य में [illegible] स्वास्थ्य विभाग गंभीर नहीं है।

आंकड़ों में पंजीयन

सिलिकोसिस पीड़ितों को सरकारी सहायता की कितनी मलहम लग पाती है, उसकी सच्चाई आंकड़ें बयां करते हैं। मासलपुर क्षेत्र के सामाजिक व आरटीआई कार्यकर्ता मनीराम मीना ने बताया कि वर्तमान में करीब 5873 जनों ने ऑनलाइन पंजीयन कराया। [illegible] लेवल पर स्क्रीनिंग के 1292 केस लंबित हैं, वहीं मेडिकल बोर्ड से 1548 केस स्क्रीनिंग के लिए लंबित पड़े हैं। शेष भी प्रक्रियाधीन है। विभागीय सूत्रों के अनुसार इनमें से 256 जनों के प्रमाण पत्र बन चुके हैं। गौरतलब है कि सिलिकोसिस के बोर्ड द्वारा प्रमाणित किए जाने पर मरीज को 2 लाख रुपए नकद दिया जाता है और मृत्यु होने पर परिजन को 3 लाख की सहायता मिलती है। इस सबके बावजूद ना चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग गंभीर है और ना ही जिला प्रशासन के अधिकारी इस ओर ध्यान दे रहे।

इन इलाकों में खनन

जिले के लांगरा, मासलपुर, कुड़गांव, हिण्डौन, मण्डरायल आदि इलाकों में विशेष रूप से खनन कार्य होता है। इन पत्थर खदानों पर हजारों श्रमिक कार्य करते हैं, लेकिन खदानों में श्रमिकों की सुरक्षा की अनदेखी ही की जाती है। न तो उन्हें पर्याप्त मात्रा में मास्क मिल पाते हैं और ना ही उन्हें सुरक्षित कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। ऐसे में कार्य के दौरान पत्थरों से निकलने वाले डस्ट(धूल) उनके शरीर में अन्दर जमा होती रहती है, जिससे वे रोग की चपेट में आ जाते हैं।

जांच-सहायता में होती है देरी

सिलिकोसिस पीड़ितों को जांच और सहायता में देरी हो रही है। जांच के इंतजार में ही कई पीड़ित दम तोड़ देते हैं। इस बारे में कलक्टर को ज्ञापन सौंपा गया था। करीब एक वर्ष से पीड़ितों को सहायता राशि नहीं मिली है। खनन क्षेत्र में सुरक्षा संसाधनों की भी अनदेखी की जा रही है।

विकास भारद्वाज, सचिव, डांग विकास संस्थान, करौली

जांच में तेजी के कर रहे प्रयास

जांच प्रक्रिया में तेजी लाने के पूरे प्रयास किए जा रहे हैं। समय पर उपचार और प्रमाण पत्र जारी हो, इसके लिए व्यवस्था की हुई है। हालाकि परेशानी यह है कि ऑनलाइन पंजीयन की संख्या काफी अधिक हुई है। 2774 जनों के आवेदन ही निरस्त हुए हैं।

डॉ. विजयसिंह मीना, जिला क्षय रोग अधिकारी, करौली

टोडाभीम ▪ सूरौठ ▪ श्रीमहावीरजी कस्बा शहर ▪ नादौती ▪ सपोटरा माघ कृष्ण पक्ष-अष्टमी, 2074

गुड न्यूज | विकास को लगेंगे पंख, पत्थर व्यवसायियों व शिल्प कारीगरों के साथ ग्रामीणों में खुशी की लहर, रोजगार बढ़ेगा

सात साल बाद स्टोनमार्ट विकसित करने के लिए 54 करोड़ स्वीकृत

भास्कर न्यूज | मासलपुर

कस्बे में स्टोनमार्ट को विकसित कराने के लिए पिछले दिनों भास्कर में प्रमुखता से खबर प्रकाशित होने के बाद मासलपुर डांग क्षेत्र के विकास के लिए सात साल पूर्व स्वीकृत स्टोनमार्ट के क्रियान्वयन की प्रक्रिया को अब पंख लगने की आस बनी है। राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास और निवेश निगम लिमिटेड जयपुर की ओर से स्टोनमार्ट के विकास के लिए 54 करोड़ रुपए की राशि स्वीकृत करने के आदेश जारी कर दिए है, जिससे स्टोनमार्ट के विकसित होने से क्षेत्र के पत्थर व्यवसायियों, शिल्प कारीगरों व ग्रामीणों को रोजगार की संभावना बनी है।

मासलपुर. कस्बे में स्टोनमार्ट के लिए आवंटित जमीन। यहां पर स्टोनमार्ट विकसित किया जाएगा।

गौरतलब है कि राज्य सरकार ने वर्ष 2010 -11 की बजट घोषणा में मासलपुर में स्टोन मार्ट स्थापित कराने की घोषणा की। इसके लिए भूमि का आवंटन करने के साथ किसानों की भूमि को अवाप्त कर उन्हें सरकार ने मुआवजा भी दे दिया है, लेकिन लगातार साढ़े चार साल तक स्टोनमार्ट पर्यावरण से मंजूरी नहीं मिलने से क्रियान्वयन नहीं हो सका। इसके लिए 26 अक्टूबर 15 में पर्यावरण विभाग के अधिकारियों ने मासलपुर में जनसुनवाई शिविर का आयोजन किया। जिसमें क्षेत्र के ग्रामीणों ने स्टोनमार्ट के स्थापित किए जाने में अनापत्ति जाहिर की, इसके फलस्वरूप 20 जून16 में पर्यावरण से स्वीकृति भी मिल गई। क्षेत्र के गांवों में अधिकांश परिवार पत्थर व्यवसाय से परिवार का भरण पोषण कर रहे हैं तथा कस्बे में उत्पादित पत्थर को उत्तरप्रदेश की मंडियों में भेजा जा रहा है, इससे व्यवसायियों को वाजिब दाम नहीं मिल पा रहा है और शिल्प कारीगरों को रोजगार के लिए दूसरे शहरों में जाने के लिए विवश होना पड़ रहा है। स्टोनमार्ट को विकसित कराने के लिए बड़ापुरा के मनीराम मीना, दुर्गेश मीना व रौहर के संजय मीना की ओर से अथक प्रयास किए गए थे।

प्रशासनिक वित्तीय मंजूरी मिली

मासलपुर में स्टोनमार्ट के लिए प्रशासनिक वित्तीय स्वीकृति मिल गई है। स्टोनमार्ट को विकसित करने के लिए सबसे पहले 50 एकड़ भूमि पर ही तकनीकी विकास की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। इसके बाद इतनी भूमि पर इच्छुक व्यक्तियों को भूखंड आवंटित किए जाएंगे। इसकी प्रक्रिया को जल्दी ही शुरू किया जाएगा।

जीएल मीना, सहायक प्रबंधक, रीको, हिंडौन

iii जन–सहयोग एवं सरकारी विद्यालय एक दृष्टि में!

सरकारी विद्यालय का नाम सुनते ही मन में एक तस्वीर सामने आती है जिसमें कि गाँव का एक ऐसा विद्यालय जिसके चारों ओर गंदगी, टूटी चारदीवारी, टूटे खिड़की-दरवाजे, जानवरों का प्रांगण में पड़ाव आदि दिखाई देते हैं। ऐसा नहीं है कि सरकार इसकी ओर ध्यान नहीं देती । सरकार की प्राथमिकता में सदैव ही सरकारी विद्यालय रहे हैं, परंतु कुछ जिम्मेदारी लोगों की भी बनती है। स्थानीय लोगों द्वारा कभी भी इसे महत्वपूर्ण नहीं माना गया है,बस केवल औपचारिकता ही निभाई गई है। आज आपका परिचय एक ऐसे विद्यालय से करा रहा रहे है जिसकी सूरत ही बदल कर रख दी, उस गांव के लोगों ने। विद्यालय की ना केवल सूरत बदली बल्कि इस विद्यालय ने प्रदेश स्तर पर सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित भी किए हैं। इस विद्यालय का नाम है प्राथमिक विद्यालय सहजनी जो कि जनपद बरेली (U.P.) के बहेड़ी ब्लॉक में स्थित है, जिसका अतीत भी कभी इसी तरह का ही था, परंतु आज वहाँ न केवल वो सारी सुविधाएं हैं जो एक कॉन्वेंट विद्यालय में मिलती हैं बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी प्रदान की जाती है। ये प्रयास किसी एक के द्वारा नहीं बल्कि सामूहिक रूप से किए गए हैं। सरकार का ध्यान सदैव ग्रामीण परिवेश के बच्चों और उनकी शिक्षा पर रहा है, उनके लिए समय-समय पर विभिन्न प्रकार की योजनाएं चलाई जाती हैं जिनका पूर्ण लाभ उन तक पहुंचे और शिक्षार्थी ज्ञानार्जन करके अपने बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें। इसी उद्देश्य से उस गांव के जागरूक और जिम्मेदार नागरिकों ने विद्यालय प्रबंधन के साथ मिलकर सरकार द्वारा आबंटित बजट के साथ-साथ ग्राम पंचायत,दानदाताओं, भामाशाहों एवं जनसहयोग आदि से शिक्षा के मंदिर का कायाकल्प करने के न केवल प्रयास किए बल्कि उक्त प्रयोजन को सफल बनाने में कामयाब भी हुए।

सकारात्मक सोच का एक नायाब उदाहरण पेश करते हुए गांव के युवाओं एवं कर्मचारियों ने एक नई ऊर्जा और एक नए संकल्प के साथ मिलकर अपनी इच्छाओं की परिणति के लिए इस कार्य का शुभारंभ किया। यह सत्य है कि किसी भी कार्य का शुरुआती दौर मुश्किलों भरा होता है लेकिन धैर्य एवं हिम्मत के साथ अपने पथ पर डटे रहकर निश्चित ही अपने मुकाम को हासिल किया जा सकता है। विद्यालय को आदर्श विद्यालय बनाने के लिए जैसे-जैसे प्रयास तेज होते गए वैस-वैसे सहयोगी ग्रामवासियों का कारवां बढ़ता गया। जिसके फलस्वरूप इस पुनीत कार्य के लिए युवाओं ने जो बीड़ा उठाया था उसे करने के लिए उनका साहस और अधिक प्रबल होता गया और आत्मसंतुष्टि की भावना आने लगी जो उन्हें और बेहतर करने के लिए प्रेरित करने लगी। सरकारी विद्यालय को कॉन्वेंट विद्यालय के रूप में परिवर्तित करने का संकल्प लिए गांव के युवाओं एवं कर्मचारियों ने विद्यालय की कमियों और समस्याओं का आकलन करके अपना कार्य आरंभ कर दिया। विद्यालय में बच्चों के बैठने के लिए ना तो फर्नीचर था, ना ही स्वच्छ पेयजल और ना ही अच्छी गुणवत्ता का शौचालय। गांव के शुभचिंतक कर्मठ कार्यकर्ताओं ने महसूस किया कि ग्रामीण लोग जिनके पास बहुत ज्यादा धन नहीं होता है या जैसे-तैसे अपना जीवन गुज़र-बसर करते हैं, उनका भी सपना होता है कि उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले। वे सिर्फ़ इसलिए सरकारी विद्यालयों की ओर रुख नहीं करते क्योंकि वहां उनके बच्चों को वे सारी सुविधाएं प्राप्त नहीं होतीं जो एक प्राइवेट विद्यालय में प्राप्त होती हैं। अक्सर देखा गया है कि वहां के शिक्षक शैक्षणिक रूप से हमारे सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों जितने योग्य भी नहीं होते परन्तु फिर भी वहां पर बच्चों की संख्या हमारे सरकारी विद्यालयों से अधिक पाई जाती है। इसका प्रमुख कारण यही है कि हमारे विद्यालयों में सुविधाओं का अभाव है। निस्संदेह ही हमारे शिक्षक बेहतर से बेहतर प्रयास करते हैं लेकिन फिर भी हम लोगों को यह समझाने में सफल नहीं हो पाते कि हमारे विद्यालय में भी ऐसी सुविधाएं हो सकती हैं और हम उनसे बेहतर शिक्षा प्रदान कर सकते है। उक्त प्रयोजन के लिए वर्ष 2015 में एक योजना तैयार की जिसमें ग्रामीणों ने सीमित संसाधनों को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के विकास का कार्य

प्रारंभ किया, जिसमें संकुल प्रभारी डॉ कवीन्द्र सिंह व सहायक अध्यापक अमित सिंह राणा का भरपूर सहयोग मिला। सर्वप्रथम तो विद्यालय में पड़े पुराने बोर्डों को फर्नीचर में तब्दील कर बहुत ही सीमित बजट में बच्चों के बैठने की व्यवस्था की। उसके बाद बच्चों के लिए स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति के लिए विद्यालय के सरकारी नल में सबमर्सिबल और 1000 लीटर के टैंक की व्यवस्था की। सभी कक्षा-कक्षों में पंखे तो थे लेकिन ग्रामीण परिवेश में विद्युत की समुचित व्यवस्था न होने के कारण अक्सर वहां लाइट नहीं आती थी जिससे बच्चों को इसका लाभ नहीं मिल पाता था। इसके लिए विद्यालय में 2 केवी का इनवर्टर, 5 केवी का जनरेटर तथा एक सोलर लाइट (सांसद निधि द्वारा) की व्यवस्था की गई। कक्षाओं को आकर्षक बनाने हेतु शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) लगाए गए। विद्यालय को हरा-भरा एवं सुंदर बनाने के लिए विद्यालय में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे लगाए गए। इसके फलस्वरूप विद्यालय में हर मौसम में सुंदर एवं मनमोहक पुष्प खिले रहते हैं जो सभी में एक नई ऊर्जा का संचार करते हैं और प्रेरित करते हैं कुछ अच्छा कार्य करने को। पौधों की देख-रेख में बच्चों की भागीदारी सबसे अहम रहती है, बच्चे पूर्ण तन्मयता से अपनी-अपनी क्यारियों की देखभाल करते हैं और विद्यालय को हरा-भरा बनाने में सहयोग करते हैं। इसी बीच वर्ष 2016&17 में स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार के लिए विद्यालय का पंजीकरण किया, जिसमें विद्यालय को राज्य स्तर पर आठवां पुरस्कार प्राप्त हुआ और विद्यालय को एक नई पहचान मिली, जिससे सभी में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। गांव वासियों ने और बेहतर करने के लिए ग्राम पंचायत की मदद लेने के प्रयास किए। गांव में शिक्षा का उजाला हो, इस संकल्प को मूर्त रूप देने के लिए ग्राम प्रधान श्री मुकेश कुमार,एडीओ पंचायत श्री संजय दीक्षित जी एवं श्री अनुज गोपाल मिश्रा जी, खंड प्रेरक श्री मनोज कुमार,राजपाल सिंह जिला समन्वयक स्कूल सैनिटेशन विकास भवन का भरपूर सहयोग मिला। सभी ने विद्यालय के प्रति ग्रामीणों के समर्पण भाव को देखकर पूरा सहयोग किया और ऑपरेशन कायाकल्प के प्रथम चरण के अंतर्गत विद्यालय में उच्च कोटि का शौचालय निर्मित हुआ, जिसमें सामान्य छात्र- छात्राओं के साथ- साथ दिव्यांग बच्चों के लिए भी अलग से शौचालय निर्मित हुआ। बच्चों की पहुंच को ध्यान में रखते हुए हैंडवाश पॉइंट व शिक्षकों द्वारा स्वच्छ पेयजल हेतु R.O. की व्यवस्था भी की गई। जिसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय के दिशा निर्देशों की पूर्ण रूप से पालना की गई। यह शौचालय मॉडल शौचालय रूप में चयनित किया गया और अन्य विद्यालयों को शौचालय निर्माण की इसी तर्ज को अपनाने की सलाह भी दी गई। स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार 2017&18 के द्वितीय चरण में भी विद्यालय ने जनपद में प्रथम स्थान व प्रदेश स्तर पर पांचवां स्थान प्राप्त किया और 90% से अधिक अंक प्राप्त करते हुए विद्यालय राष्ट्रीय स्तर पर चयनित हुआ। दुर्भाग्यवश विद्यालय का चयन राष्ट्रीय स्तर पर नहीं हो सका लेकिन राज्य स्तर पर विद्यालय एक बार पुनः चयनित हुआ और यह विद्यालय व जनपद के लिए गर्व की बात बन गया। वर्ष 2018 में मुख्य विकास अधिकारी श्री सत्येंद्र कुमार जी द्वारा जनपद के टॉप 10 विद्यालयों में बैंक ऑफ बड़ौदा व पंजाब नेशनल बैंक के सहयोग से कंप्यूटर लैब व डिजिटल लाइब्रेरी (कलाम लाइब्रेरी) का निर्माण कराया गया। इसमें बच्चों को डिजिटल माध्यम से पुस्तकों का अध्ययन कराया जाता है इसके लिए मुख्य विकास अधिकारी को नई दिल्ली में सम्मानित भी किया गया। इसी क्रम में विद्यालय 2018 में अंग्रेजी माध्यम में चयनित किया गया। शिक्षकों ने ग्रामवासियों के मन में विद्यालय के प्रति यह भाव पैदा किया कि सरकारी विद्यालय में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ उच्च कोटि की सुविधाएं मिल सकती हैं। इन समग्र प्रयासों के फलस्वरूप आज उस विद्यालय में आस-पास के गांवों के वे बच्चे भी शिक्षा ग्रहण कर रहे है जो निजी स्कूलों में पढ़ रहे थे। ग्रामीणों के सहयोगी रवैए एवं विद्यालय के प्रति समर्पण भाव से प्रभावित होकर विद्यालय का समस्त स्टाफ एक टीम के रूप में कार्य करता है, जिसमें सभी पूर्ण कटिबद्धता से अपना किरदार निभाने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। विद्यालय में बच्चों को सबसे उच्च स्थान प्रदान कर उनकी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों द्वारा ऐसी शिक्षा प्रदान करने का प्रयास रहता है जिससे कि उनका सर्वांगीण विकास हो सके।

श्रीराजीव सिंह (प्र.अ.) प्राथमिक विद्यालय सहजनी का विशेष आभार।

सोच बदलो-गांव बदलो टीम को गर्व है ऐसी महान सोचवाले उन ग्रामीणों पर जो कि अपने गांव की उन्नति के लिए पूर्णतः समर्पित हैं। गर्व है राष्ट्र के भाग्य विधाता उन शिक्षकों पर जो निश्चित ही सेवाभाव एवं कर्तव्यनिष्ठा से देश के भविष्य को संवारने के लिए कटिबद्ध हैं।

सोच बदलो-गांव बदलो टीम गांव सहजनी,
जनपद बरेली(U.P.) की उन्नति एवं सहजनी की मिट्टी में जन्मे क्रांतिवीरों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

जय हिंद!

iv "SBGBT के कार्यकर्ताओं की शिक्षा के लिए संघर्ष की दास्तान"

शिक्षा किसी भी समाज और राष्ट्र के विकास का मूल होती है। समाज की शिक्षा रूपी जड़ें जितनी अधिक गहरी और मजबूत होंगी, वह समाज उतनी ही गति और मजबूती के साथ विकास के आयामों को हासिल करने में सफ़ल हो सकेगा।

इन जड़ों को विद्यालय रूपी उपवन में ही सींचा जा सकता है। विद्यालय उस पवित्र स्थान का नाम है जहां पर एक निश्चित आयु तक बच्चों को गुरुजनों अर्थात् शिक्षकों द्वारा सैद्धांतिक रूप से शिक्षा-दीक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उनमें सामाजिक, नैतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का रोपण करते हुए सर्वांगीण विकास के लिए विविध क्रियाकलाप प्रायोजित किए जाते है। विद्यालय में शिक्षार्थी ज्ञानोपार्जन करते हुए विभिन्न दक्षताएं प्राप्त कर राष्ट्र निर्माण के लिए एक कुशल नागरिक के रूप में तैयार होते हैं। विद्यालय का अस्तित्व सनातन काल से ही रहा है। जिसे गुरुकुल के नाम से जाना जाता था, अर्थात् विद्यालय का हमारी सभ्यता और संस्कृति से गहरा संबंध रहा है। किसी गांव या समाज में विद्या के मंदिर अर्थात् विद्यालय का ना होना, उस गांव या समाज की संतति के अंधकारमय भविष्य को निमंत्रण देना है।

कुछ ऐसे ही वाकया का उल्लेख यहां पर किया जा रहा है- **सरमथुरा उपखंड की ग्राम पंचायत बरौली का हुलासपुरा गांव**, जो कि करीब एक सौ घरों की बस्ती है। जिसमें बीस सरकारी कर्मचारी हैं जो देश के विभिन्न भागों में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। ये गांव के वे नागरिक हैं जिन्होंने गांव के ही राजकीय प्राथमिक विद्यालय में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करके और आगे की शिक्षा नज़दीकी माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्राप्त करके अपने आप को जीविकोपार्जन के काबिल बनाया। गांव का वही प्राथमिक विद्यालय सन् 2017 में इतिहास की बात बन गया अर्थात् उस विद्यालय जिसने गांव के लोगों को जीवन जीने के लायक बनाया, उसने अपना अस्तित्व खो दिया। ग्रामीणों की उदासीनता, गांव के पढ़े-लिखे लोगों की गांव के प्रति उदासीन प्रवृत्ति और लोगों में निजी विद्यालयों के प्रति (अच्छी-पढ़ाई वाली) भ्रामक धारणा के चलते तत्कालीन राज्य सरकार ने विद्यालय को दूसरे गांव के प्राथमिक विद्यालय में मर्ज कर दिया।

गांव का विद्यालय बंद हो जाने के बाद उन गरीब परिवारों को बहुत तगड़ा झटका लगा जो मजदूरी करके अपने परिवार का भरण-पोषण करते हैं। ऐसे में वे अपने बच्चों को भाड़े के वाहनों से अन्यत्र विद्यालय कैसे भेजें? चूंकि, हुलासपुरा गांव से पंचायत मुख्यालय एवं नज़दीकी बाज़ार बरौली के लिए कोई सीधी संपर्क सड़क नहीं है। ऐसे में गांव वासियों के लिए बरौली आने-जाने के लिए संकरी पगडंडी के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं बचता। अभिभावक छोटे-छोटे अपने कलेजे के टुकड़ों (बच्चों) को भला उस संकरी पगडंडी (गली) से बरौली पढ़ने कैसे भेजें, जिसमें बरसात के दिनों में अक्सर सर्प मंडराते दिखते हों और कमर तक पानी भर जाता हो। फलस्वरूप, धीरे-धीरे गांव के नौनिहाल शिक्षा की मुख्य धारा से वंचित होने लगे। उन मासूमों का क्या कसूर कि वे इस सभ्य समाज में भी वे अपने शिक्षा के संवैधानिक मौलिक अधिकार को पाने के लिए तरस रहे हों। 9-10 साल तक के बच्चे जिनकी उम्र पढ़ने-लिखने की हो, भविष्य को संवारने की हो, जिनके हाथों में तख्ती-स्लेट एवं कॉपी पेंसिल होनी चाहिए वे बच्चे या तो यत्र-तत्र गलियों में खेलते हुए नज़र आते या फिर मां- बाप के साथ कृषि इत्यादि कार्यों में लगे हुए दिखाई देते।इस उम्र तक बच्चे हिंदी और अंग्रेजी भाषा को पढ़ने-लिखने और गणितीय मूलभूत संक्रियाओं की दक्षता हासिल कर लेते हैं लेकिन उस उम्र तक इस गांव के बच्चों को अक्षर और संख्या ज्ञान तक ना हो, तो सोचिए उन बच्चों का भविष्य कैसा हो सकता है?

इस दयनीय स्थिति को देखकर इसी गाँव के निवासी सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं ने अपने गांव के

विद्यालय को यथावत स्थान पर पुनः संचालित करवाने की ठानी। सर्वप्रथम विद्यालय के ना होने से दूरगामी दुष्परिणामों से गांव वासियों को अवगत कराया, समझाया और विद्यालय को चालू करवाने के लिए समग्र रूप से प्रयास करने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात्, गांव के बुजुर्गों के साथ मिलकर माननीय विधायक जी, श्रीमान जिलाधिकारी महोदय एवं श्रीमान जिला प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी महोदय को ज़िला मुख्यालय धौलपुर जाकर ज्ञापन दिया।

ज़िंदगी की राहों में अंधेरा बहुत है ,
ये कभी मत कहना,
राहों को रोशन करना है अगर ,
तो दिल में सदा उम्मीद की लौ जलाये रखना !

उक्त प्रयोजनार्थ प्रयास यहीं नहीं थमे और कार्यकर्ताओं ने उम्मीद की लौ को बुझने नहीं दिया। इसके बाद भी कई बार जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय और माननीय विधायक के पास अपने गांव के बच्चों के भविष्य की खातिर परिवेदना दर्ज कराई गई। सोच बदलो-गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं ने ग्रामीणों की उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए व्यक्तिगत रूप से भी निरंतर प्रयास जारी रखे। टीम से प्रेरणा लेकर कार्यकर्ताओं के द्वारा जागरूकता एवं सक्रियता का परिचय देते हुए अपने स्तर पर ज़िला शिक्षा अधिकारी कार्यालय और ज़िला कलेक्टर कार्यालय धौलपुर से लेकर निदेशक शिक्षा विभाग कार्यालय, बीकानेर, एवं माननीय शिक्षामंत्री, राजस्थान सरकार तक को पत्र-व्यवहार (ईमेल एवं डाक) एवं ट्विटर के ज़रिए निरंतर स्मरण कराया जाता रहा।

कहते हैं ना ''जब थोड़े-थोड़े प्रयास वृहद स्तर पर कए जाते हैं तो प्रयासों के एक न एक दिन सकारात्मक परिणाम ज़रूर आते है।'' उक्त कथन गांव हुलासपुरा के परिप्रेक्ष्य में चरितार्थ होता हुआ प्रतीत होता है। शिक्षा निदेशालय बीकानेर ने इस ज्वलंत समस्या को अपने संज्ञान में लेते हुए प्राप्त परिवेदनाओं के निस्तारण हेतु समीक्षा की और मर्ज विद्यालय को पुनः चालू करने के लिए राज्य सरकार को अनुशंसा भेजी। एक लोक कहावत है कि ''कभी-कभी गेहूं के साथ में बथुआ को भी पानी मिल जाता है।'' तो अंततः राज्य सरकार ने 25 फरवरी 2020 को पूरे प्रदेश में मर्ज किए गए करीब 4 हज़ार प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में से 485 विद्यालयों को शैक्षणिक सत्र 2020-21 से पुनः चालू करने के आदेश जारी कर दिए हैं। आदेश जारी होते ही गांव में खुशी की लहर दौड़ गई। गांव के हर बच्चे-बूढ़े एवं महिला की जुबां पर विद्यालय के पुनः चालू होने की ही चर्चा है। गांव वाले इस आदेश को अपने गांव के लिए रंगोत्सव होली पूर्व राज्य सरकार द्वारा दिया गया तोहफ़ा मान रहे हैं। गांव वाले राज्य सरकार का आभार व्यक्त कर रहे हैं।

हमें टीम के इन कार्यकर्ताओं पर गर्व है कि टीम अपने सकारात्मक प्रयासों से युवाओं को सकारात्मक कार्य करने और अपने गाँव की समस्याओं के विषय में सोचने, उनका समाधान निकालने के लिए प्रेरित कर रही है। हम आप सभी युवा साथियों से निवेदन करता हूँ कि आप छोटे-छोटे प्रयासों से अपने-अपने गाँव में, आस-पड़ोस में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं और जीवन की सच्ची खुशी और आनंद को प्राप्त कर सकते हैं। आओ हम मिलकर अपने गाँव के लिए, अपने समाज के लिए, अपने राष्ट्र के लिए, अपने गाँव के बच्चों, अपनी माता-बहनों और गाँव के बुजुर्गों के लिए काम करें।

V

EYC रतियापुरा के बढ़ते क़दम

EYC का एक कदम बेहतर शिक्षा की ओर –

ग्राम पंचायत रतियापुरा में शैक्षिक स्तर को उन्नत बनाने एवं बोर्ड परीक्षाओं की बेहतर तैयारी के लिए कृत संकल्पित EYC टीम रतियापुरा द्वारा गाँव में लगातार दो वर्षों से EYC निःशुल्क कोचिंग कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। जिससे पूरी ग्राम पंचायत के शिक्षार्थियों को लाभ मिल रहा है। इसी क्रम में EYC रतियापुरा द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति शैक्षिक सत्र-2019&20 के लिए भी 30 दिसंबर से 1 जनवरी के बीच EYC प्री बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन करवाया गया। उक्त परीक्षाओं का आयोजन बोर्ड परीक्षा के पैटर्न पर ही कराया जाता है, जिससे ग्राम पंचायत के बोर्ड परीक्षार्थीयों की तैयारी का आकलन किया जा सके एवं मुख्य परीक्षा से पहले बोर्ड परीक्षा की तरह एक अनुभव छात्रों को दिया जा सके। प्री बोर्ड परीक्षाओं में अव्वल आने वाले हर क्लास के 3 छात्र और 3 छात्राओं को EYC टीम द्वारा हर वर्ष वार्षिक उत्सव पर पुरस्कृत करके प्रोत्साहित किया जाता है।

EYC का COVID&19 अभियान –

गरीब एवं असहाय परिवारों की मदद के लिए आगे आई EYC टीम !

युवा शिक्षा समिति, रतियापुरा ने EYC कोविड-19 साप्ताहिक अभियान के तहत चार चरणों में पूरी ग्रा.प. के 6 गाँवों रतियापुरा, भउआपूरा, खेडा, महुआखेड़ा, मढ़ीली और बहराई के 205 असहाय परिवारों को ड्राई राशन किट वितरित किए। जब समूचा विश्व कोरोना महामारी के दौर से गुज़र रहा था और लॉकडाउन लगा हुआ था जिसके चलते दिहाड़ी मजदूरी करके अपने परिवार का भरण-पोषण करने वाले गरीब एवं असहाय परिवारों को काफ़ी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था । ऐसे में इन परिवारों की मुसीबतों को ध्यान में रखते हुए युवा शिक्षा समिति, रतियापुरा ने इनकी सहायता करने का निश्चय किया। इस साप्ताहिक अभियान के तहत 23 अप्रैल से 29 अप्रैल तक चार चरणों समिति ने भामाशाहों के सहयोग से लगभग 1 लाख रूपए और अनाज एकत्रित करके इन परिवारों की सहायता कर इस पुनीत कार्य को अंजाम दिया।

कोरोना और EYC का जागरूकता अभियान –

लॉकडाउन के दौरान ई.वाई.सी. टीम ने 24 से 26 मार्च तक मासलपुर तहसील के लगभग 18 गांवों में कोरोना से बचने के लिए जागरूकता अभियान चलाया। इसके बाद ई.वाई.सी. ने गांव में एक नवयुवकों की टीम गठित की जिसके द्वारा गांव में रोजाना गश्त दिया जाता था एवं गांव में बाहर से आ रहे लोगों की जानकारी कोरोना कंट्रोल रूम रतियापुरा तक पहुंचाने का कार्य इस टीम ने किया। ई.वाई.सी. टीम ने इस महामारी के समय में गांव को सुरक्षित रखने का बीड़ा उठाया जिसको समिति के सभी सदस्यों ने बखूबी निभाया। टीम के द्वारा लोगों के बीच कोरोना से बचाव के लिए जनजागृति फैलाने और गांव के सार्वजनिक स्थलों पर मास्क वितरण एवं स्थानीय प्रशासन के सहयोग से गांव को दो बार सैनिटाइज करने का कार्य भी किया।

EYC रतियापुरा द्वारा शिक्षा की अलख जगाने की दिशा में उठाए जा रहे क़दम और कोरोनाकाल में जरूरतमंदों के लिए की गई मदद उल्लेखनीय एवं बेहद प्रशंसनीय है।

शुभकामनाएं !!

vi विद्यालयों के भित्ति-चित्रों में सोच बदलो-गांव बदलो विचारधारा की झलक

"सोच बदलो गांव बदलो टीम" समाज में बिखरी सकारात्मक ऊर्जा का वह ज्योतिपुंज है जो प्रत्येक जन की प्रेरक चेतना को जागृत कर, स्वयं की नैतिक जिम्मेदारी का बोध कराते हुए ग्रामीण धरा पर मानवीय मूल्यों को प्रसारित कर रही है उक्त कथनानुसार SBGBT एक वैचारिक क्रांति है। इतिहास साक्षी है कि जब-जब दुनिया में नवीन सभ्यता और संस्कृतियों का आगाज हुआ, तब-तब रूढ़ीवादी जड़त्व सिद्धांतों पर प्रबल प्रहार वैचारिक शक्ति का ही हुआ है और वही विचारधारा अधिक प्रभावी रही है जिसने साधारण जन तक अपनी पैठ बनाई हो । इसके लिए जरूरी है कि विचारों को प्रसारित करने का माध्यम आमजन की मातृभाषा को अपनाया जाए।

सकारात्मक ऊर्जा से ओतप्रोत सोच बदलोदृगांव बदलो टीम ने भी विकासोन्मुखी सकारात्मक विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सर्वप्रथम ग्रामीण हिंदुस्तान को चुना है ।

कहते हैं कि -
"नींव मजबूत होगी तो भवन भी सदियों तक मजबूती से खड़ा रहेगा"

इसी वैचारिक मुहिम को साधने के लिए मानव सभ्यता रूपी भवन के निर्माण की नींव बच्चे होते हैं और उन्ही पर आशातीत भविष्य का निर्माण टिका होता है । सोच बदलो, गांव बदलो टीम ने भी एक श्रेष्ठ एवं स्वच्छ सभ्यता के निर्माण हेतु बच्चों को अपने मिशन में प्रमुख स्थान दिया है। यदि सकारात्मक सोच के साथ धरातलीय परिवर्तन की धारा शिक्षण संस्थानों से प्रभावित होने लगे और माध्यम भावी कर्णधार हो तो निश्चित ही वह बदलाव गांवों में ही नहीं बल्कि पूरे देश में क्रांतिकारी होगा SBGBT ने वैचारिक क्रांति के महत्व को बढ़ावा देते हुए किशोर -किशोरियों के लिए नोटबुक वितरण कार्यक्रम के तहत अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को मोटिवेशनल क्लास (MOTIVATIONAL CLASS) के माध्यम से टीम के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने अपने ओजपूर्ण उद्बोधनों से नैतिक मूल्यों, कर्तव्यों, संस्कारों और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा दी।

सोच बदलो, गांव बदलो विचारधारा एक ऐसे मुकाम पर पहुंच चुकी है जिसके परिणाम प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से धरातल पर स्पष्ट दिखाई देने लगे हैं। टीम के द्वारा रचनात्मक, सकारात्मक, परिवर्तनकारी विकासोन्मुख कार्य निरन्तर किए जा रहे हैं जिसका प्रभाव ग्रामीण परिवेश में अधिक है।
किसी महापुरुष ने उचित ही कहा है कि
"शील, विनय, आदर्श, शिष्टता, तार(तारतम्यता) बिना झंकार नहीं।
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी, यदि नैतिक आधार नहीं ।"

उक्त पंक्ति को चरितार्थ हेतु कई विद्वान साथियों के द्वारा भविष्य के भावी पुरोधाओं (विद्यार्थियों) के बौद्धिक, नैतिक एवं सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा पाओ - ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता को आधार बनाकर तर्क एवं चिंतन शक्ति को स्थायित्व प्रदान करने हेतु विद्यालयों, शिक्षण संस्थानों व गांव की चौपालों की दीवारों पर SBGBT की विचारधारा से सम्बन्धित श्लोकों, आदर्श वाक्यों (SLOGAN) और प्रतीक चिन्हों (LOGO) को भित्ति चित्रों के माध्यम से सकारात्मक संदेश प्रसारित किए

जा रहे हैं ।

तदर्थ-हम उत्थान कोचिंग सरमथुरा, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय रनपुरा बाड़ी, एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय उलावटी पुरा, बाड़ी (धौलपुर) का उदाहरण स्वरूप अवलोकन कर सकते हैं ।

यदि यही कर्तव्य परायणवादी सकारात्मक सोच प्रत्येक सरकारी महकमे में पल्लवित होने लगे तो समझना चाहिए कि यह क्रांतिकारी, परिवर्तनवादी, विकासोन्मुख विचारधारा एक क्षेत्र, एक जाति, एक पंथ, एक समाज से परे पूरी मानव सभ्यता को प्रभावित करने का माद्दा रखती है।

"शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं।"
– नेल्सन मंडेला (पूर्व राष्ट्रपति दक्षिण अफ्रीका)

vii

युवा विकास समिति गाधौली के सार्थक प्रयासों की एक झलक

शैक्षिक उन्नयन की दिशा में पहल
अव्वल छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन स्वरूप पारितोषिक वितरण

युवाओं की पहल अतिक्रमण मुक्त गाँव

युवाओं का संदेश- स्वच्छ हो हमारा गाँव

युवाओं की पहल, गाँव हुआ रोशन

पर्यावरण के प्रति अपने दायित्व को जानें

viii शैक्षिक, सामाजिक एवं पर्यावरणीय चेतना की अलख जगी!

सोच बदलो गांव बदलो अभियान में पूर्वी राजस्थान के अरावली पहाड़ियों के मध्य बसे अलवर जिला के राजगढ़ उपखंड क्षेत्र के गांव टोडा जयसिंहपुरा एवं इसके आसपास के क्षेत्रों में शिक्षा और जनजागृति की अलख जग चुकी है। ग्राम विकास सेवा समिति के सौजन्य से "पे बैक टू सोसाइटी" की अवधारणा पर युवाओं की पहल सार्थक हो पा रही है। जागरूकता एवं पर्यावरण प्रेमी कार्यकर्ताओं द्वारा राजकीय विद्यालय के खेल मैदान, बालिका छात्रावास परिसर,आई टी केन्द्र एवं स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल खोह दरीबा में वृक्षारोपण कर तारबंदी की गई। स्वच्छता के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए कार्यकर्ताओं ने श्रमदान कर सफाई अभियान आयोजित किया और सार्वजनिक स्थानों पर छाया की व्यवस्था की। इसके अतिरिक्त ग्राम विकास समिति ने विद्यालय परिसर का समतलीकरण कर वॉलीबॉल नेट स्टैंड का निर्माण किया और गांव के भामाशाहों द्वारा विद्यालय में कक्षा-कक्ष निर्माण की भी घोषणा की । क्षेत्र के लोग मृत्युभोज जैसी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन में जन-जागरूकता के माध्यम से कामयाबी हासिल कर पा रहे हैं। क्षेत्र के सेवाभावी कार्यकर्त्ता कोरोना महामारी के चलते लॉकडाउन में असहाय एवं जरूरतमंदों की मदद के लिए आगे आए । सोच बदलो-गांव बदलो टीम से प्रेरित क्षेत्र के लोग अपने गांव और क्षेत्र के संपूर्ण विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं।

गांव मनमोहक होते थे, जब शहर से आते थे!
छुट्टियाँ मनाने, त्यौहार नहीं, मेला होता था,
क्यों कब चला गया वक्त ये,
कभी कोशिश नहीं की, ढूंढ़ पाओगे,
या छोड़ दोगे?

-कवि घुणावत

SBGBT टोडा जयसिंहपुरा
राजगढ़, अलवर

हजार मील की यात्रा
पहले कदम से शुरू होती है
- चीनी कहावत

15 "सोच बदलो–गांव बदलो टीम के युवाओं ने किया गांवों में बदलाव का जतन।" "ग्रामीण विकास के विविध रंग– दीपोत्सव के संग"

सोच बदलो गांव बदलो टीम की विचारधारा से प्रेरित युवाओं ने दीपावलीकी खुशियों को अपने गांवों को स्वच्छ और सुंदर बनाने तथा विकास हेतु जतन करने केसाथ मनाया। इस अवसर पर युवाओं और ग्रामवासियों ने अपनी मातृभूमि के ऋण को चुकाने के लिए दीपावली के पर्व को अपने गांव के विकास के लिए समर्पित किया। दीपावली के अवसर पर विभिन्न गांवों में संपादित विकासात्मक गतिविधियों की एक झलकः-

1. गांव– खौरपुरा (जिला–धौलपुर)

बाड़ी कस्बे का समीपवर्ती गांव खौरपुरा सोच बदलो गांव-बदलो मुहिम का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है, जहां पर गांव के युवाओं और कर्मचारियों ने सोच बदलो गांव बदलो विचारधारा से प्रभावित होकर गांव में विभिन्न विकासात्मक गतिविधियों को अंजाम दिया; जिसके अंतर्गत लोगों ने स्वेच्छा से गांव के रास्तों से अतिक्रमण हटाकर रास्तों को चौड़ा किया, जो एक सकारात्मक सोच का परिचायक है। इसी क्रम में पूरे गांव में सफाई अभियान आयोजित किया गया। लोगों ने गलियों में एकत्रित कीचड़/ गंदगी को ट्रैक्टर ट्रॉलियों में भरकर गांव को स्वच्छ बनाने हेतु भरसक प्रयास किए।गांव की जिन गलियों में अँधेरा पसरा रहता था, अब ये गलियाँ स्ट्रीट लाइट्स के प्रकाश में जगमगा उठी हैं। स्वास्थ्य के प्रति सजगता प्रदर्शित करते हुए युवाओं ने क्षेत्र में फैल रहे डेंगू की रोकथाम के लिए गहन फौगिंग कराई और लोगों सेपानी की बर्बादी को रोकने के लिए हरसंभव प्रयास करने की अपील की। हाल ही में नवगठित गांव विकास समिति खौरपुरा के युवाओं, बुजुर्गों और कर्मचारियों में गांव के विकास के प्रति जुनून और उत्साह देखने को मिल रहा है। यह जुनून और उत्साह निश्चित ही गांव की सूरत बदलने में कारगर साबित होगा।

संकलनकर्ता
मनीराम, बड़ापुरा SBGBT
रामनरेश, हुलासपुरा SBGBT

2. गांव- गुढ़ा (जिला-धौलपुर)

सरमथुरा क्षेत्र का एक छोटा सा गांव गुढ़ा जो कि महान सोच वाले व्यक्तित्वों का गढ़ बन गया है। इस गांव के युवाओं और कर्मचारियों ने तो गांव की तस्वीर ही बदल कर रख दी। कर्मचारी बाहुल्य युवा विकास समिति गांव को सुंदर और स्वच्छ बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसी कड़ी में दीपावली के पर्व को मनाने के लिए छुट्टियों में घर आए गांव के कर्मचारियों ने अन्य युवाओं के साथ मिलकर ''स्वच्छता ही सेवा'' कार्यक्रम के अंतर्गत श्रमदान किया। निश्चित तौर से सोच बदलो-गांव बदलो टीम की मुहिम से प्रेरित होकर गांव-गांव ढाणी-ढाणी में सरकार का राष्ट्रीय अभियान ''स्वच्छता ही सेवा'' साकार रूप लेता हुआ प्रतीत होता है। साफ-सफाई के साथ- साथ ग्रामीणों ने स्ट्रीट लाइट लगाकर तथा चौराहों एवं सार्वजनिक स्थानों पर प्रकाश के पर्याप्त बंदोबस्त करके दीपावली के प्रयोजन को साकार कर दिया।कर्मचारियों ने स्वयं के खर्चे से एलईडी बल्ब लगाकर गांव के चौराहों और गलियों को प्रकाशमान कर दिया और वर्षा ऋतु में लगाए गए पौधों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लोहे के तार वाले गमले स्थापित किए। सरकार द्वारा हाल ही में सिंगल यूज्ड प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने हेतु कई कदम उठाए गए हैं। सरकार की किसी भी नीति को सही मायने में क्रियान्वित करने के लिए उसमें जनभागीदारी का होना नितांत आवश्यक है। इस जन सहभागिता का प्रमाण है यह गुढ़ा गांव। गांव के युवाओं एवं कर्मचारियों ने सिंगल यूज्ड प्लास्टिक के पर्यावरण पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों से लोगों को अवगत कराते हुए इसके इस्तेमाल को रोकने के लिए जन जागरूकता रैली निकाली। सोच बदलो-गांव बदलो टीम की विचारधारा से ओतप्रोत प्रत्येक बच्चे, युवा और बुजुर्ग के अंतर्मन में अपने समाज और राष्ट्र के लिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना झलकती है।

3. गांव- डोडी (जिला-बूंदी)

भर दो सुगंध से दिशा-दिशा,ऐसा मधुरिम मधुमास बनो।

समाज में सकारात्मक एवं रचनात्मक बदलाव का पर्याय सोच बदलो-गांव बदलो मुहिम राजस्थान के प्रवेश द्वार कहे जाने वाले पूर्वी ज़िले धौलपुर से शुरू होकर अब हाड़ौती तक पहुंच गई है। बूंदी ज़िले के डोडी गाँव के राजकीय सेवा में कार्यरत कर्मचारियों ने दीपोत्सव को अनोखा बना दिया और मिलकर गाँव में जागरूकता रैली निकाली; जिसमें नशा-मुक्ति, गली-मोहल्लों में स्वच्छता रखने, सामाजिक कुरीतियों को त्यागने, मृत्यु-भोज निवारण, शिक्षा का महत्व और बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसे विषयों पर संदेश दिया। युवाओं एवं गाँव के कर्मचारियों ने सार्वजनिक स्थानों की साफ-सफाई कर स्वच्छता का संदेश देते हुए सामाजिक परिवर्तन की इस मुहिम में भागीदारी निभाने के लिए गाँव वासियों से आह्वान किया।

ज़िंदगी जीने के दो तरीके हैं
जो हो रहा है होने दो
उसे बदलने की
कोशिश करने की
ज़िम्मेदारी उठाओ

4. गांव– सुंदरी, बामनवास (जिला–सवाईमाधोपुर)

सोच बदलो गांव बदलो टीम सुन्दरी तकरीबन डेढ साल से विकासात्मक पहलुओं पर कार्य कर रही है। जिसके द्वारा किए गए सकारात्मक प्रयासों के परिणाम बखूबी परिलक्षित हो रहे हैं। टीम ने बीते समय में विद्यालय में भौतिक सुख-सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना एवं पर्यावरण संरक्षण के निमित्त वृक्षारोपण जैसे सराहनीय कार्य किये हैं। दीपावली के अवसर पर गांव के कर्मचारियों ने गांव को जोड़ने वाले सभी रास्तों से अतिक्रमण हटाने का काम किया। सभी कर्मचारियों ने गांव के लोगों को समझा- बुझाकर सभी रास्तों के दोनों तरफ पर्याप्त जगह छुड़वाई तथा JCB मशीन लगवाकर अतिक्रमण हटाए और रास्तों के दोनों तरफ खड़े कंटीले पेड़ों की छंटाई की गई। ग्रामीणों ने गांव के विकास को सुनिश्चित करने एवं गांव और प्रशासन के बीच सेतु का कार्य करने वाली ग्राम विकास समिति का पंजीयन पूर्व में ही करवा लिया है। यह समिति अपना संविधान बनाकर उसके अनुरूप ही कार्य कर रही है। यह टीम अनवरत रूप से शिक्षा,स्वास्थ और ग्रामीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। संगठन ने बालिका शिक्षा को वर्तमान युग की मांग बताते हुए बालिकाओं को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने कालोगों से आह्वान किया। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ प्रकल्प को साकार करने के लिएविकास समिति बालिका के विवाह पर 11000 रूपये कन्यादान स्वरूप प्रदान करती है । ग्रामीण विकास के बिना राष्ट्र के विकास का सपना कभी पूरा नहीं हो सकता। समिति के सदस्यों ने सोच बदलो गांव-बदलो विचारधारा को देश के गांव-गांव और ढाणी-ढाणी तक प्रसारित करने का संकल्प लिया।

5. गांव– धाधरैन, बयाना (जिला–भरतपुर)

सोच बदलो-गांव बदलो टीम के तत्वावधान में बयाना क्षेत्र (भरतपुर) के गांव धाधरैन के युवाओं एवं बुजुर्गों द्वारा सोच बदलो- गांव बदलो टीम की पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वाकांक्षी पहल ''ग्रीन विलेज-क्लीन विलेज'' को गति प्रदान करते हुए गांव को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए सर्वप्रथम एक मीटिंग का आयोजन कर गांव में स्वच्छता कार्यक्रम संचालित किया गया, जिसके अंतर्गत गांव के सभी मार्गों एवं गलियों में एकत्रित कचरे को हटाकर गांव की नालियों को साफ करके जल निकासी के उचित प्रबंध किए गए। रात्रि के अंधेरे में रास्तों एवं गलियों में अंधेरा पसरा रहता था, इस समस्या को युवाओं और कर्मचारियों ने अपने संज्ञान में लेते हुए गलियों और चौराहों पर स्ट्रीट लाईट्स लगाकर इस समस्या का निस्तारण किया और दीपोत्सव के पर्व को सार्थक बनाया। तत्पश्चात ग्रामीणों ने गांव के उपयुक्त स्थानों पर पौधे लगाकर गांव और अपने पर्यावरण को हरा-भरा बनाए रखने का संकल्प लिया।

कार्यकर्ताओं ने टीम से प्रेरणा लेते हुए गांव के 10वीं एवं 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में 70 फ़ीसदी से अधिक अंक प्राप्त करने वाले होनहार और प्रतिभाशाली छात्रों को पारितोषिक प्रदान कर सम्मानित किया, जो कि टीम के ''आओ पढ़ें-आगे बढ़ें'' विजन के अंतर्गत ग्रामीण प्रतिभाओं को तलाशने और तराशने के लिए उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है। युवाओं की गांव के प्रति इस तरह की जिम्मेदाराना एवं विकासोन्मुखी सोच निश्चित ही गांव को स्वच्छ, सुंदर और विकसित बनाने में कारगर साबित होगी।

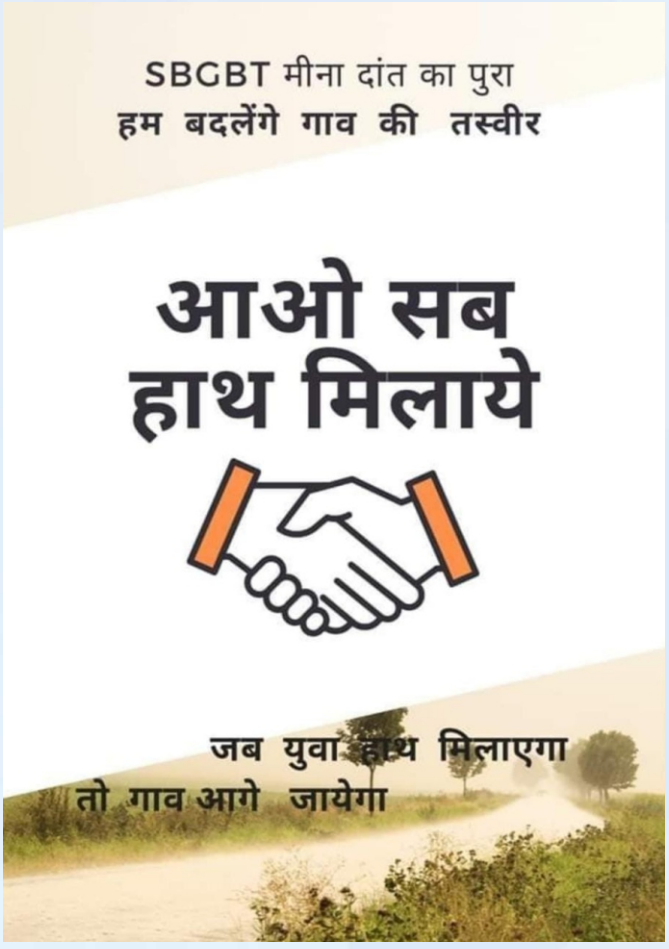

6. गांव– कंसौटीखेड़ा (जिला–धौलपुर)

उद्देश्य सफल हो जाता है,
गर युवा शक्ति सब मिल जाए,
असंभव भी संभव हो जाए
संपन्न देश फिर हो जाए ।।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति की राह गांवों से होकर ही गुजरती है। अपने गांव और देश की उन्नति के ख्वाब संजोए गांव कांसौटी खेड़ा की युवा शक्ति ने दीपोत्सव के अवसर पर अपनी मातृभूमि को सुंदर और स्वच्छ बनाने के लिए संगठित प्रयास किए। गाँव के युवाओं ने गाँव को अंधकार से मुक्त करने के लिए दीपावली पर रोशन गाँव अभियान की शुरूआत की; जिसके अंतर्गत गाँव में स्थित 80 विद्युत पोलों पर LED लगाई गईं। युवाओं के इस कदम से गाँव में रात्रि के समय गालियां और चौबारे जगमगा उठे हैं । जोश और जुनून से लबरेज युवाओं ने भारत सरकार के महत्वाकांक्षी अभियान 'स्वच्छता ही सेवा' को धरातल पर उतारते हुए गाँव में स्वच्छता अभियान चलाया और गाँव के सार्वजनिक स्थलों पर सफाई की । युवाओं के इस कदम का उद्देश्य गांव को स्वच्छ एवं रोशन मात्र करना नहीं है बल्कि गांव के प्रत्येक नागरिक के मन-मस्तिष्क में सकारात्मकता का दीप जलाकर गांव के विकास के साथ-साथ राष्ट्र के विकास के प्रति उन्मुख करना है।

7. गांव– रहटोंटी (जिला–धौलपुर)

सरमथुरा क्षेत्र के गांव रहटोटी के युवाओं ने टीम की विचारधारा से प्रभावित होकर गांव विकास समिति का गठन करके गांव को अतिक्रमण मुक्त बनाने, सुंदर और स्वच्छ बनाने का संकल्प लिया। छुट्टियों में दीपोत्सव मनाने आए गांव के कर्मचारियों ने युवाओं के साथ मिलकर स्वच्छता के साथ दीपावली का पर्व मनाने की ठानी। युवाओं ने गांव के लोगों को संकीर्ण सोच को त्यागकर सकारात्मकता के साथ संकीर्ण रास्तों को चौड़ा करने के लिए प्रेरित किया।

४. गांव–खुर्द, रैणी (जिला–अलवर)

वैचारिक जन–चेतना और जन–जागरूकता ही समाज के विकास का आधार है लेकिन अभी भी हमारे गाँवों में जागरूकता का अभाव, शिक्षा की दयनीय स्थिति ,रोजगार या व्यवसाय के साधनों का अभाव,आधारभूत सुविधाओं (जैसे रहने योग्य घर, पीने योग्य पानी, पक्की सड़कें, शौचालय) का अभाव, अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, पेयजल की कमी, सरकारी योजनाओं और विकास कार्यक्रमों के विषय में पर्याप्त जानकारी का अभाव और जरूरतमंद लाभार्थियों तक योजनाओं का लाभ न पहुँचना, लोगों का पर्यावरण के प्रति जागरूक ना होना आदि पिछड़ेपन के मुख्य कारण हैं। इन्हीं समस्याओं ने समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक लोकतंत्र और न्याय स्थापित कर एक समता मूलक समाज स्थापित करने में सबसे बड़ी बाधा उत्पन्न की है। इन सभी समस्याओं के समाधान और ग्रामीण भारत के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षित, जागरूक और संगठित युवा पीढ़ी ने नई सोच, नए उत्साह और उमंग के साथ ''सोच बदलो-गाँव बदलो'' अभियान की शुरुआत की। इसी अभियान के तहत गांव खुर्द जो कि अलवर जिले के रैणी क्षेत्र के अंतर्गत आता है,में गांव की युवा पीढ़ी ने दीपावली के अवसर पर ''ग्राम विकास समिति-खुर्द'' की स्थापना कर सोच बदलो-गांव बदलो विचारधारा के आधारभूत प्रकल्पों को धरातल पर उतारने का संकल्प लिया । विकास समिति में गांव के सभी सरकारी, गैर-सरकारी कर्मचारीगण तथा ग्रामीण शामिल हैं। इस अवसर पर गांव

विकास समिति की बैठक आयोजित की गई और समिति के उद्देश्य निर्धारित किए गए जो इस प्रकार हैं-

गांव में आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना, गाँवों में सकारात्मक सोच और रचनात्मक कार्यों द्वारा जन–जागरूकता पैदा करना, विकास के लिए जन–चेतना पैदा करना,गाँव की स्थानीय समस्याओं पर विचार करना और उनका स्थानीय स्तर पर समाधान खोजने का प्रयास करना, शिक्षा के क्षेत्र में ज़रूरतमंद बच्चों की आर्थिक सहायता करना, गाँव में पुस्तकालय खुलवाना एवं स्कूल में स्मार्ट रूम बनवाना और उनका नियमित संचालन करना, लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना इत्यादि।

''भागो नहीं दुनिया को बदलो''
ऐ मेरे गांव के युवाओं,जड़ता तोड़ो आगे आओ!
संगठित होकर कदम बढ़ाओ, फ़िर से मुक्ति मशाल जलाओ !!

जी हां ! जड़ता को त्यागकर, हाथों में मशाल लिए अपने गांव की दशा और दिशाबदलने के लिए युवा बाहुल्य गांव विकास समिति ने वैश्विक महामारी कोरोना के दौरान सामाजिक दूरी एवं पूरे एहतियात बरतते हुए १६ नवंबर २०२० को समिति के स्थापना दिवस के अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में गांव के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित किया और क्षेत्रीय समस्याओं के निराकरण का बीड़ा उठाया। इस अवसर पर क्षेत्रीय विधायक श्री जौहरी लाल मीणा, श्री रमेश जी रैणी, स्थानीय सरपंच, विकास समिति के सचिव सुखराम मीणा एवं आस-पास के गांवों के पंच-पटेल एवं ग्रामीण उपस्थित रहे। स्थापना दिवस समारोह के समापन के पश्चात् विकास समिति द्वारा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पहल करते हुए 1100 पौधों का रोपण कर पौधों की सिंचाई सुनिश्चित करने के लिए बोरिंग भी कराई गई। इसके अलावा गांव के सभी रास्तों और सार्वजनिक स्थानों पर हाईमास्ट लाइट लगाई गईं।

क्षेत्रीय विधायक एवं सरपंचों ने ग्राम विकास के कार्यों का अवलोकन कर विकास समिति के कार्यों की सराहना की; साथ ही भरोसा दिलाया कि सरकारी मशीनरी जिसमें सरपंच, प्रधान, एमएलए एवं एमपी सभी ऐसी ग्राम विकास समितियों का हमेशा साथ देंगे और कहा कि ऐसी समिति हर गांव में होनी चाहिए ताकि ग्राम विकास के कार्य अधिक से अधिक हो सकें और सरकारी तंत्र के लक्ष्यों को हासिल करने में जन-सहभागिता प्राप्त हो सके। इस अवसर पर गांव में पेयजल की समस्या को देखते हुए माननीय विधायक ने एक बोरिंग की घोषणा की। इस अवसर पर गांव के सभी बच्चे,जवान बुजुर्ग, माता-बहन सभी उपस्थित रहे।

गांव के सजग,संवेदनशील और प्रबुद्द युवा/ नागरिक अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते हुए अपने सकारात्मक व नवाचारी विचारों और सुझावों से गांव के संपूर्ण विकास के महत्वाकांक्षी सपनों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

ग्राम विकास समिति
खुर्द, रैणी (अलवर)

9. गांव- टोडूपुरा (जिला-करौली)

ग्राम विकास समिति एवं SBGBT टोडूपुरा (जिला करौली) के तत्वावधान में गाँव के सामुदायिक भवन पर ग्राम विकास समिति की मीटिंग का आयोजन किया गया; जिसमें ग्राम विकास समिति के अध्यक्ष, ग्राम पंचायत के सरपंच प्रतिनिधि, गाँव के विद्यालय के प्रिंसिपल तथा ग्राम विकास समिति के युवा कार्यकर्ताओं, कर्मचारियों एवं समस्त ग्रामीणों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। समिति की साधारण सभा में निम्न बिंदुओं पर विचार-विमर्श किया गया:-

(A) गांव के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में गणित एवं अंग्रेजी विषय के अध्यापकों के पद रिक्त होने के कारण विद्यालय में गणित एवं अंग्रेजी विषय के अध्यापकों को ग्राम विकास समिति के द्वारा वेतन भुगतान करके छात्र-छात्राओं के अध्ययन की सुचारू व्यवस्था की गई और इसको जारी रखने पर विस्तृत चर्चा की गई ।

(B) गांव के बीचों-बीच सार्वजनिक पुस्तकालय निर्माण के लिए गांव के स्वर्गीय नथुआ सेठ के पुत्र श्री महेश कुमार गुप्ता ने अपने निवास की पूरी भूमि पुस्तकालय निर्माण के लिए दान देने की घोषणा की; जो कि बहुत ही सराहनीय कदम और प्रयास है। उस भूमि में आधुनिक शिक्षा के भव्य एवं विशाल भवन (पुस्तकालय) के निर्माण के लिए जन-प्रतिनिधियों से मांग की जाएगीइस पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की संदर्भ पुस्तकों एवं कंपटीशन की छोटी से छोटी एवं बड़ी से बड़ी लाखों की संख्या में पुस्तकों का संग्रहण हो सकेगा और विभिन्न प्रकार के दैनिक समाचार-पत्र,रोजगार समाचार-पत्र एवं मासिक पत्रिकाओं को पढ़ने का अवसर गांव के सभी पढ़ने वाले और कंपटीशन की तैयारी करने वाले छात्र-छात्राओं को मिल सकेगा जिससे शैक्षिक सुधार एवं शैक्षिक उन्नयन देखने को मिलेगा।

© दीपावली के अवसर पर संपूर्ण गांव की सड़कों, चौराहों और गलियों की साफ-सफाई ग्राम विकास समिति के सदस्यों के द्वारा करवाई गयी।

(D) गांव के संपूर्ण रास्तों, गलियों और चौराहों पर ग्राम विकास समिति के सदस्यों के द्वारा स्ट्रीट लाइटों की व्यवस्था की गई जिसमें लगभग 50000 का खर्चा आया और उनको लगातार चालू रखने के लिए ग्राम विकास समिति के सदस्यों ने आपसी सहमति व्यक्त की।

(E) ग्राम विकास समिति का रजिस्ट्रेशन और खाता खुलवाने के बारे में सभी समिति सदस्यों ने कटिबद्धता दिखाई।

(F) गांव के विद्यालय में कंप्यूटर लैब के लिए आवश्यक फंड जुटाकर अतिशीघ्र व्यवस्था करने पर सहमति हुई।

(G) गांव के विद्यालय में पेयजल समस्या के समाधान के लिए विस्तार से चर्चा की गई जिसमें वर्तमान में वैकल्पिक व्यवस्था करने का आश्वासन ग्राम विकास समिति के युवा कार्यकर्ताओं ने दिया तथा भविष्य में विधायक कोटे से विद्यालय में सरकारी ट्यूबवेल लगवाने पर विचार-विमर्श हुआ।

(H) ग्राम विकास समिति एवं गांव के कर्मचारी बंधुओं से मासिक कंट्रीब्यूशन के बारे में निवेदन किया गया कि गाँव के समस्त कर्मचारी माह की 1 तारीख से 10 तारीख के मध्य स्वेच्छा से अपनी क्षमतानुसार आर्थिक सहयोग समिति के खाते में जमा कराएंगे जिससे ग्राम विकास के कार्यों को गति दी जा सकेगी।

(I) फुल आर स्टेडियम के बोर के बिजली कनेक्शन एवं सिंगल फेस मोटर के बारे में सरपंच से विस्तार से चर्चा आम सभा में की गई और इस समस्या के समाधान का आश्वासन सरपंच ने समिति के सभी युवा साथियों को दिया।

युवाओं एवं गाँव के कर्मचारी वर्ग को अपनी मातृभूमि के प्रति कर्तव्य बोध होना उस गाँव के उन्नत और समृद्धशाली भविष्य का द्योतक है ।

10. गांव– मीनादांत का पुरा (जिला–करौली)

सोच बदलो-गांव बदलो टीम, मीना दांत का पुरा पिछले 3 वर्षों से पर्यावरण सरंक्षण की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। अपने प्रयासों को गति देते हुए यहां के लोगों और टीम के कार्यकर्ताओं ने सोच बदलो-गांव बदलो अवधारणा के प्रेणता डॉ. सत्यपाल मीना जी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में दिनांक 20 जुलाई 2019 से 22 जुलाई 2019 तक पर्यावरण संरक्षण से संबद्ध विभिन्न गतिविधियां संचालित कर वन महोत्सव मनाया । जिसके अंतर्गत निम्नांकित गतिविधियां संचालित की गईं :-

1. 20 जुलाई 2019 को राजकीय शिक्षाकर्मी विद्यालय मीना दांत का पुरा एवं सीनियर सेकंडरी स्कूल कोटरी में पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण के लिए सार्थक प्रयास करते हुए विद्यार्थियों में पर्यावरणीय मूल्यों का विकास कर उन्हें पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराया।

2. टीम द्वारा ‘‘हर घर-हर साल -एक पेड़” नामक एक आंदोलन की शुरुआत करते हुए 21 जुलाई को ग्राम मीना दांत का पुरा में घर-घर में फलदार पौधे वितरित किए गए।

3. सोच बदलो गांव बदलो विचारधारा की मूल अवधारणा “आपसी सहयोग, सौहार्द और मानवता” को बढ़ावा देने के लिए 22 जुलाई 2019 को गांव के प्रसिद्ध महादेव बाबा मंदिर पर वृक्षारोपण किया गया जिसमें ग्राम मीना दांत के वासियों सहित ग्राम कोटरी, मोठ्यापुरा, गुर्जर दांत का पुरा एवं भंगो पोछड़ी आदि गांवों की महिला, पुरुष,बालक एवं बालिकाओं ने उत्साह के साथ भाग लिया।

इस वन महोत्सव की मुख्य बात ये रही कि इस बार महिलाओं ने बढ़-चढ़कर पर्यावरण सरंक्षण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं सभी ने पर्यावरण का परिरक्षण करने की शपथ ली एवं तय किया कि हर वर्ष सावन महीने के प्रथम सोमवार को इसी प्रकार 1100 पेड़ लगाएं जाएंगे।

सोच बदलो गांव-बदलो टीम
मीना दांत का पुरा

नोट- उपर्युक्त जानकारी कार्यकर्ताओं द्वारा सोशल मीडिया पर लिखी या साझा की गई हैं तथा उनका संकलन करके यहाँ लिखा गया है।

SBGBT परोपकार और संवेदनशीलता की जननी

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थ मिदं शरीरम्।।

परोपकार के लिए वृक्ष फल देते हैं, नदियां परोपकार के लिए ही बहती हैं और गाय परोपकार के लिए दूध देती हैं, (अर्थात) यह शरीर भी परोपकार के लिए ही है । इस पृथ्वी पर मानव देह का भी ये दायित्व बनता है कि वह दूसरों के काम आए प्सोच बदलो गांव बदलो टीम व्यक्ति का हृदय परिवर्तन करते हुए उसके अंदर परोपकार की भावना को जन्म देने,गरीब,असहाय और जरूरतमंदों के प्रति उसे संवेदनशील बनाने के साथ-साथ उसे समाज और राष्ट्र से जोड़ने का कार्य कर रही है। सामान्यतः भागदौड़ भरी जिंदगी में व्यक्ति अपने निजी एवं परिवारिक जीवन तक ही सीमित रहता है और आजीविका कमाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करते हुए भौतिक सुख-सुविधाओं पर केंद्रित रहता है। लेकिन जब वह सोच बदलो-गांव बदलो टीम के सन्निकट आता है तो उसके अंदर परमार्थ की भावना और मानवीय मूल्यों का स्वतः ही प्रस्फुटन होने लगता है। "पे बैक टू सोसायटी" की अवधारणा वाली यह विचारधारा व्यक्तियों और भामाशाहों को जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाने का माध्यम बन रही है तथा निर्बल, दीन-दुखियों एवं जरूरतमंदों के दुःख और उनकी जरूरतों को समझने के लिए उत्प्रेरक का कार्य कर रही है। सोच बदलो-गांव बदलो रूपी विचारधारा से प्रेरित होकर एक भामाशाह श्री विष्णु मीना, निवासी ग्राम काँकरेट ने जोरगढ़ी छात्रावास में पढ़ने वाली गरीब परिवारों की बच्चियों की कड़ाके की ठंड की ठिठुरन को महसूस किया और अपनी खून-पसीने की कमाई में से अभावों में ज्ञानार्जन कर रहीं इन बच्चियों की गर्म कपड़ों की आवश्यकता को पूरा करने का संकल्प लिया। इसी संकल्प को पूरा करते हुए भामाशाह ने सोच बदलो गांव बदलो टीम के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में अनुसूचित जनजाति छात्रावास, जोरगढ़ी पर स्वेटर वितरित किए। कड़ाके की सर्दी के बीच अच्छी गुणवत्ता वाले स्वेटर्स मिलने परअपरिमित खुशी से छात्रावास की इन छात्राओं के चेहरेखिल उठे।यही नहीं भामाशाह श्री विष्णु मीना विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में निरंतर अपनी सक्रिय भागीदारी निभाने के साथ-साथ जनहित एवं लोक कल्याणकारी कार्यों में सदैव आगे रहते हैं ५ ऐसे भामाशाहों और दानवीरों को सोच बदलो गांव बदलो टीम की ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं। सोच बदलो-गांव बदलो टीम आप पाठकों से अपील करती है कि अपने आस-पास, गांव, मौहल्ले इत्यादि के जरूरतमंद एवं असहाय लोगों के प्रति संवेदनशील बनें और यथा सामर्थ्य उन्हें संबल प्रदान करने के लिए आगे आएं।

धन रहै न जोबन रहै, रहै न गांव न ठांव।
कबीर जग में जस रहै, करिदे किसी का काम।

आभार
सोच बदलो-गांव बदलो टीम

अख़बारों की सुर्ख़ियों से....

सोच बदलो, गांव बदलो की मुहिम

धौलपुर पत्रिका
ग्राम पंचायत धनोरा बन रहा है ग्राम विकास का प्रशिक्षण केंद्र

को कोरोना जागरुक अभियान में सेनेटाइज, मास्क और साबुन वितरण के साथ जनसंदेश

सोच बदलो- गाँव बदलो टीम के रक्तदाता मनोज मीना ने अपना 14वां रक्तदान कर फिर बचाई मरीज की जान

सरोकार का कार्य करवा रही 'गांव बदलो-सोच बदलो' टीम

धौलपुर भास्कर
गूगल और फेसबुक से धनोरा की सुविधाओं के बारे में मिली थी जानकारी, हकीकत जानने आई जापान की टीम

ग्राम पंचायत धनोरा बन रहा है 'ग्राम विकास का प्रशिक्षण केंद्र'

धौलपुर सिटीजन
'सोच में बदलाव लाकर गांव को शहरों से बेहतर बनाया जा सकता है'

सरोकार का कार्य करवा रही 'गांव बदलो-सोच बदलो' टीम

धौलपुर पत्रिका
'सोच बदलो-गांव बदलो' टीम ने प्रशासन को दी 2 लाख की आर्थिक सहायता

डीन भास्कर
महादेवपुरा से दांतकापुरा स्कूल तक कीचड़, पंचायत ने नहीं सुनी, युवाओं ने कराई सफाई

धौलपुर भास्कर
गंदे पॉलिटिक्स गांव के रास्ते ठीक करने के लिए ग्रामीणों ने अपने मकान तक तोड़ डाले
गड़रपुरा की सड़कों पर भरता था पानी, ग्रामीणों ने डेढ़ लाख रुपए एकत्रित कर बनवाई सड़क और पक्का नाला, जमीन भी दान की

प्रशासन को 2 लाख आर्थिक सहायता

ग्राम धनेरा में सोच बदलो गांव बदलो टीम की प्रेरणा से ईमित्र का हुआ शुभारंभ

'सोच बदलो गांव बदलो टीम' ने वर्चुअल स्थापना दिवस मनाया

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

सामाजिक परिवर्तन की यात्रा के कुछ यादगार पलों की एक झलकियाँ

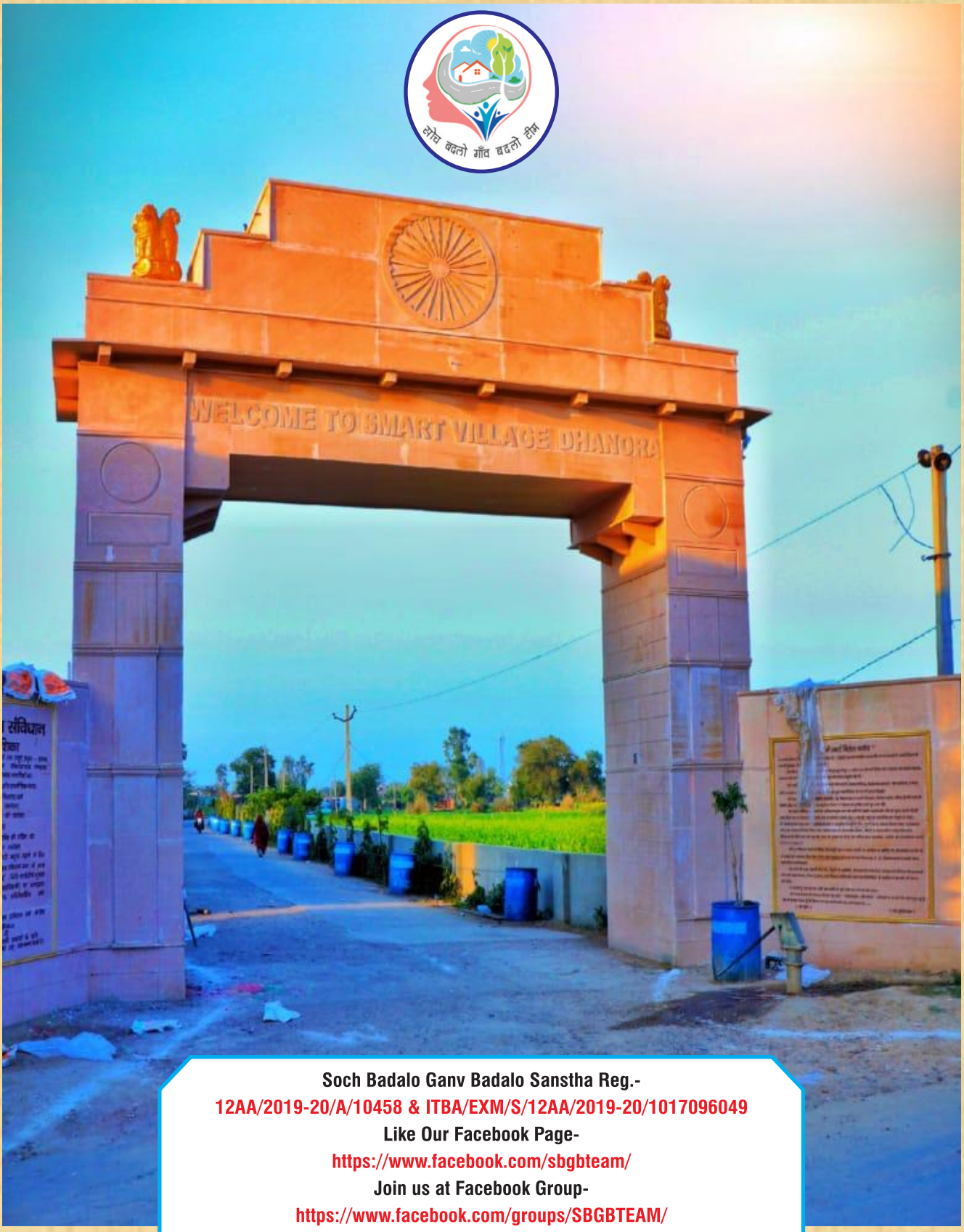

Soch Badalo Ganv Badalo Sanstha Reg.-
12AA/2019-20/A/10458 & ITBA/EXM/S/12AA/2019-20/1017096049
Like Our Facebook Page-
https://www.facebook.com/sbgbteam/
Join us at Facebook Group-
https://www.facebook.com/groups/SBGBTEAM/
Visit us At Webpage-
https://sbgbteam.com
Mail us-
sbgbteam@gmail.com